भारत उद्धार

सचित्र राष्ट्रीय ड्रामा।



लेखक—लाला किशन चन्द जेबा

सिर्फ़ टायटिल "ग्लिटो प्रिंटिंग वर्क्स," देहली में छपा

ओ३म्

सचित्र ड्रामा

भारत-उद्धार

अर्थात्

धर्म-विजय

जिस में सत्याग्रह की अलौकिक-शक्ति का चमत्कार
बड़ी सुन्दरता के साथ दिखाया गया है।

लेखक
जख्मी पञ्जाब, देश दीपक, कौमी तलवार, इत्यादि के
रचयिता
लाला किशन चन्द "जेबा"

प्रकाशक
ज्योतिःप्रसाद गुप्त
नेशनल बुकडिपो, नयी सड़क देहली

प्रथमबार २०००] [मूल्य ।।।)

मुद्रक—नारायण प्रसाद बेताब, बेताब प्रिंटिंग वर्क्स चाह रहट देहली

निवेदन



नाटक मंडलियों, थियेट्रिकल कम्पनियों और क्लबों की सेवा में निवेदन है कि इस नाटक को स्टेज करने के सर्वाधिकार रक्षित हैं। कोई महाशय इस ड्रामे को स्टेज पर खेलने का विचार न करें। कारण कि प्रथम तो यह इस मतलब के लिये लिखा ही नहीं गया, दूसरे बिना वृद्धि किये इस को स्टेज पर लाना मानो प्लाट और विषय के महत्व को कम करना है। जो महाशय हमारे इस निवेदन का उल्लङ्घन करेंगे वह आईन विरुद्ध कार्य करने के दोषी तो होंगे ही, इस के अतिरिक्त हमारी आत्माको जो क्लेश होगा उस हिंसा की ज़िम्मेदारी भी उन्हीं पर होगी।

"प्रकाशक"

प्लाट के विषय में।

—— ० ——

हम सब से पहिले पाठकों को यह बता देना आवश्यक समझते हैं कि जिस प्रकार नाटक के किसी पात्र को जोरदार बनाने के लिये प्राकृतिक भावों का फोटो खेंचना पडता है, उसी प्रकार प्लाट को मनोरंजक और रोचक बनाने के लिये ऐसे पात्रों की खोज करनी पडती है, जिनका कोई अस्तित्व इतिहास में नहीं होता और जो केवल कल्पित हुआ करते हैं। इग्लेण्ड के विख्यात नाटककार 'शेक्सपियर' ने भी अपने ड्रामों में ऐसे ही पात्र लिये हैं, जैसे कि भूतों का आना, परियों का दिखाव, मृत आत्माओं का दृश्य, इत्यादि, लेकिन यह लेखक की कल्पनामात्र और रंगीन ख्याली है। अंग्रेज जनता का बहुतसा भाग इन बातों को मानने वाला नहीं, परन्तु फिर भी 'शेक्सपियर' के नाटक सर्वमान्य हुये और इग्लैंड की स्टेजें इसी नाट्यकार के ड्रामों से सुशोभित हैं। भला ऐसा क्यों है? इसलिये कि नाट्यकार ने ऐसी कल्पित बातें किसी धार्मिकभाव से नहीं ली। हमारा अपना अनुभव है कि वर्तमान काल की जनता का मजाक यह देखने का अधिक इच्छुक है कि अमुक नाटक में अमुक सीन के अन्दर क्या कुछ चमत्कार दिखलाया गया है।

स्टेज पर नाटक दिखलाया जारहा है, एक अनाथ असहाय पर अत्याचार होता है, अत्याचार करने वाला अत्याचार में कमाल कर देता है, अनाथ को समुद्र में ढकेल देना चाहता है, अकस्मात पानी में से अग्नि प्रचण्ड होती है, परन्तु ऐसा दिख लाने से नाट्यकार का अभिप्राय कदाचित यह नहीं होता कि पानी में भी आग लग सकती है, वरन् उसका अर्थ यह होता है, कि असहाय की रक्षा के लिये प्रकृति अपनी जल स्वरूप शीलता को छोड कर अग्नि स्वरूप तेज का ग्रहण कर लेतीहै और अत्याचारी को अपने अत्याचार से हटने का संकेत करती है। यह एक विस्तृत विषय है और इसपर विवाद करना अभिप्राय नहीं, किन्तु यह जता देना प्रयोजन है कि हमने भी इस नाटक में जो कल्पित पात्र लिये हैं, वह किसी धर्म विशेष अथवा मजहबी ख्याल से नहीं लिये और न हो वर्तमान अवस्था हमें आज्ञा देती है कि हम किसी खास मत अथवा पंथ को लेकर अपने विषय का दायरा सीमाबद्ध करदें। अतएव जहा कहीं कोई कल्पित पात्र है अथवा कल्पित दृश्य दिखलाया गया है, वहा पाठकों को चाहिये कि वह भी मजहबी तंग दिली को त्याग कर यह भाव निकालने का यत्न करें कि इन्द्र कोई ऐश पसंद, अभिमानी, ईर्ष्यालू देवराज है जो आकाश के ऊपर इन्द्र लोक में राज करता है, अथवा इन्द्र ईश्वर की उस शक्ति का नाम है जिस का काम वर्षा करना है अथवा इन्द्र से मुराद बादल है इत्यादि।

"ज़ेबा"

कुछ विचार

प्रिय पाठक गण ! भारत का वर्तमान काल सत्याग्रह का काल है। भारत के आधुनिक इतिहास में कोई पृष्ठ उन्नति के इस सर्वोत्तम सुनहरी मार्ग के शुभ संवाद से खाली नहीं। आज से दो वर्ष पहिले अमन का देवता संसार को सत्याग्रह का सत् सन्देश दे चुका है और भारत संसार बड़ी तेजीके साथ इस सीधे और साफ मार्ग को ग्रहण कर रहा है। भारत के एक स्वर्गगामी महा पुरुष ने कहा था कि —

" मैं स्वतंत्रता के लिये सच्चाई को भी बलिदान कर सकता हूँ" परन्तु भारत के इस जेल निवासी देवता का कथन है कि —

" मैं सच्चाई के लिये स्वतंत्रता और सब कुछ बलिदान कर सकता हूँ" क्या इस से बढ कर भी कोई त्याग हो सकता है ? क्या शांति का प्रचार करने वाला कोई देवता इस से अधिक उदार तथा सत्यवादी होसकता है ? क्या इस से अधिक सफाई के साथ कोई सत्याग्रही मन, वचन अथवा कर्म से अपनी सच्चाई प्रकट कर सकता है ? नहीं, इस कलियुग में नहीं, बल्कि सत-युग हमारे सामने ऐसे उदाहरण उपस्थित कर सकता है।

वह महात्मा (कलियुग का सत्याग्रही) हमारे पास से उठा कर एकांत वास में तपस्या करनेके लिये भेज दिया गया है, किन्तु उसका दोहराया हुआ यह सुनहरी सिद्धांत भारत को अपनी प्राचीन भाषा, प्राचीन सभ्यता, प्राचीन वैभव प्राप्त करने के लिये उत्साहित कर रहा है। हमारा इतिहास सत्याग्रह के इस अवतारसे पहिले कई एक ऐसे सत्याग्रही महापुरुषों के शिक्षा-प्रद जीवन का पता देता है, जिन के बनाये हुये मार्ग पर यह कलियुगी महात्मा स्वयम् चलते हुये दूसरों को चलने का

करता है। प्राचीन काल के इन महापुरुषों में से बाल भक्त प्रह लाद् का जीवन सत्याग्रह का अलौकिक चित्र उपस्थित करने के लिये एक उच्च और अछूनी तमसील है, जो भारत के प्राचीन सत्याग्रहियों की नामावली में पहिले नम्बर पर लिखी हुई दिखाई देती है।

जो लोग सत्याग्रह को केवल साधु स्वभाव और 'पैसा दे खुदा के नाम पर' का मशगला समझते हैं, हम उन की सेवा में बाल भक्त प्रहलाद् का जीवन पढने की प्रार्थना करेंगे, जिस से वह इस के अध्ययन की सहायता से अपने निर्बल विचार को बदल सके। प्रहलाद कोई महाबली योद्धा नहीं, कोई शस्त्रधारी और गदाधारी बलवान, शारीरिक शक्तियों का स्वामी, किसी मायावी शासन का अधिकारी नहीं, कोई ऋषीश्वर वरदानधारी नहीं, वस्तुत नि शस्त्र अल्पवय लडका और शारीरिक तौर पर एक बलहीन व्यक्ति है, सत्य की तपस्या करने वाला, पक्के विचार का बालभक्त है, परन्तु प्राचीन काल के एक प्रसिद्ध धार्मिक सग्राम मे एक पक्ष है।

दूसरे पक्ष में उसका नास्तिक पिता हिरण्यकश्यप है, जो एक चक्रवर्ती राजा है, जो देवताओं के वर्दान से सब प्रकार रक्षित है, जिसे सासारिक शक्ति पर अधिकार प्राप्त है, जो बाहुबल में अपना उदाहरण आप है, परन्तु इन समस्त शक्तियों ने उसको अपने सृजनहार (परमात्मा) का कृतज्ञ बनाने की जगह उसे अत्याचारी, क्रूर और नास्तिक बना दिया है। वह इन शक्तियों के मद मे अन्धा होकर प्रजा को उन की इच्छा के विरुद्ध सत्य धर्म से पतित कर रहा है, स्वतन्त्रता से वंचित कर रहा है और नास्तिकपन की बीमारी फैलाकर ससार को रोगी और नारकी बना रहा है।

दोनों विपक्षी दलोंमें युद्ध जारी होचुका है। हिरण्यकश्यप (झूठकी शारीरिक शक्ति) प्रहलाद (सत्यकी आत्मिक शक्ति) को सत्याग्रह से हटाने का यत्न करता है। वह अपने अत्याचार और अन्याय के समस्त हथियारों का प्रयोग करता है, परन्तु प्रहलाद स्वयम् सत्य पर दृढ रहते हुए उसे और उस की मार्ग विचलित प्रजा को सत्य मार्ग पर चलाना चाहता है। इस सत्या ग्रह के अवतार को सत्य के प्रचार और सत्य की दृढता से पतित होने के लिये जोचित अग्नि में जलाया जाता है, परन्तु उस के सत्यबल से वह आग पानी स अधिक ठंडी और शीतल वनजाती है। विष से प्राण हरण करने के लिये सापों को उस पर छोडा जाता है, परन्तु साप उस विष्णु पर शेष वन कर साया कर देते हैं। उस को क्रूरता से मारने के लिये पहाड की चोटी पर से गिराया जाता है, लेकिन नीचे की धरती पुष्प शय्या बन कर अपने सत्याग्रही बच्चे को अपनी गोद में ले लेती है और आच नहीं आने देती।

इस निर्दोष और वेवस वालक पर ऐसे २ अत्याचार देख कर जनता में उस के लिये सहानुभूति का भाव उत्पन्न होजाता है। लोग प्रहलाद के निमित्त वल का वल मे उत्तर देने पर उतारू होते हैं, किन्तु प्रहलाद को सत्य की आत्मिक शक्ति पर पूरा विश्वास है, वह उन को वडी नम्रता से

"अहिंसा परमो धर्म."

का उपदेश करता है। फल यह होता है कि सब लोग सत्याग्रही वन कर उस दिन की प्रतीक्षा करते हैं जब धर्म की जय और अधर्म का नाश हो। इस वाल भक्त सत्याग्रह के अवतार की हत्या के लिये जालिम का अन्तिम उपाय लोहे का गर्म और दह कता हुआ स्तम्भ है। उस को विश्वास है कि इस स्तम्भ से वाधे

जाकर इस का जीवित रहना असम्भव है। यह मरा और फिर मैं ईश्वर—संसार जान जायेगा कि सत्य धर्म ढकोसला है, जिस की लाठी उस की भैंस ही परम धर्म है, ईश्वर एक मन घढ़न्त चीज है।

परन्तु उस सर्व शक्तिमान परमात्मा का शासन चक्र बड़ी सफाई के साथ चल रहा है, वह अपने भक्तों से गाफिल नहीं, उसने अब तक देखा और संसार को दिखलाया कि

पाप फूलता है लेकिन फलता नही.

पाप का परिणाम नैराश्य और सत्यानाश है। लोहे के गर्म दहकते हुए स्तम्भ से भेंट करने के लिये प्रहलाद को हुक्म दिया जाता है, सत्याग्रह प्रहलाद को इस अत्याचार पूर्ण आज्ञा के पालन करने की अनुमति देता है, परन्तु वह सत्य मार्ग में एक ही कदम उठाता है कि स्तम्भ फट जाता है, और परमात्मा नृसिंह रूप से हिरण्यकश्यप के अस्तित्व का अन्त करते हैं, पाप का नाश और धर्म की जय होती है।

यह इतिहास प्रमाणिक है और युगो से जनता के कर्ण-गोचर होरहा है। कई एक रूप में लेखकों ने इसे लिखा, नाटक-कारों ने दर्शाया, परन्तु इसके मूल तत्व (सत्याग्रह) को असली रंग में दिखलाने का ख्याल किसी को नहीं आया। हमने इस उच्च जीवन को अपने असली रूपमें नाटकद्वारा दर्शा कर साहित्य की एक विशेष कमी को पूरा करने का यत्न किया है। जो हो, स्वाद चाखने से ही मालूम होसकता है, अध्ययन की कसौटी असलियत को परख देगी।

"ज़ेबा"

भारत उद्धार
अर्थात्
धर्म विजय



मंगलाचरण

(सूत्रधार और नटी का परमात्मा की स्तुति करते दिखाई देना)

गाना

बार,बार नमस्कार हो,
सृष्टि के तुम आधार हो,
जगत प्रतिपाल, कंस के काल, दीन दयाल, जय गोपाल,
संकट निवारण हार हो। बार बार
धर्म बल दान करो, दया श्रीभगवान करो, मातृभू कल्याणकरो,
पिता परम उदार हो। बार बार

नटी—प्राणनाथ ! आज भारत भूमि की सुन्दर सृष्टि पर ऋतुराज बड़ी उदारता दिखला रहे हैं, सृष्टि के मनोहर दृश्य अपनी अनूठी छटा से आँखों को लुभा रहे हैं —

ऋतु ने डालियों पर ओस के मोती पिरोये हैं,
गुलों के साफ मुखड़े देखलो शबनम से धोये हैं।
फलों से डालियों के, फूलों के दामन भरे जर से,
न क्यों ऐसी छटा को देखकर वैकुण्ठ भी तरसे।

सूत्रधार—तो प्राणप्यारी, तुम क्या भारत भूमिकी बाकीछटाओं को वैकुण्ठ की खूब सूरतियों से कम समझती हो ?—

जिस तरह वृक्षों में चन्दन को बडा अधिकार है,
तीर्थों में जिस तरह सब से बडा हरिद्वार है।
नभचरों में जिस तरह सब का गरुड सरदार है,
पर्वतों में हिमगिरी, नदियो में गंगाधार है।
है कमल फूलों मे और नागो में जैसे शेष है,
सब से उत्तम इस तरह देशों में भारत देश है।

नटी—हा प्रभो ! भारत भूमि की महिमा वर्णन करने को तो स्वयम् सरस्वती भी असमर्थ है।

सूत्रधार—क्यों नही, इस अति उत्तम और पवित्रभूमि की महिमा शब्दों और श्लोको के बन्धन मे नहीं आ सकती, सृष्टि की सगीत शक्ति इस के गुणों का नही गा सकती —

सारी दुनिया को खिलाती है यह अपने अन्न से,
रक्षा करती है यही सृष्टि की अपने धन से।
पहिनने खाने को देती है यही संसार को,
योग्य है करना नमन् ऐसो महा दातार को।

नटी—तो फिर भगवन् ! जिस पवित्र भूमि का देवताओं ने पूजन किया है, विष्णु भगवानने कई बार अवतार लेकर जिस पूजनीय भूमि के भार को निवारण किया है —

वहां क्यों कष्ट आते हैं वहा क्यों फाका मस्ती है,
जो सब को दे रही है क्यो उसे खुद तग दस्ती है ?
जो अपनी पैदावारों से जगत का पेट भरती है,
उसी की किस लिये सन्तान फिर फाकोंसे मरतीहै?

सूत्रधार—कारण कि देव योग से पराधीन होने के कारण आज उसे अपने हो माल पर अधिकार नहीं, अपने ही गर्भ से उपजाये हुये पदार्थों पर उसे कोई अखत्यार नही—

यह खुद गर्जो के पैरो में पड़ी पामाल होती है,
इसी से आये दिन इस की दशा कंगाल होती है।
विदेशों में कमाई इस की सब इरसाल होती है,
मुसीबत कहत की इस वास्ते हर साल होती है।

नटी—तो क्या अब इस गई गुजरी जाति का कोई इलाज नहीं हो सकता, जो आज से दो शताब्दी पहिले था, वह आज नही हो सकता? —

यह खुद रक्षा करे बच्चो की और उसके घरानोंकी,
इसी के हाथ मे चाबी रहे इस के खज़ानों की।
यह मजबूरन लुटा कर खुद न तरसे दाने दाने को,
अगर हो फालतू गल्ला, तो दे औरों के खाने को।

सूत्रधार—इसी प्रबंध के लिये, इसी जन्म अधिकार के लिये, इसी स्वाधीनता और अखत्यार के लिये आज हिमालय से राजकुमारी तक सारी जनता बेदार हो रही है सत्याग्रह का शस्त्र धारण किये वर्तमान शासन से बरसरे पैकार हो रही है —

बच्चा हर एक हिन्द का बेदार होगया,
इस धर्म युद्ध के लिये तैयार होगया।
नङ्गों की है पुकार लंगोटी के वास्ते,
भूखो का शोर सुनते हैं रोटी के वास्ते।

नटी—तो क्या काठ की तलवार से भी मैदान जीता जा सकता है, खौफनाक शारीरिक बल के मुकाबले में सत्याग्रह का आत्मिक बल भी सफलता पा सकता है? —

कभी मोमी हथोड़े से सलाख आहन की झुकती है?
कहीं धागू के झटके से हवा की चाल रुकती है?
कोई मुट्ठी में भी सूरज की किरणें बाँध सकता है?
कभी आहों की गरमी से भी कच्चा भात पकता है?

सूत्रधार—तो प्रिय! तुम्हें सत्याग्रह के आत्मिक बल की शक्ति मालूम नहीं, यह एक अपार शक्ति है, कोई हँसिये मोहूम नहीं। इस बल से तो भक्त भगवान को भी वश में कर सकता है, इस बल रूपी नाव का सहारा लेकर तो मनुष्य भव के अथाह सागर को भी तर सकता है—

जो जोर आहों में होता है नहीं वह जोर तीरों में,
अगर यह देखना हो जोर देखो तुम फकीरों में।
कि जिनके चरण पर राजे महाराजे भी झुकते हैं,
कि जिन के लब हिलाने से महा तूफान रुकते हैं।

नटी—क्या आप शास्त्र के ज्ञान से कहते हैं?

सूत्रधार—नहीं, हम ऐतिहासिक प्रमाण से कहते हैं। प्रहलाद भक्त का जीवन चरित्र देखिये, आप को मालूम होजायगा कि एक बे बस पराधीन बालक ने किस तरह सत्याग्रह की शक्ति से शारीरिक बल की तल्वार का मुह मोड़ा, किस तरह नम्रता के हथियारसे पापी और अन्यायी पिता हिरण्यकश्यप के नास्तिकपन और अभिमान को तोड़ा —

सत्य को बाँध रखा और कर्म छोड़ दिया,
सह गया जो भी सितमगर ने सितम तोड़ दिया।
लाख तदबीर से मारा था सितम गारों ने,
मर सका पर न धर्मवीर यह हथियारों से।

नटी—तो प्रभो! कृपा करके आज इसी इतिहास को नाटक रूप में दर्शाइये, लोक कल्याण का भी यश लीजिये और मेरी

शंका भी मिटाइये। मैं भी देखूं कि —

किस तरह आत्मा इस बल से अभय होती है,
पाप पर धर्म की किस तरह से जय होती है।

सूत्रधार—तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो। आज हम प्रहलाद रूपी सच और हिरण्यकश्यप रूपी झूठ के घोर संग्राम का नाटक दिखलायेंगे। सत्य और असत्य, हिन्सा और अहिन्सा, पाप और धर्म, नास्तिक और आस्तिक के परस्पर युद्ध के शिक्षाप्रद दृश्य दरशायेंगे —

हो चुकी धूम बहुत इश्क के अब मेलों की,
आज भारत को जरूरत है इन्हीं खेलों का।
इस कसौटी से ही सोने की जिला उठती है,
अपने इतिहास से ही कौम सदा उठती है।

नटी— उपकार, प्रभो उपकार, ऐसे ही सत्य धर्म की महिमा दिखलाइये, प्रेमी सज्जनों की आत्मिक प्यास बुझाइये।

बालायें—(आकर) सत्य धर्म की जय !

गाना

धर्म हमेशा धार धर्म ही तारे,
हैं सदा जगत में अमर धर्म के प्यारे,
हैं मनुष्य धर्म से हीन कर्म के मारे। धर्म हमेशा
जो टेक धर्म की धार कर्म है कर्ता
वह जीवन मुक्त मनुष्य कभी नहीं मरता,
वह बिना परिश्रम किये वैतरणी तरता। धर्म०
है धर्म उसीका धन धर्म जो जाने,
यह धर्म उसी के माने धर्म जो माने,
है धर्मवीर जो धर्म कर्म की ठाने। धर्म हमेशा

प्रथम अंक   प्रथम दृश्य

दरबार

(राजा हिरण्यकश्यप और समस्त दरबारियों का समागम)
कंचनियों का

गाना

राज बढ़े, ताज बढ़े, आन बढ़े, शान बढ़े,
जग पर हो अधिकार, विश्व के हो पालनहार,
ध्वजा का निशान बढ़े, राज
प्राणियों के प्राण हो, जगत में कल्याण हो,
शाही दीवान बढ़े, राज
देव दैत्य दास हों, चरणों के पास हों,
धन और सन्तान बढ़ें, राज

हिरण्यकश्यप—मेरी प्रजा के ताज में चुने हुये अन्मोल रत्नो! अब इस अपार ब्रह्माड में मेरा कोई भी सानी नही, मेरे असीम राज्य के रोब और दबदबे की किसी तरह भी हानि नहीं। तूफानी समुद्र मेरे लब की जुंबिशसे थरथराता है, अग्नि मेरे क्रोध के प्रचड वेग से सर्द हो जाता है। पवन मेरीइजाजत से ही हरकत करतीहै, सारी प्रकृति मेरे भुजा बल्के भय से लरजती है। मैं ने घोर तपस्चर्या से देवताओं के निवास स्थान को भी कंपाया है, और ब्रह्मा से अमर होने का वरदान पाया है —

मरूंगा अब न मैं दुनिया में इन्सानी उपायों से,
दरिन्दों से मरूंगा और न दैत्यों देवताओं से।
न दिन में, रात में, दोपहर में मेरा मरन होगा,
न अग्नि, जल, पवन से प्राण यह मेरा हरण होगा।

अब मैं अपने भाई हिरणाक्ष को मारनेवाले अपने खानदानी दुश्मन विष्णु भगवान का शिर उतारूंगा, और बैकुंड पर अपना अधिकार जमा कर देवताओंके साम्राज्य का शाही छत्र अपने शीश पर धारूंगा —

मिटा कर राम की हस्ती मैं अपना रंग जमाऊंगा,
मैं सिक्का नाम का लोकों अलोकों में चलाऊंगा।
हर एक मन्दिरमें बुत बनकर मैं सबके शिर झुकाऊंगा,
मैं देवों और ऋषी मुनियोंसे नाम अपना जपाऊंगा।
मेरी पूजा श्रद्धा के फूल मुझ पर वारती होगी,
हर एक मन्दिर धर्मशाला में मेरी आरती होगी।

सब दरबारी— बोलो भूपति महाराज हिरण्यकश्यप की जय!
हिरण्यकश्यप—बोलो और बताओ सृष्टि का कर्ता धर्ता कौन?
सब—महाराज हिरण्यकश्यप आप।
हिरण्यकश्यप—सम्पति, भक्ति और मुक्ति का दाता कौन?
सब—महाराज हिरण्यकश्यप आप।
हिरण्यकश्यप—अग्नि, जल, पवन, आकाश का स्वामी कौन?
सब—महाराज हिरण्य कश्यप आप।
हिरण्य०—तीनों लोकों का आधार कौन?
सब—महाराज हिरण्यकश्यप आप।
हिरण्य०—शिव, विष्णु, ब्रह्मा का पालन हार कौन?
सब—महाराज हिरण्यकश्यप आप।
हिरण्य०—पवित्र आत्मा, परम आत्मा कौन?

सब—महाराज हिरण्यकश्यप आप।

हिरण्य०—दुष्ट आत्मा, पाप आत्मा कौन ?

प्रह्लाद—(आकर) महाराज हिरण्यकश्यप आप। बस करो पिता, बस करो। चादर को फाड़ कर पैरों को इतना न फैलाओ, चन्द्रपर थूककर अपने शरीरको भ्रष्ट न बनाओ। अहंकार की गिलाजत को फेंकने वाली इस चमड़े की जिव्हा को मनुष्यत्व और सत्यता का ताला लगाओ। जिस ने पैदा किया, खिलाया, पिलाया, शाही तख्त पर बिठाया, उस से बगावत करते हो ? अन्त काल में काम आने वाले उस सच्चे मित्र से अदावत करते हो ? तुम परमात्मा से वैर नहीं कमाते हो, वरन् कैलास पर्वत से टकराते हो, समुद्र में रह कर मगर से शत्रुता करते हो —

पाके पदवी ऐ पिता इतना न तू अभिमान कर,
वह कहाँ और तू कहा इस फर्क की पहिचान कर।
तू है फानी कुछ नहीं है रेत की दीवार है,
वह है रक्षक, सब का दाता, सबका पालनहार है।

हिरण्य०—हैं, मैं क्या सुनता हूं, मेरा पुत्र और मेरे शत्रु राम का मित्र ?

प्रह्लाद—पिता तुम भूलते हो, अभिमान वश ज्ञान से हीन होकर राम को अपना शत्रु समझते हो, माता की भांति कदम २ पर सम्भाल करनेवाले पिताको अपना उदू समझतेहो

आमये इन्साँ दिया क्या शत्रुताई तुम से की,
आज तक अहसा किया क्या शत्रुताई तुम से की ?
गालियां देते हो तुम वह अब तलक खामोश है,
वह नहीं दुश्मन, वह दुश्मन का भी परदा पोश है।

हिरण्य०—मेरे कुल को कलङ्क लगाने वाले ! तू नहीं जानता कि

जिस तरह मैं तुझे इस अपने रचाये हुये सुन्दर संसार में जन्म देने को समर्थ हूं, उसी तरह तुझे मिटा कर नष्ट भ्रष्ट करने में भी समर्थ हूं, जब यह सच है तो क्या जन्म देने वाला और प्राण लेने वाला परमात्मा नहीं हो सकता, जिस को सारी प्रजा प्रजापति की पदवी देरही है, वह महान शक्तिमान परमात्मा नहीं हो सकता ?

प्रहलाद—नहीं, कभी नहीं हो सकता। मिट्टी का परिमाणु सूर्य के स्वच्छ प्रकाश में चमकने से मोती कदापि नहीं हो सकता, स्वर्ण की खान में रहने वाला पत्थर स्वर्ण कभी नहीं होसकता —

एक है वह उस का कोई दूसरा सानी नही,
सबके सब तुम और हम फानी हैं, वह फानी नहीं।
है फर्क जितना बडा दीपक मे और इक भान मे,
है फर्क उतना बडा इन्सान और भगवान में।

हिरण्य०—ओ मूढ बालक! वह कौनसा काम है जो तेरा भगवान कर सकता है और वह मेरी शक्ति से बाहर है? मारना मिटाना सब मेरे हाथ है, प्रकृति की हर एक शक्ति मेरे साथ है —

अभी चाहू तो भोजन जान कर ब्रह्माड को खालू,
अभी चाहू तो सारे विश्व को मैं नष्ट कर डालू।

प्रहलाद—किन्तु पिता! एक कुपुत्र घुनकी तरह तुम परमात्मा की बहुत सारी सुन्दर सृष्टि के भूभाग को नष्ट कर सकते हो, परंतु उस परम पिता परमात्मा की भाति साधारण पक्षी का एक पर, वनस्पती का एक पत्ता बना नहीं सकते, तुम मार सकते हो, किंतु किसी को जिला नहीं सकते —

तुमको केवल मारने का ही पिता अभिमान है,

यह जिलाने मारने दोनोंमें शक्तीमान है।
तुम जबर्दस्ती से रटवाते हो अपने नामको,
भक्त लेकिन शौक से रटते हैं मेरे राम को॥

हिरण्य०—यदि तुम्हारा राम सब भांति शक्तिमान है, तो मैं जो उसके अस्तित्व से इन्कार कर रहा हू, मुझे क्यों सजा नहीं देता, में जो उसके नाम को मिटा रहा हू मुझे क्यों मिटा नहीं देता ?

प्रह्लाद—तो पुत्र ही कुपुत्र हुआ करता है, माता कुमाता और पिता कुपिता नहीं होता। बादल अच्छी और बुरी धरती देखकर नहीं बरसते, वरन् सबको एक समान सैराब करदेते हैं। वेद बुरों के लिये अपना ज्ञान नहीं छुपालेते, वरन् नीच और ऊच सब के अभ्यास का दामन ज्ञान उप देश के मोतियों से भरदेते हैं —

न मैली होगई गंगा कभी धरती पे बहने से,
न सूरज होगया काला कभी अंधे के कहने से।

हिरण्य०—तो क्या मुझे परमात्मा मानने वाले सब लोग अंधे हैं ?

प्रह्लाद—हां, अपने जन्मदाता से विमुख होनेवाले सब दुष्ट और गन्दे हैं। तुम्हारे अभिमान की अंधेर गर्दीने इन्हें गुमराह कर दिया है, नास्तिक बनाकर इनके ईश्वरीय ज्ञान को तबाह कर दिया है —

है गरदावे फना जिसके यह सब घेरेमें फिरते हैं,
छिपा है ज्ञान का प्रकाश, अंधेरेमें फिरते हैं।
पड़ा अज्ञान का परदा जो उसको भूल बैठे हैं,
यह थोड़े दिनके जीवन पर वृथाही फूल बैठे हैं।

हिरण्य०—तो क्या तू मुझे परमात्मा नहीं मानेगा, मेरी पूजा नहीं करेगा, मेरी आरती नहीं उतारेगा ?

प्रहलाद्—नहीं, कभी नहीं पिता मैं पत्थरको पारस क्योंकर कह दूं, विषको अमृत के नाम से क्योंकर पुकारूं ?

न मुझसे तुम कहो उस सर्व सुख भगवानको छोड़ो
पिता! मेरे कहे से बल्कि तुम अभिमानको छोडो।
जो तुम छूटोगे मुझसे तो सिर्फ आराम बिगडेगा,
मगर परमात्मा छूटा तो सारा काम बिगडेगा।

हिरण्य०—क्या पुत्र पर पिताका कुछ ऋण नहीं ? पिताके कहने पर तो संसारका सुख छोड़ना भी धर्म है।

प्रह्लाद—किंतु परमात्माके छोडनेवाला पिता बड़ाही बेशर्म है। मैं मुट्ठी में पकड़ी हुई वस्तु को छोड़ सकता हूं, परंतु मेरी अन्तर आत्माने जिस वस्तुको पकड़ लिया है वह कैसे छूट सकती है—

इशारा हो तुम्हारा तो मैं अपने प्राणको छोड़ूं,
मगर है सख्त मुश्किल किस तरह भगवानको छोड़ूं !

हिरण्य० -(मन्त्रीसे) शम्भुदानजी! जाओ, और फौरन इसबात का पता लगाओ कि मेरे इस बालक को किसने बहकाया है? मेरी प्रजामें मेरा वह कौनसा शत्रु है, जिसने इस बच्चे को रामका नाम सिखाया है—

मेरे शत्रु हैं जितने ढूंढकर सारे निकालो तुम,
उपासक रामके जितने हैं उन को मार डालो तुम।
हो जिस मन्दिरमें पूजा राम की मन्दिर गिराडालो,
ध्वनी जिस घरसे गूंजे रामकी वहघर खुदाडालो॥

शम्भुदान—श्रीमान! शाही आज्ञा का पालनतुरन्त किया जायगा।

गुरु—महाराज! राजकुमार प्रहलाद को राम का नाम सिखाने वाला आप की प्रजा में से नहीं।

हिरण्य०—तो फिर यह नाम किसने इसको सिखलाया ?

गुरु—माताके गर्भमें ही यह ओ३म् का मन्त्र इसके कानोंमें आया।

हिरण्य०—वह कैसे ?

गुरु—श्रीमान् को याद होगा कि जब दैत्यो और देवताओं का संग्राम हुआ तो इन्द्र, दैत्य-राजाओं की रानियों के साथ आप की गर्भवती महारानी को भी भगा कर ले गया। मार्ग में नारद मुनि ने इन्द्र को बतलाया कि महारानी के गर्भमें विष्णु का भक्त है, जिस पर इन्द्रने आपकी महारानी का निर्जन वन में छोड़ दिया। महारानी विवश हो कर रुदन करती, नारद मुनि हरि कीर्तन सुना कर उनका मनोरञ्जन करते। सो नारद मुनिके मुखारविन्दसे उच्चारण किया हुआ हरि नाम प्रहलाद ने माता के गर्भ में धारण किया —

> है प्रेमकी यह चाशनी, भक्ति की तरङ्ग है,
> चित्त पे चढ़ गया है, सो गूढा यह रङ्ग है।

हिरण्य०—तो भी इस रङ्ग को दूर किया जायेगा।

हनुमान—तो इस को पाठशाला में नास्तिक बालकों के साथ शिक्षा दिलाई जाये, और किसी योग्य गुरू द्वारा इस की शंका मिटाई जाये।

हिरण्य०—क्यों प्रहलाद स्वीकार है ?

प्रहलाद—जो मेरे राम को स्वीकार है। यदि तुम सत्य हो तो मैं तुम्हारा पुजारी बन जाऊँगा, यदि मेरा राम सत्य है तो मैं गुरु जी को भी आस्तिक बनाऊँगा।

—— ❀ ——

प्रथम अंक द्वितीय दृश्य

मार्ग

(पुरवासियों का प्रवेश)

पहिला व्यक्ति—मित्रो ! तुम कुमार्ग में पडे हो, भूले हो, गुमराह हो। क्या हमारा धन नहीं लुटा, हमारा मान नहीं लुटा? राजा हिरण्य कश्यप ने परिश्रम से फिर प्राप्त हो जाने वाले धन धामके अतिरिक्त हमारे धर्म पर भी आक्रमण किया। हमारे मन्दिरों और धर्म स्थानों को खाकमें मिला दिया। जैसा कि प्रत्येक राजा का धर्म है, उसके विरुद्ध प्रजासे अपनी२ रीति अनुसार देवोपासना का स्वतंत्र अधिकार भी छीन लिया—

कौन अपने हाथ इस अफसोस से मलता नहीं,
डरके मारे कोई सीधी राहपर चलता नहीं।
सच न कहने के लिये हरएक जबां मजबूर है,
प्यारे भारत वर्ष का दिल शोक से भरपूर है॥

दूसरा—हां, हम अज्ञान की अंधेरे गारमें इसकदर गहराई के अंदर पहुंच गये हैं, जहां से ईश्वर मय प्रकाश की टिमटिमाती हुई किरण भी दृष्टि में नहीं आती है, ब्रह्म विद्या की झलक राजसी नियमों की दीवारसे टकराती हुई दलन नीति की अंधकारमय कोठड़ी के अन्दर लय होजाती है, कोई सचाई भी अपने असली रूपमें हमारी आंख या कान तक नहीं पहुंचने पाती है—

कहीं पर सिद्ध जनों के आश्रम अग्निमें जलते हैं,
कहीं पर खून ऋषियोंके कड़ाहोंमें उचलते हैं।
कहीं ईश्वरके भक्तों पर सितमके शस्त्र चलते हैं,

कहीं सर सत्य पुरुषों के गर्म पानी में तलते हैं।
जहा विष्णु की प्रतिमा थी वहा राक्षस की मूरत है,
जिधर देखो उधर ही एक बरबादी की सूरत है ॥

तीसरा—भाई सत्य है, हिरण्य कश्यप का राज प्रजाके लिये अति दुखदाई है, ऐसे विकट कालमे दुष्ट हिरणाक्ष को मारने वाले भगवानके बगैर हमारा कौन सहाई है?

दूसरा—अफसोस! भारत वर्षका जो आकाश वेद मंत्रो की ध्वनिसे पवित्र होकर हमारे प्राणो को श्वासो का भोजन पहुचाता था, आज ऋषि समागम की महिमा को देखने वाला वही बूढ़ा आकाश हिरण्यकश्यप की जयके विकट नादसे भ्रष्ट हुआ जाता है। जिन मन्दिरो और देव स्थानो मे शंख और घड़ियालके द्वारा उच्चारण की हुई देवताओं का आरती मोहमाया की निद्रामे चूर आत्माओ को जगाती थी, उन स्थानोंमे हिरण्यकश्यप की राक्षसी प्रतिमा मद मोह और अहकार की श्रद्धासे ईश्वरीय विश्वास को डिगाती है—

जिन स्थानोंमें धर्म की धाक थी छाई हुई,
देखते हैं वहा ध्वजा पापो की लहराई हुई।
जिस जगह सत और क्षमाकी थी बहार आई हुई
ज्ञान की देवी वहा फिरती है घबराई हुइ।
देवताओं का जगह दैत्यो की माया होगई
थी जो अमृत की नदी रह विषका दरिया होगई॥

चौथा—किंतु जुल्म का कड़कता हुआ बादल दोचार छींटे बरसाने के बादही हवामें मुंतशिर हो कर बरबाद हा जाता है—

कुछ हमेशा तो सितमगर की कला रहती नहीं,

जुल्मके बूटेमें हरियाली सदा रहती नहीं ।
जुल्म मजलूमों का माना खू बहाता है कभी,
खू गरीबों का भी लेकिन रंग लाता है कभी ॥

पहिला—क्या यह नया हुक्म अनर्थका मूल नहीं, ऐसा अन्यायी कानून बनाना क्या राजा और राज पुरुषोंके लिये हिमालय पर्वत जैसी भूल नहीं ?

पांचवाँ—वह क्या हुक्म है, वह कौनसा कानून है ?

पहिला—यह कि ईश्वर भक्तोंके मकान खुदवा डालो, पूजा अर्चा का सामान दरियामें बहाडालो, मालायें तोड दो, ईश्वरके रटने वालों को बे सरो सामानी के रहम पर छोडदो –
इस कदर भगवानके भक्तोंसे बद जन होगया,
इक मनुष्य भगवान का भी जानी दुश्मन होगया ।
एक जलका बुल्बुला इतना हवामें चढ़गया,
जिसने हाथोंसे बनाया उसके शिरसे बढ़गया ॥

दूसरा—हा, रात्रि आनेसे पहिले सूर्य पर स्याही छाजाती है, बरबादी अपने आनेसे पहिले अहंकार का विकार फैलाती है —
धार फव्वारे की गिरने से प्रथम अठला गई,
पर लगे कीडी के, समझो मौत उसकी आगई ।

पहिला—इसका प्रत्यक्ष प्रमाण भी मौजूद है, जिसतरह लकडी के भीतरसे उत्पन्न हुआ घुन लकडी को ही खोखला करके नष्ट कर देता है, उसी प्रकार हिरण्यकश्यप के ही घरमें उत्पन्न हुआ उसका अपना पुत्र प्रहलाद घुन की तरह उसका सर्वनाश करेगा —
जल जायगा फफोला यह अपने ही दागसे,
घरको लगेगी आग इस घर के चरागसे ।

दूसरा—यदि तुम्हारा ऐसा ही विश्वास है तो श्रम करो, अपने कायरपने का प्रायश्चित्त करो। उस राजकुमार बालक के उत्साह और दृढता से शिक्षा लो, जिस ने भरे दरबार में अपने नास्तिक पिता के अभिमान का ईश्वरीय विश्वास से खण्डन किया।

पहिला—तो अब वक्त है, बताओ तुम क्या करोगे ?

तीसरा—वक्त किस बात का ?

पहिला—या तख्त या तख्ता।

दूसरा—तो नास्तिक बन कर हम तख्त को लेना भी स्वीकार नहीं करेंगे —

भलाई की अगर हो मौत तो जीने से बहतर है,
बुराई का तो जीना मौत के सदमे से बदतर है।

पहिला—तो आओ उस बालभक्त प्रहलाद की सहायता पर डट जायें, खुल्लम खुल्ला सचाई का अनुमान करें, प्राणों का बलिदान करें, और जिस भारत में असत्य और हिन्सा का रोग फैल रहा है, वहा कुरबानियों से सत्य और अहिन्सा की सुगन्धी फैलाये। धीरता और गंभीरता के साथ उस समय की प्रतीक्षा करें, जब सत्याग्रह की विजय का उज्वल दृश्य हमारी आँखो के सामने आये।

सब—बोलो धर्म की जय।

—— ❀ ——

प्रथम अंक तृतीय दृश्य

पाठशाला

(प्रहलाद सब बालकों को पढ़ाता है।)

प्रहलाद—आओ भय्या ! जब तक गुरु जी न आये, तब तक मैं तुम्हें एक नया पाठ पढ़ाऊँ ।

कक्का कोटि कागज छोड, लगनवा श्रीराम से जोड ।

सब—कक्का कोटि कागज छोड, लगनवा श्री राम से जोड ।

प्रहलाद—खख्खा खरी कहू मैं बात, साथ न कोई आवत जात ।

सब—खख्खा खरी कहू मैं बात, साथ न कोई आवत जात ।

प्रहलाद—गग्गा ज्ञान ध्यान की नाव, भव तरने का यही उपाव ।

सब—गग्गा ज्ञान ध्यान की नाव, भव तरने का यही उपाव ।

प्रहलाद-घघ्घा घडी नहीं एक आश, कब तनसे यह निकले श्वास ।

सब—घघ्घा घडी नही एक आश, कब तनसे यह निकले श्वास ।

प्रहलाद—चच्चा चार वेद का ज्ञान, और ईश्वर का नाम समान ।

सब—चच्चा चार वेद का ज्ञान, और ईश्वर का नाम समान ।

प्रहलाद—छछछा छोड न सत की टेक, निश्चय मान ब्रह्म है एक ।

सब—छछछा छोड न सत की टेक, निश्चय मान ब्रह्म है एक ।

(हिरण्यकश्यप, षन्डुरान, और गुरु का आना ।

हिरण्यकश्यप— (क्रोध में) यहा भी मेरे शत्रु राम का नाम गूंज रहा है, अरे दुष्टो ! तुम यह क्या उच्चारण कर रहे हो ? बताओ तुम्हें ब्रह्म का नाम किसने सिखलाया ?

लडका—(कांपताहुआ) महाराज ! हमें तो प्रहलाद ने बताया ।

हिरण्य०—क्यों प्रहलाद ! तू अभी तक बाज न आया ?

प्रहलाद—क्या राम का नाम लेने से बाज आऊँ, सत्य रूपी सीधा पथ छोड कर असत्यरूपी कांटों से भरपूर मार्ग में

दूसरा—यदि तुम्हारा ऐसा ही विश्वास है तो श्रम करो, अपने कायरपने का प्रायश्चित्त करो। उस राजकुमार बालक के उत्साह और दृढता से शिक्षा लो, जिस ने भरे दरबार में अपने नास्तिक पिता के अभिमान का ईश्वरीय विश्वास से खण्डन किया।

पहिला—तो अब वक्त है, बताओ तुम क्या करोगे ?

तीसरा—वक्त किस बात का ?

पहिला—या तख्त या तख्ता।

दूसरा—तो नास्तिक बन कर हम तख्त को लेना भी स्वीकार नहीं करेंगे ——

भलाई की अगर हो मौत तो जीने से बहतर है,
बुराई का तो जीना मौत के सदमे से बदतर है।

पहिला—तो आओ उस बालभक्त प्रहलाद की सहायता पर डट जायें, खुल्लम खुल्ला सचाई का अनुमान करें, प्राणों का बलिदान करें, और जिस भारत में असत्य और हिन्सा का रोग फैल रहा है, वहा कुरबानियों से सत्य और अहिन्सा की सुगन्धो फैलायें। वीरता और गंभीरता के साथ उस समय की प्रतीक्षा करें, जब सत्याग्रह की विजय का उज्वल दृश्य हमारी आँखों के सामने आये।

सब—बोलो धर्म की जय।

—— ❀ ——

कागज की तुम हो किश्ती, पानी के बुलबुले हो।
दावागुरी का कर के, दुखदा में पड रहे हो,
कीडी हो तुम मगर इक, हाथी से लड रहे हो।

हिरण्य०—किन्तु तुमने उस राम का क्या देखा, जो पतंग के पीछे भागने वाले बच्चे की तरह उस के पीछे पड रहे हो।

प्रहलाद—मैंने उस का सब कुछ देखा और देखता हूं। उसकी अपार सृष्टि का सरल और सुन्दर कारोबार देखताहूं जो नेक और बद, छोटे और बडे, भक्त और द्रोही सब के लिये यकसाँ खुला है, उस की कृपाओं का अमिट भण्डार देखता हूं —

वह बादल में गरजता है, वह बिजलीमें चमकता है,
वह अन्नो में झलकता है, वो सागर में छलकता है।
वह मगरूरों को अग्नि बन के, शोलों से जलाता है,
घटा बन घोर बन कर, प्यास प्यासोंकी बुझाता है।

हिरण्य०—झूट है, बकवाम है, मिथ्या विचार है, यदि वह वास्तव में कुछ है तो उस को देखने के लिये तुम्हारी तरह क्या हमारी आँख नहीं?

प्रहलाद—तुम्हारा आँख है, किन्तु राज मद से बदमस्त हो गया है, जुल्म और अन्याय के मोतियाबिन्दु से तुम्हारी आत्मिक दृष्टि अन्धी और पस्त हो गयी है —

लगा कर ज्ञान का अञ्जन, हृदयकी आख को खोलो,
श्रद्धाके जलसे दर्पण आत्मा का, तुम प्रथम धोलो।
सृष्टी का भेद यह अज्ञान से हरगिज न जायेगा,
उठा अज्ञान का परदा, तो वह दृष्टी में आयेगा।

हिरण्य०—सृष्टि में कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिस का अस्तित्व साबित हो और वह देखने में न आये, मौजूद हो, उस

कदम उठाऊँ ? —

मैं कैसे राम को छोड़ू कि नस नस में रमा है वह,
मेरे खून और हड्डियों की बनावट में मिला है वह।
इधर वह दिल मे बैठा है, इधर आखों में फिरता है,
बना हैं आँख की पुतली, कहा आँखों से गिरता है।

हिरण्य०—मूर्ख बच्चे! जरा सोच और समझ, कि मैं तेरा अन्नदाता हूं।

प्रहलाद – तो क्या हरज है —

तुम हो इक मेरे हो दाता वह सब का अन्न दाता है,
तुम्हें जो रोज मिलता है उसी के घर से आता है।
सृष्टि के लिये उस के सदा भण्डार जारी हैं,
तुम्हारे जैसे राजा उस के द्वारे पर भिकारी हैं।

हिरण्य०—अरे नादान! मूढ! कम अक्ल!! दृष्टि गोचर अपने साक्षात पितारूपी ईश्वर से विमुख हो कर उस नजर न आने वाले फरजी ईश्वर को स्वीकार करता है, हाथ मे आये हुए पक्षी को उड़ा कर उडते हुए को गिरफ्तार करता है। जरा आँखें खोल और देख —

विश्व का स्वामी हूं मैं, मैं ही वह भगवान हूँ,
ओ३म् का हूं शब्द मैं ही, वेद का मैं ज्ञान हूं।
मन्दिरों और धर्मशालाओं में मैं माबूद हूं,
सृष्टि के हरएक परमाणु में मैं मौजूद हूं॥

प्रहलाद—लेकिन चार दिन के लिये ही मौजूदगी का यह झूठा दावा है। ईश्वरीय क्रोध की जरा सी ठोकर इस मिट्टी के कच्चे बर्तन को पल में तोड कर खाक में मिला देगी काल की विकाल गदा इस सारे बलबूते को मिटा देगी —

किस वास्ते फना के सागर में तुम चले हो,

कागज़ की तुम हो किश्ती, पानी के बुलबुले हो।
दावाख़ुदी का कर के, दुबदा में पड रहे हो,
कीडी हो तुम मगर इक, हाथी से लड रहे हो।

हिरण्य०—किन्तु तुमने उस राम का क्या देखा, जो पतंग के पीछे भागने वाले बच्चे की तरह उस के पीछे पड रहे हो।

प्रहलाद—मैंने उस का सब कुछ देखा और देखता हूं। उसकी अपार सृष्टि का सरल और सुन्दर कारोबार देखताहूं जो नेक और बद, छोटे और बडे, भक्त और द्रोही सब के लिये यकसां खुला है, उस की कृपाओं का अमिट भण्डार देखता हूं —

वह बादल में गरजता है, वह बिजलीमें चमकता है,
वह अश्रो में झलकता है, वो सागर में छलकता है।
वह मगरूरों को अग्नि बन के, शोलों से जलाता है,
घटा घन घोर बन कर, प्यास प्यासोंका बुझाता है।

हिरण्य०—झूट है, बकवास है, मिथ्या विचार है, यदि वह वास्तव में कुछ है तो उस को देखने के लिये तुम्हारी तरह क्या हमारी आँख नहीं?

प्रहलाद—तुम्हारी आँख है, किन्तु राज मद से बदमस्त हो गयी है, जुल्म और अन्याय के मोतियाबिन्दु से तुम्हारी आत्मिक दृष्टि अन्धी और पस्त हो गयी है —

लगा कर ज्ञान का अञ्जन, हृदयकी आंख को खोलो,
श्रद्धाके जलसे दर्पण आत्मा का, तुम प्रथम धोलो।
खुदी का भेद यह अज्ञान से हरगिज़ न जायेगा,
उठा अज्ञान का परदा, तो वह दृष्टी में आयेगा।

हिरण्य०—सृष्टि में कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिस का अस्तित्व साबित हो और वह देखने में न आये, मौजूद हो, उस

का वुजूद हो और आंख न देख पाये ?

प्रहलाद—तो देखो, शरीर का दर्द जान खोता है, जिस्म के अन्दर मौजूद होता है, परन्तु दृष्टि नहीं आता —

महँदी के पत्ते में लाली है नजर आती नहीं,
है पवन आकाश में लेकिन वह दिखलाती नहीं।
जिस तरह अग्नी का शोला सग में मौजूद है,
इस तरह परमात्मा हर रंग में मौजूद है।

हिरण्य०—मैं ऐसे झूठे प्रमाणों को मानने वाला नहीं, जना मूर्ख। मैंने ससार की किस शक्ति पर अपना रोब डाला नहीं ? क्या राज ताज पर मेरा अधिकार नहीं, क्या उस की तरह मेरे इन्साफ का आली दरबार नहीं ?

प्रहलाद—नास्तिक और न्याय का दावेदार ! जहा उस परमात्मा के न्याय से हर किसी को शान्ति है, वहा पराधीन हस्ती तेरे अन्याय का भी सिक्का मानती है। शक्ति के डर से जगत तुम्हारी आज्ञा को मानता है, परन्तु परमात्मा के भय रखने वाला प्रत्येक प्राणी तुम्हें पितृ द्रोही और नास्तिक जानता है। देखो पिता, तुम अपनी मन मानी कार्यवाइयों से उस परम पिता के क्रोध को जगा रहे हो, राजा बननेका दावा करते हो, किन्तु प्रजा की स्वाधीनता को छीन कर अनेक आत्माओं को कलपाने का पाप कमा रहे हो। ज्ञान रहित हो कर तुम ने मन की लगाम को काबू से बाहर कर दिया है, इन्द्रिय रूपी सरकश घोडे तुम्हें भयानक गढे में धकेलने वाले हैं, तुम ने अपनी राह में अपने ही हाथों से काटे डाले हैं —

वक्त है अब भी तुम अपने मन की वागें मोड दो,
नास्तिक पन तोड दो और जुल्म करना छोड दो।

दिल दुखाना छोड दो अब भी किसी मजबूर का,
वरना दुनिया में बुरा परिणाम है मगरूर का।

य०—देखो बेटा, मेरी प्रबल भुजाओं से डरो।

ाद०—देखो पिता, गरीबों की आहों से डरो।

ण्य०—मेरी इस तेज तलवार से डरो।

ाद—तुम दुखिया और सीना फिगार से डरो—

जा आह लग गयी किसी दुखिया गरीब को,
काम आवेगी मदद न फिर अच्छे नसीब की।
दुखियों का दिल दुखाना कोई दिल लगी नहीं,
लगती है किस तरह तेरे दिलको लगी नहीं।

ण्य०—तो क्या तू संसारमें जीवित भी रहना चाहता है, और, अपने मिथ्या हठ से मेरा मुकाबला भी करना चाहता है? नहीं, नहीं, प्रकाश में अन्धकार नहीं रह सकता, मेरे राज्य में मेरे शत्रु का तरफदार नहीं रह सकता—

राज्य में मेरे मेरा द्रोही कहाना मना है,
मेरे शत्रु राम की माला फिराना मना है।
सत् धर्म का सामने मेरे बहाना मना है,
इक सिवा मेरे किसी को शिर झुकाना मना है।

हलाद—परन्तु मैं उस अनादि परम पिता के आगे अवश्य ही शिर झुकाऊंगा।

हेरण्य०—किस बल पर?

हलाद—सत्याग्रह के बल पर—

हर सितम सह जाऊंगा मैं इक सितम ईजाद का,
हाथ से शिर पर रखूंगा मैं खड्ग जल्लाद का।
खिंच के शूली पर भी श्रद्धा को न तोडूंगा कभी,
सत्य मार्ग को न छोड़ा है न छोडूंगा कभी।

हिरण्य०—क्यों गुरु जी ! तुम ने इस को यही कु
सिखलाया है ?

गुरु—महाराज ! क्या करू, जिस तरह एक चन्दन के वृक्ष
वन के सर्व वृक्षों में चन्दन की महक आने लगती है, इस
प्रकार राजकुमार की संगति ने इन सब आत्माओं को भ
ईश्वर का श्रद्धालु बना दिया है —

मेरी भी सौजने तकदीर में मानो रफू निकला,
इसे मैं क्या सिखाता यह तो मेरा भी गुरु निकला
हो पीतल तो मुलम्मे से ही नकली जर भी होता है
मुलम्मा क्या कहीं सोने के ज़ेवर पर भी होता है।

हिरण्य०—अच्छा, यदि यह सात दिन के अन्दर अपने विचार
को न बदले तो फिर मैं सीधी तरह से इस के टेढ़ेपन को
दूर करूंगा, शक्ति के शस्त्र से सब कुछ छोड़ने पर मजबूर
करूंगा

मैं जब टेढ़ा चला तो इस को सीधा तीर कर दूंगा,
इसे और इस के ईश्वर को मैं बेतौकीर कर दूंगा।

प्रथम अंक चौथा दृश्य

अगला महल

(प्रहलाद का प्रवेश)

प्रहलाद—(स्वयम्) अफसोस कि मनुष्य अपने ईश्वर के नियमों से विमुख हो कर बद चलनी का शिकार हो रहा है, जिधर देखो उधर ही दुराचार का प्रचार हो रहा है। यह हमारी अपनी कमजोरियां हैं, जो हमें नास्तिक का अधीन बना रही हैं, यह हमारी अपनी गल्तियां हैं जो हम से पाप का सेवन करा रही हैं। यह हमारी अपनी आत्मिक निर्बलता है, जो हमें जन्म अधिकार से महरूम कर रही है, यह हमारी धर्म से पतित अवस्था है जो हमारी प्राचीन सभ्यता को भारत से मादूम कर रही है। अन्यायी शासनके जो राक्षसी नियम हमारे प्राकृतिक स्वत्त्वों पर डाका मारते हैं, जो शाही कानून हमें पवित्र अधिकार के सत्य सिंहासन से नीचे उतारते हैं वह इस बात का प्रमाण हैं कि हम बहुत नीचे गिर चुके हैं, हम स्वयम् पतित बन चुके हैं। नास्तिक पन की गुलामी में रहना हमारे लिये आनन्द का कारण बन चुका है। हम यहां तक पतित हो गये हैं कि झूठे आराम की जंजीरों को काट कर हम थोडी देर के लिये भी स्वतंत्र जल वायु में विचरना बवाल समझते हैं, थोडा दुःख उठा कर अधिक और स्थायी सुख को प्राप्त करना मुहाल समझते हैं —

यदि नेकीफ बन जायें, यदि हम नेक हो जायें,
बनें भगवान के हम भक्त, सारे एक होजायें।

कोई शक्ति भी फिर हमको,नही नीचा दिखासकती,
कोई ताकत नहीं फिर धर्म से हमको गिरा सकती।

(पुरवासियों का आना)

सब—बोलो धर्म की जय!

प्रह्लाद—और सदा ही धर्म की जय रहेगी —

बडा है भाग्यशाली धर्म को जिस ने सँभाला है,
हमेशा धर्म का ही इस जगत में बोल बाला है।

पहिला—राजकुमार! आज हम प्रजा के प्रधान नेता एक पवित्र मनोकामना लेकर आप की सेवा में आये हैं, आप राजकुल से हैं।

प्रह्लाद—जो ईश्वर की इच्छा है।

पहिला—आप राज पाट के उत्तराधिकारी हैं।

प्रह्लाद—जो परमात्मा को मनजूर है।

पहिला—हम लोग आप के अन्यायी पिता के शासन से बहुत दुखी हैं, इस लिये बगावत कर के शाही छत्र आप के शीश पर धारण करना चाहते हैं, सत्य का पक्ष ले कर असत्य के आक्रमणों को निवारण करना चाहते हैं, असत्य की जगह सत्य, अधर्म की जगह धर्म, अन्याय की जगह न्याय का राज्य स्थापन करना चाहते हैं —

बगावत से अभी हम दुष्ट का शासन उडा देंगे,
अभी हम बाहु बल से पाप की हस्ती मिटा देंगे।
सितम जो कर रहे हैं हाथ हम वह काट डालेंगे,
हम अन्यायी सितमगारों को चुन२ कर निकालेंगे।

दूसरा—हां, अब अधिक समय तक राक्षसी राज्य नहीं रह सकता, हमें नास्तिक बनाने वाला अब कोई कानून नहीं चल सकता। ——

वक्त आगया है पाप की हस्ती का नाश हो,
जालिम का दिल कबाब जिगर पाश पाश हो।

प्रहलाद् नहीं, मेरे प्यारो, अभी वक्त नहीं आया, अभी हमने अच्छी तरह दुःख नहीं उठाया, अभी सत्य धर्म के लिये मरना हमको नहीं आया। जब जालिम जुल्ममें कमाल करदेगा, मजलूम जुल्म सहते २ जालिम की दलन नीति को पामाल करदेगा, उस समय आपही आप जुल्म का अन्त होजायेगा, पाप की छाती पर धर्म का झंडा लहरायेगा —

रंग लाना है अगर मिस्ले हिना पिस जाओ तुम,
मिस्ल चन्दन खुश्बू देने के लिये घिस जाओ तुम।
कष्ट सागर में गिरो गर पाप है धोना तुम्हें,
दुख की भट्टी में जलो बनना है गर सोना तुम्हें॥

तीसरा-राज कुमार! प्रजा बहुत दुखी है, पशुवत जीवन व्यतीत कर रही है, अन्याय और अत्याचार के हाथों निर्दोष भारत जनता बेमौत मर रही है —

है सितम वह कौन सा जालिम ने जो ढाया नहीं
कौन सा दुख है जो निर्दोषों से उठवाया नहीं।
मारने के वास्ते हर एक सितम पैदा किया,
माल लूटा, मुल्क लूटा, धर्म पर हमला किया॥

प्रहलाद तो आपकी क्या मरज़ी है ?

तीसरा-यही कि धर्म वीरता को त्याग कर कर्म-वीरता को स्वीकार करें, हाथमें तलवार लेकर सितम की धार को बेकार करें —

जुल्म से जब आयें तब जब दें बराबर का जवाब,
अब यही चारा है दें पत्थर से पत्थर का जवाब।

प्रहलाद-किन्तु ये विचार तुम्हें हिन्सा के पाप का भागी बनायेंगे, तुम्हें अहिन्सा परमो धर्म के पवित्र वैदिक नियम से गिरायेंगे। दुराग्रह का सत्याग्रह से मुकाबला करो, ज़ुल्म सहने को दिल और जिगर पैदा करो। आप धर्म के लिये मिट जाओ, फिर तुम्हें कोई नहीं मिटा सकेगा, तुम प्रेम के अन्तर दाह से जल जाओ, फिर तुम्हें ज़ुल्म का कोई शौला भी नहीं जला सकेगा —

> सत्य मर सकता नहीं है झूठ के हथियार से,
> रूई फट सकती नहीं हरगिज़ कभी तलवार से।

पहला-परंतु आप बालक हैं, ईश्वर भक्त हैं, राज्य के अधिकारी हैं, आप पर अत्याचार होता देखकर हम चुप नहीं हो सकते। यह कान राक्षसी अत्याचारों को सुनते २ तंग आचुके हैं, हम लोग अपनी सहन शीलता का काफी सुबूत दिखला चुके हैं।

दूसरा-केवल एक आप ही इस राक्षसी अत्याचार का शिकार नहीं, वरन ऐसा एक आस्तिक भी नहीं जो इस अनर्थ से बेज़ार नहीं —

> लाखों ही बेगुनाह हैं बंधन में सड रहे,
> और कैद में असीर नये और पड रहे।
> हाँ सब यह सत्य धर्म के तालिब जरूर हैं,
> उनका कुसूर यह है कि वह बे कुसूर हैं।

प्रहलाद-तो कुछ चिंता नहीं, तुम सबके सब भी सच्चाई के लिये प्राणों पर खेल जाओ परंतु सत्याग्रह को न छोडो, धर्म मार्ग से कदम न हटाओ, किसी जीव को मन वचन और कर्म से दुख न दो, वरन् स्वयम् दुख उठाओ —

ज़ुल्म होता देख लो और ज़ुल्म सहना सीख लो,
त्याग करदो झूठ का और सत्य कहना सीख लो।
दुख उठाने का हुनर तुम पहिले कामिल सीख लो,
मारना आसान है मरना है मुश्किल, सीख लो।

सब—बोलो धर्म की जय!

(जाना सब का)

प्रथम अंक पांचवां दृश्य

कुम्हार का मकान और आवा

(कुम्हारन का थाने पर बरतन चढ़ाते हुये)

गाना

यही है धर्म की गंगा, नहाये जिस का जी चाहे,
यह हस्ती ईश्वर की, आजमाये जिसका जी चाहे।
जो सच पूछो तो कर्ता और धर्ता एक ईश्वर है,
बिना उसके मनुष्यको शिर झुकाये जिसका जी चाहे।
रहो तुम सत्यपर कायम तो फिर क्या झूठका डरहै,
नहीं सद्धर्म मिटने का, मिटाये जिस का जी चाहे।
श्रद्धा भगवान की हो ज्ञान का अमृत सरोवर है,
पिये खुद और औरों को पिलाये जिसका जी चाहे।
बिगड़ता कुछ नहीं उनका जिन्हें विश्वास है सत् में,
श्रीभगवान पे विश्वास लाये जिस का जी चाहे।
यह माला काठके मनकोंकी इक पूंजी उस पिताकी है,
यह उसके नामकी माला फिराये जिसका जी चाहे।

कुम्हारन—हे पवित्र आर्यवर्त ! मुझे तेरे दुर्भाग्य पर रोना आता है, अनाथ भारत ! तेरी यतीमी का दाग मुझे खूनके आस रुलाता है। तेरी बेबसी और दीन दशा पर मेरा जी कुम्हलाया जाता है। हे ईश्वर ! तू ने आज पवित्र भारत का शासन किन अन्यायी हाथों में दे डाला है, कि जिन्होंने स्वाधीनता की देवी को इस ऋषि भूमि से बाहर निकाला है। भगवान् ! क्या तुझे मनजूर न था कि हम दूध पीते बालक तेरी गोद में सत्य धर्म का अमृत पीकर परवरिश पायें ? जगदीश्वर ! क्या तुझे मनजूर न था कि हम संसार की चाल के साथ चलना सीखें ? पिता ! क्या तुझे मनजूर न था कि हम प्राणीमात्र भाई बन कर परस्पर प्रीति करना सीखे ? प्रभो ! क्या तुझे मनजूर न था कि हम सत्य धर्म के दर्शन करें, सेवा धर्म से मातृभूमि को प्रसन्न करे ? नहीं, नहीं, तुझे सब कुछ मनजूर है —

मगर तुझ को धर्म और पाप की शक्ति दिखाना है,
चढाकर झूठको आकाश पर नीचे गिराना है।
कहीं बढ चढ के ही शक्ति है रूहानी निगाहों में,
नहीं वह जोर बाहों में, है जितना जोर आहों में।

तो अब हमे क्या करना होगा ? हिरण्यकश्यप की आज्ञा से ईश्वर को त्यागना होगा, अथवा बाप दादाकी विरासत छोड कर तीन वस्त्रों के साथ अपनी जन्म भूमि से भागना होगा। नहीं, नहीं, हम प्रकाश को त्याग कर अंधेरे में नहीं आयेंगे, अमृत को छोड़ कर जहर नही खायेंगे। लुट जायेंगे, शूली पर चढ जायेंगे, कोल्हू में पिल जायेंगे, मौत के अंधेरे गार में फेंक दिये जायेंगे, बेहिस लाश की तरह कौवों और चीलों के रहम पर छोड दिये

जायेंगे परन्तु राम का नाम नहीं छोड़ेंगे, विश्व की सम्पत्तिके वदले भी इस काठकी मालाको नहीं तोड़ेंगे —

यह देह प्राण तजे तो तजे,
पर हम न कदाचित नाम तजेंगे,
हम को संसार के लोग तजें,
हम स्वप्न में भी नहीं राम तजेंगे।
सब सुख छुटे सब माल लुटे,
क्या फिक्र जो कष्ट में साँस कटेंगे,
हम जाय विदेश क्लेश सहें,
पर राम का नाम हमेश रटेंगे।

(आवे को थाग लगाती है, प्रह्लाद एक
मायी बालक सहित प्रवेश करता है।)

प्रह्लाद—(स्वगत) क्या भेडियों के नगर में अभी तक कोई भेड़ भी बस्ती है ? क्या बगलों के समागम में अभी तक कोई हंस भी बाकी है ? हाँ वह यही है। जान हथेली पर धर कर, मेरे अन्यायी पिता के क्रोध से न डर कर, राम की रट लगा रही है, जहा चारों दिशाओं में नास्तिकता का गम्भीर नाद गरजताहै, वहा राम नाम की मीठी आवाज कानों में आरही है। आहा, कैसा रोचक दृश्य है। परन्तु जहा उस पाप आत्मा ने बड़े २ ब्रह्म ज्ञानियों से ईश्वर विश्वास छुड़ा दिया, बड़े २ श्रद्धालुओं की श्रद्धा को डिगा दिया, वहा इस विचारी गरीब कुम्हारन का क्या उपाय है, देखू, आजमाऊं, कि यह जाहिरी जख्म है या अन्तर आत्मा का घाव है ?

कुम्हारन—(स्वगत) ———

वह वेद मंत्रों में है ओर है न ओश्म् में,
वह राम तो रमा है मेरे रोम रोम में।

प्रह्लाद—अरी दीवानी गरीब बुढिया! क्या तुझे खबर नहीं कि मेरे पिता हिरण्यकश्यप के राज में राम का नाम लेना बडा भारी अपराध है, पाप है, जुर्म है—

जान क्या प्यारी नहीं, या तुझ को प्यारा घर नही,
राज के क्या दंड से तुझ को जरा भी डर नहीं?

कुम्हारन—राज कुमार! मुझे राजा से अधिक परमात्मा का डर है। सिवाय उस के मैं दुनिया की किसी ताकत से नही डरती, तीर, तलवार तोप तफङ्ग कोई शक्ति भी अपना खौफ दिखाकर हम से उसका नाम नही छुडा सकती—

डरू क्या राज से यह नित नया ही राज होता है,
किसीका हुक्म जारी कल किसीका आज होता है।
परिवर्तन सदा इस राज के ही संग रहता है,
डरू मैं क्यो न उस से जो सदा यक रंग रहता है।

प्रह्लाद—परन्तु जान को खतरे में डाल कर परमात्मा का नाम लेना कौनसी बडी दानाई है?

कुम्हारन—बेटा, यही तो सच्ची कमाई है। आवागमन के नियमानुसार शरीर तो फिर दूसरे जन्म में भी मिल जायगा, परंतु कर्म वश न जाने यह नाम का रत्न हाथ आयेगा या न आयेगा—

(दाहे)

जितने फूल सृष्टि के उन पर तू मत फूल,
शिर पर खडी खिजान है मत करतार पर भूल।
आदि मध्य और अन्त से जो न्यारा है एक,
निश दिन दृढ कर प्रेम से उसकी पकडो टेक।

प्रहलाद—तुम ने क्या कभी उस राम को देखा भी है ?
कुम्हारन—हां !
प्रहलाद—कहां ?
कुम्हार—(आकर) यहां, (हृदय की ओर संकेत करके) इस हृदय मन्दिर के अन्दर ——

साफ बन कर सब सफाई देखली,
हम ने उस की कज अदाई देख ली।
दिल के दर्पण में है सूरत यार की,
जब जरा गर्दन झुकाई देख ली।

प्रहलाद—तो क्या तुम किसी तरह भी राम का नाम न छोडोगे ?
कुम्हार—हां जीते जी कदाचित न छोडेंगे —

कौन मूरख है जो उस का आस्ताना छोड दे,
हंस से होता है क्या मोती का दाना छोड दे ?
सारी दुनिया चाहे उस की रट लगाना छोड दे,
हम न छोडेंगे उसे हम को जमाना छोड दे।

प्रहलाद—क्या वह तुम्हें प्राणों से भी ज्यादा अजीज है ?
कुम्हार—हां, इस मिथ्या संसार में ग्रहण करने योग्य यही चीज है —

(दोहे)

ब्रह्म ज्ञाता जगत का जीव भरा अज्ञान,
ब्रह्म व्यापक सर्व में जीव एक स्थान।
परे जीव से ब्रह्म है, जिस का सब प्रकाश,
सर्व व्यापी ब्रह्म है सत् चित् आनंद भास।

कुम्हारन—हे देव ! बहुत बुरा हुआ।
कुम्हार—क्या हुआ ?

कुम्हारन—जिस मटके में मेरी बिल्ली ने बच्चे दिये थे, वह मटका भी मैं ने आवे पर चढ़ा दिया, सात जीवों की हत्या का पाप माथे लगा लिया। अग्नि के शौले पूरे वेग के साथ ईंधन को जला रहे हैं, निर्दोष मासूमों के खून को चाट कर अपनी प्यास बुझा रहे हैं।

(रोती है)

कुम्हार—भागवान! तू क्यों रोतीहै, क्या ईश्वर से भी तेरा विश्वास उठ गया? अरी वह तो जानता है कि बच्चे मासूम और तू निर्दोष है, वह तेरे विश्वास की कसौटी कर रहा है इस लिये खामोश है। यह तो कुम्हार का आवा है वह चाहे तो ज्वालामुखी के प्रचंड शौलों को पल में ठंडा कर दे, वह भयंकर अग्निको हिम बना सकता है, वह विशाल जल मय समुद्र में आग लगा सकता है, वह दया पर आ जाये तो अपने हजारों हाथों के साथ इस वेग से आता है और वह चमत्कार दिखाता है कि संसार हैरान रह जाता है —

> अगर वह चाहे आधी रात को सूरज चमक जाये,
> अगर वह चाहे तो क्या फूल पत्ता भी महक जाये।
> मिटा सकता है पक्के को, पका सकता है कच्चों को,
> बचा सकता नहीं क्या आके वह बिल्ली के बच्चोंको?

प्रहलाद—अरे मूर्ख कुम्हार! यह तुम क्या कह रहेहो? इन भयानक आग के शौलों ने तो बिल्ली के बच्चों को जला कर भस्म भी कर दिया होगा। तुम्हारा ईश्वर ऐसा उदार और शक्तिमान होता तो आज आधे से अधिक जगत क्यों उस से रुगरदान होता?

कुम्हार—हां, मेरा ईश्वर जैसा मैं ख्याल करता हूं उस से भी अधिक शक्तिमान है —

> किस तरह उसने बचाया ग्राह से गजराज को,
> जब भी टेरा भक्त ने आया वह उस के काज को।
> भक्त को देखे दुखी, भगवान फिर देरी करे।
> भक्त सच्चा भक्त हो तो भक्त का पानी भरे।

प्रहलाद्—यदि ऐसे कठिन समय पर मैं अपनी आंखों से उस का चमत्कार देख पाऊं, तो फिर हमेशा के लिये उस का पुजारी और तुम्हारा शिष्य बन जाऊं।

कुम्हार—जो भक्त की मुश्किल को आसान करना उस के आगे क्या दूर है? मुझे दावा नहीं परन्तु विश्वास जरूर है। हे भगवान्! हे निराश्रयोंके आश्रय! निराधारोंके आधार! क्या तुम एक भक्त के दुख को देख कर भी चुप हो सकते हो? तुम्हारा एक भक्त इस तरह परीक्षा के कांटे में तुलता हो और तुम क्षीर सागर में प्रिया लक्ष्मी के जंघास्थल को तकिया बना कर चैन से सो सकते हो? मैंने तो वेद शास्त्रों से सुन रखा है कि तुम भक्त की टेर सुन कर नंगे पांव आते हो पर्वतों को चीरते और नदियों को फांदते हुये वेग से आकर अपने भक्तों को बचाते हो। प्रभो! क्या एक भक्त पर इससे अधिक दुखभी आ सकता है? प्रभो! क्या कोई पिता पुत्र के लिये अपना हृदय इतना कड़ा बना सकता है? ——

> पहुंचने पाये न कानों में सदा से पहिले,
> तीर से तेज चलो आओ हवा से पहिले।
> बच्चे जलते हैं उधर, भक्त इधर रोता है,
> इस से बढ़ कर भी कोई वक्त बुरा होता है?

(आवाज़ पर एक ओर आगके शोलों मे सला क अन्दर से भागते हुये बिल्ली के बच्चो का निकल जाना ।)

देखो, वह आये, आहा, किस तरह अपना गुप्त शक्ति से बिल्ली के बच्चे बचाये —

इस तरह आके बचाते हैं बचाने वाले,
इस तरह आते है होते हैं जो आने वाले ।
किस तरह आये किधर आग बचा कर निकले,
किस सफाई से हैं बच्चों को बचा कर निकले ।

प्रहलाद—(कुम्हार के चरणो में गिर कर) हे भक्तराज ! बस आजसे मैं तुम्हारा शिष्य और तुम मेरे गुरु, हिरण्यकश्यप की जगह आज से तुम मेरे धर्म के पिता । आज निश्चय होगया कि वह महा शक्तिमान है, पूजने योग्य केवल वही एक भगवान है । उस की इस गुप्त रूप में सहायता से मुझे पक्का विश्वास होगया कि वह अपने भक्तों की रक्षा करने का सदा चैतन्य है । वही सत् चिदानन्द निरञ्जन है । वह अपना अपार शक्तिसे एक दिन अवश्य उस अभिमानी राजा हिरण्यकश्यप का गर्व खडन करेगा —

आज शक बाकी जो था वह दूर सारा होगया,
नाम उस का डूबने में एक सहारा होगया ।
गुप्त बल उस का श्रद्धा से आश्कारा हो गया,
हम तो थे पहिले हा उस के वह हमारा हो गया ।

कुम्हार—राजकुमार ! यह तुम्हारे सौभाग्य की बड़ाइ है, कि कमल की तरह जलमें रहते हुये भा जलका स्पर्श न करने की अलौकिक शक्ति दुनियाको दिखलाई है । मुझे विश्वास होता है कि तुम्हारे जिस राजवश को तुम्हारे पिता ने कलंकित कर दिया है, तुम अपने सत्य बलसे उस वशको

कुम्हार का आवा और बिल्ली के बच्चे ।



Delhi Printing Works Delhi

दिपाओगे, और भूले भटके संसारको राह पर लाओगे —

तुम अंधेरे घर में इक दीपक हुवेदा होगये,
फूल हो तुम भक्त जो काँटों में पैदा होगये।

प्रह्लाद—तो गुरु! मुझे उपदेश रूपी गुरुमंत्र का बल प्रदान कीजिये, हे प्रभु! मुझ पर इतना अहसान कीजिये, कि मैं धर्म रूपी शस्त्र लेकर पिता रूपी पाप से संग्राम कर सकूँ, जिस काम के लिये परम पिता ने यह मनुष्य की दुर्लभ देह प्रदान की है वह काम कर सकूं —

किस तरह उद्धार होगा पाप रूपी कीच में,
फंस गया है एक यथा भेडियों के बीच में।
पड गया हू डाकुओं के हाथ में हैरान हू,
राम रूपी धन न लुट जाये अकेली जान हू।

कुम्हार—बेटा! ऐसा करने को कोई समर्थ नहीं। दृढता से विश्वास रखो, कोई आपत्ति भी शिर पर आये, किन्तु ईश्वरीय विश्वास न डिगने पाये। शान्ति भाव से अत्याचारी के अत्याचार को सहते जाओ, हाथ कट जायें, किन्तु हाथ न उठाओ। ज़बान कट जाये किन्तु लब न हिलाओ, अन्यायसे असहयोग करो, मोह मायासे वियोग और राम से संयोग करो —

जालिम का उठे हाथ तो तुम शिर को झुका दो,
जालिम का खिचे तीर तो छाती को बढा दो।
दे तुम को कोई गालियां तुम उस को दुआ दो,
सत् धर्म की खातिर जो कटे शीश कटा दो।
दुख में भी न जाये कभी दौलत यह अभय की,
जय होती है आखिर में सदा सत्याग्रह की।

(प्रहलाद के कान में गुरु मन्त्र)

"अहिंसा परमो धर्मः"

प्रहलाद—गुरु मैं आप के कल्याणकारी उपदेश को अन्तर भावसे ग्रहण करूंगा —

न छोड़ूंगा किसी मुश्किल में भी अपनी सचाई को,
मुकद्दर में न होने दूंगा हृदय की सफाई को।
मैं शमशेरे सितम का मुंह नम्रताई से मोड़ूंगा,
सितम तोड़ेगा जालिम,पर न मैं यह अहद तोड़ूंगा।

गाना

न छोड़ेंगे कभी सत् धर्म को पर शिर कटा देंगे,
मिटे गर जुल्म की हस्ती तो हम खुद को मिटादेंगे।
सभी कहते हैं फूकों से हिमालय उड़ नहीं सकता,
मगर इक काह से हम कोह का गिरना दिखा देंगे।
यह दौलत वह है जिस से लोक और परलोक बनता है,
रहे इक सत्यकी पूंजी तो हम सब कुछ लुटा देंगे।
है ना मुम्किन जो हम सत्से बनायेंगे उसे मुम्किन,
नम्रता से भड़कती आग को पानी बना देंगे।
है मुश्किल कौनसी सत्याग्रह से हो न जो आसा,
हम अपने कर्म से दुनिया को खुद करके बना देंगे।

अगला महल

(रूपमाला और सखियों का गाते हुए आना ।

गाना

सखियाँ--चलो अलबेली सजीली सहेली चलो, काहेको शरमाओ चलो चलो लायेंगे कोई अल्बेला ।

रूपमाला—सखी मोहे कल्पाओ न, अरी जाओ जाओ न,
सताओ शरमाओ तरसाओ न
चलो अलबेली

सखियाँ—प्यारी तू, प्यारी तू, जोबन फुलवारी तू,
गोरी गोरी बांकी छवि तोरी ।

रूपमाला—करो न बरजोरी, होवे छतियाँ थोरी ।
चलो अलबेली

रूपमाला—सखियो ! तुम इस दीवानी को और क्यों दीवानी बना रही हो, दुखिया को और क्यों दुखा रही हो ?

पहली—तो प्यारी जरा देख भाल कर दिल लगाना था ।

दूसरी—हाँ, हाँ, ठीक तो कहती है, प्रहलाद तो राजकुमार था, किसी बराबर वाले को चाहना था ।

रूपमाला—तो सखी ! मैंने कोई मालदार देख कर दिल न दिया था, राजसी ठाठ अथवा राजकुमार देख कर दिल न दिया था ।

पहली—तो क्या देखा था ?

दूसरी—हाँ, हाँ, जरा बता तो क्या देख कर दिल दिया था ?

रूपमाला—यह कि उस का दिल क्षमा और दया से भरपूर है,

उस का आत्मा ईश्वरीय प्रेम के नशे में चूर है। वह सच्चाई का मतवाला है, और सब से बढ कर ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाला है —

दिल दिया था मैंने भी एक दिल रुवा दिल देखकर,
हर तरह हर बात में उस दिलको कामिल देखकर।
मैं न थी सूरत की भूकी और न दासी दाम की,
मैंने ढूंढा था वह दिल जिस में थी सूरत राम की।

पहली—सखी! इस प्रेम के प्रकट हो जाने से जानती हो क्या होगा?

रूपमाला—आराम जायगा, सुख चैन जायगा, काल आयगा और क्या होगा? ऐसे पवित्र प्रेम के लिये मैं सब कुछ निछावर करने को तय्यार हू।

पहली—इस से तुम्हारे पिता की हानि होगी।

दूसरी—कारण कि तुम्हारा पिता शम्भुदान स्वयम् नास्तिक और राजा हिरण्यकश्यप का वज़ीर आली है, जब राजा जान जायेगा कि उस की कन्या उसके शत्रु राम की पुजारन और प्रह्लाद की चाहने वाली है। वह या तो तुम्हें समझा बुझा कर राह पर लायेगा, या अपने उच्चपद से जायेगा। क्यों कि हिरण्यकश्यप बडा ही अत्याचारी और अन्यायी है, ईश्वर में विश्वास रखने वाली तुम्हारे जैसी गौवों के लिये वह एक कसाई है —

उस ने अपने नाम का डंका बजाया देश में,
कर दिया है धर्म वालों का सफाया देश में।
अब किसी दिल में नहीं है ईश्वर का राज भी,
अब नहीं देती सुनाई राम की आवाज भी।

रूपमाला—तू दीवानी है, प्यारी ! राम का नाम सुनने वाले अब भी नदियों की रवानी में, पक्षियों की खुश अल्हानी में, हवा की सन सनाहट में, पौदों की लहलहाहट में, उस की आवाज सुनते हैं, दीपक और पतंग में उस के नाम का सोज़ो साज़ सुनते हैं —

रेत उछाले से भी क्या सहरा में घाटा आयेगा,
क्या कभी चुल्लू से भी पानी उलेखा आयेगा ?
डालियां काटे वह लेकिन जड़ कभी कटती नहीं,
परदये चिलमन से सूरज की जिला घटती नहीं।

पहली—तो अब तुम क्या करोगी ?

रूपमाला—मैं सत्य का पक्ष ले कर प्यारे प्रहलाद का हाथ बटाऊंगी, उस के सत्याग्रह के मार्ग पर चलने के लिये स्त्रियों की एक सेना बनाऊंगी पापी और अन्यायी के अत्याचार का अन्त करने के लिये स्त्री की शक्ति का चमत्कार दिखलाऊंगी। आओ बहनो आओ ! तुम भी मेरे इस काम में शरीक होजाओ सत्य को खुले बन्दों ग्रहण करने और प्रकट करने का साहस दिखलाओ, यदि इस पवित्र भारत भूमि पर सत दया, क्षमा, धर्म और न्याय का राज देखना चाहती हो तो हिरण्य कश्यप के बनाये हुये अन्यायी नियमों को अस्वीकार कर के सत्याग्रह के मैदान में आगे आओ —

सत्य कहने, सत्य करने से न घबराओ कभी,
वीरता के वक्त पर कायर न होजाओ कभी।
वास्ते सुख के कभी बेचो न अपने धर्म को,
धर्म की रक्षा करो प्रधान मानो कर्म को।

पहली—सखी बाला ने बात तो बड़े दूर की कही।

दूसरी—बड़ी स्यानी है।

तीसरी—जो हा, बड़ी ही बुद्धिमता है।

रुपमाला—तुम सब जानती हा कि हिरण्यकश्यप अभिमान से झूठा दावा कर के अपने आप का ईश्वर बता रहा है?

पहली—हाँ।

रूपमाला—वह प्रजा को खोटे मार्ग पर चला रहा है?

पहली—हाँ।

रूपमाला—वह अन्याय से जु़ल्म कमा रहा है?

पहली—हा।

रुपमाला—वह भुजाबलसे आत्मिक शक्ति का दबा रहा है?

पहली—हा।

रूपमाला—वह भारत वासियों को नास्तिक और दुराचारी बना रहा है?

पहली—हाँ।

रूपमाला—ता फिर यह जानते हुए भी यदि एक मनुष्य अपने प्राणो के बचावके लिये, थोड़े दिनोंके झूठे सुखके लिये उसके अत्याचारसे डरे, अन्याय और जुल्म करने में उसकी सहायता करे, आखोंसे देख कर विष खाये, सत्यके पक्षमें अपनी जिव्हा न हिलाये, तो वह कितना बडा मूर्ख है, कितना बड़ा अपराधी है, कितना बड़ा अन्यायी है—

> खुद वह पापी है जो करता है सहाय पापकी,
> पाप पर गर वह चलाये तो न माने बापकी।

पहली—परंतु हम अबलाओंसे क्या हा सकेगा?

रुपमाला—बहुत कुछ होसकता है, हम भाईयों और पतियों को सचाई का दिलदादा बनायेंगी, सत्याग्रही संतान उपजायें गी और यदि इस पवित्र धर्म का पालन करते हुये भी

दोषी मरदानी जायेंगी, और उसके लिये फाँसी पर लटकाई जायेंगी, तो एक २ की कुरबानी एक २ हजार नास्तिकों को आस्तिक बना देगी, हमारे प्राणों की भेंट प्रत्येक कायर दिलके अन्दर वीरता की आग लगा देगी।

दूसरी—सखी! इसकी बात बिलकुल सच्ची है। जिस सच्चाई को दबानेका हिरण्यकश्यप ने यत्न किया है, वह गुप्त विषकी भांति उसके शासन रूपी शरीर में प्रवेश कर रहा है, अपने पुत्र पर अत्याचार करने से उसके पापों का घट फूटने के लिये बडी शीघ्रताके साथ भर रहा है —

काटता फौलाद को है काठ की तलवारसे,
है मिटाता धर्म को वह पापके प्रचारसे।
फूट जायेगा घडा जब पापसे भर जायगा,
रामको मारेगा क्या वह आपही मरजायेगा।

(घबराये हुये दासी का प्रवेश।)

दासी—कुँवरी, गजब होगया, अनर्थ हुआ!

रूपमाला—क्या हुआ?

दासी—समझाने, बुझाने, लोभ दिलाने से भी प्रहलादने सत्याग्रह को न छोडा।

रूपमाला—और न कभी छोडेगा।

दासी—परंतु अब पिताने इस निर्दोष पुत्र को नाश करने का इंतिजाम किया है। हाय, पित्र स्नेह दुनियासे मर गया, दया उठगई, रहम सो गया, धर्म संसारसे कूच कर गया!

रूपमाला—आखिर तू क्या सुन कर आई है, इतनी क्यों घबराई है?

दासी—हिरण्य कश्यपने प्रहलाद को जीवित आग में जलाने का हुक्म दे दिया है —

क्या बनेगा एक पर-बस और पर-आधीन से,
पड़ गया है वास्ता एक हंस को शाहीन से।

रूपमाला—नहीं दासी, मुझे अपने भगवान पर पूरा विश्वास
असत्य और अभिमान का ही अन्त में नाश है —

जब थे बालक जिसने रक्षा गर्भ में नौ माह की,
जिसने फाँसी गजकी काटी और खबर ली ग्राह की
जिस ने बिल्ली के बचाये आ के बच्चे आग से,
वह बचायेगा उसे भी कौड़ियाले नाग से।

पहली—हा बहन, विश्वास रक्खो, विश्वासका बेडा पार है

रूपमाला—क्या अब भी तुम्हें मेरी बात मानने से इन्कारहै? क्य
अब भी इस अन्यायी शासन के आधीन रहना पस
करोगी, क्या अब भी सच्चाई के लिये आवाज उठाने म
अपनी जबान बन्द करोगी? भारत को इस तरह जुल
के गरदाब में फँसा हुआ देख कर भी तुम्हारा अन्त करण
खामोश रहेगा, क्या सत्य रुपी रत्न को हाथ से खं
कर अब भी अल्प समय के आराम की |नाशवान ,खुर्श
पर सन्तोष रहेगा? —

तुम्हारे भाई और बेटे सितम की भेट होते हैं,
इस अन्यायी के हाथों सब लहू के अश्क रोते हैं।
जले जाते हैं सब ऐसी लगाई आग जालिम ने,
बहा कर खून निर्दोषों का खेला फाग जालिम ने।

पहली—बहन! भारत और भारत सन्तान की रक्षा के लिये
हम सब कुछ करने को तय्यार हैं।

दूसरी—परन्तु अब प्रहलाद कैसे बच सकता है?

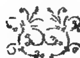
रूपमाला—उसे अपना प्रभु बचायेगा, मेरी प्रार्थनायें बचा-
येंगी। वह जिये या मरे, मैं जन्म भर विधवा रह

या सुहागिन, इस की चिंता नहीं ।-उस को अपने भाग्य पर छोड़ दो और तुम सच अटल व्रत धारण कर सत्य का प्रचार करो, नास्तिक लोगों को अज्ञान की निद्रा से बेदार करो —

गाना

रखो विश्वास ईश्वर पर वह बेड़ा पार कर देगा,
नसीबा सो रहा है जो उसे बेदार कर देगा ।
करो तुम कर्म अच्छे और रखो भगवान में श्रद्धा,
वह फल का फैसला कर्मों के ही अनुसार करदेगा ।
कहां तक दुःख उठानेके हैं कायिल हम परख ले वह,
मदद के वास्ते शक्ति का भी इजहार कर देगा ।
जले दिलका धुवाँ समझो हवा ठण्डी नहीं कोई,
जिगर वाले के दिलको भी यह ठंडा ठार करदेगा ।
चलो मिल कर करें सब प्रार्थना दर्बार में उस के,
हमें विश्वास है भारत का वह उद्धार कर देगा ।

(सब का जाना ।)



रानी—बेटा ! तो मैं अपनी आँखोंसे तुझे अग्नि में जलता कैसे देख सकूगी ? देखो पुत्र , तुम मेरे जीवन का चिराग हो, तुम ही मेरी आशाओं का फला फला हुआ बाग हो, तुम्हारे मर जाने पर क्या मैं जीवित रह सकूगी ? तुम क्या यह मातृ-हत्या का पाप कमाना धर्म समझोगे ? नहीं बेटा ! तुम ऐसा नहीं करोगे, मेरे लाल ! तुम मुझे मार देने से प्रथम नहीं मरोगे —

तोडो न मेरे लाल, बुढापे का सहारा,
तारीक करो तुम न यह आँखो का नजारा ।
इस मुफ्त में मरती हुई माता को बचा लो,
तुम आप भी जीते रहो मुझ को भी जिला लो ।

प्रहलाद—लेकिन माता, मैं सत्याग्रह को कैसे तोड दू, जो वस्तु जन्म जन्मातर के तप करने के पश्चात् मिली है उसे कैसे छोड दू —

तुम्हारे दुखसे भी मेरा कलेजा थर्राता है,
मगर मैं क्या करू, हाथों से मेरे राम जाता है ।
इधर खाई में है पाँव उधर कुँये में पडता है,
बचाता हू जो माता को जन्म सारा बिगडता है ।

रानी—तो मेरे दूध की छत्तीस धारें क्या फिजूल गईं ?

प्रहलाद—माता ! इन दूधकी धारों से बढ कर मुझे उन बेशुमार जीवन श्वासों का ध्यान है, जो विधाता ने राम का नाम जपने के लिये मुझे प्रदान किये हैं । इस तुम्हारे ऋण से अधिक मुझे उस बडे भारी कर्ज का ध्यान है, जो मनुष्य जन्म दे कर ईश्वर ने मेरे आत्मा पर डाला है, माता तो दूसरे जन्म में भी मिल सकती है, परन्तु सत्य धर्म फिर कहा मिलने वाला है —

है इधर पारस का टुकडा और है कञ्चन उधर,
बास की लकड़ी इधर है और है चन्दन उधर।
पाप का विष कैसे खाऊँ धर्म का रस छोड कर,
किस तरह लेलू मैं एक पत्थरको पारस छोड कर।

रानी—बेटा, तुम जानते हो कि पुत्र रूपी रत्न किन मुश्किलों से मिलता है?

प्रहलाद—और माता तुम जानती हो कि नाम रूपी धन किन मुश्किलों से मिलता है?

रानी—तो क्या तुम्हें माता का रोते बिलकते जान देना स्वीकार है?

प्रहलाद—यदि मैं सत्यके लिये मरूं, और माता मेरे वियोग में मरजाय तो फिर माता और पुत्र दोनों का बेडा पार है—

यह खुश किस्मत है जिसने राम की रटना लगाली है,
मरे जो धर्म की खातिर बडा ही भाग्य शाली है।

रानी—बेटा तुम्हारा क्रोधी पिता सचमुच तुम्हें आगमें जलादेगा।

प्रहलाद—तो मैं खुशीसे जल जाऊंगा।

रानी—यह तुम्हारा अस्तित्व मिटा देगा।

प्रहलाद—तो मैं शौकसे मिट जाऊंगा।

(पलाट का फटना, काष्ठकी चिता, हिरण्यकश्यप तथा होलिका का प्रवेश।)

हिरण्यकश्यप—क्यों प्रहलाद! देख और बता इधर मेरी खुशनूदी है और तेरी बहबूदी है, परंतु उधर यह काष्ठ की चिता है जिसका भयंकर दृश्य दिलको हिला देने वाला है—

जीना है कुछ दिन और तो
रहना है चैनसे यदि
शौले नहीं तो
करदेंगे दूर यह

प्रह्लाद्—तो जिन शोलोंने आखिर एक दिन जलाना है, उन शोलोंसे क्या घबराना है? कदाचित् यह जला भी सकते हैं, तो इस मायावी शरीर को जला सकते हैं, परंतु अमर आत्मा पर लेश मात्र आंच भी नहीं लासकते हैं। मर कर तो हर कोई इस चितामें जलता है, परन्तु आशिक मर्द वह है, जो प्रसन्नता के साथ जीते जी ही इस आगमें कूद्पड़ता है—

> यह शोला आग का पापी जो हैं उन को डराता है,
> जो मरना जानता है कब वह इससे मुंह फिराता है।
> यह इस संसार की झूठी मुहब्बत को जलाता है,
> चिता यह एक रस्ता है जो सीधा स्वर्ग जाता है!

होलिका—बेटा! पिता का कहना मानलो, यह मनुष्य जन्म दोबारा नहीं मिलना, जरासा हठ छोड़ने पर आनन्द ही आनन्द है। जवानी की मौत क्यों मरते हो? तुमने एक पृथ्वी पति महाराजाके यहां जन्म धारा है, यह राज ताज सब कुछ तुम्हारा है—

> जो ज्ञानी है वह अच्छे और बुरे पर ध्यान देता है,
> वह मूर्ख है जो फर्जी ईश्वर पर जान देता है।

प्रह्लाद्—तो ईश्वर की हस्ती का प्रमाण, उस की भक्ति का आनन्द, उसके प्रेमका स्वाद वही जान सकता है, जो जीतेजी मरजानता है, जो जानपर खेलना खेल समझता है—

> क्या मज़ा जलने में है तू एक परवाने से पूछ,
> क्या मजा भक्ति में है ईश्वरके दीवाने से पूछ।
> आगसे तपती हवा में ही तो गुल खिलता
> यार से वासिल हुए पर ही मजा मिलता

हिरण्यकश्यप—इस तुम्हारे मरने से क्या फायदा हो जायगा?

प्रह्लाद—मेरा मरना तुम्हारे अभिमान के विकार को मिटा देगा, मेरा मरना तुम्हारे अन्यायी शासन का तख्ता उलटा देगा। मेरा मरना सचाई पर मरने वाले हजारों दीवाने पैदा करेगा, मेरा मरना सत्य धर्म के लिये जल जाने वाले लाखों परवाने पैदा करेगा। मेरा मरना ईश्वरीय विश्वास का बीज बोयेगा, मेरा मरना भारतके दामनसे अन्याय की गिलाजत के दाग को धोयेगा। इस एक सत्याग्रही के मरने से लाखों और सत्याग्रही उपजेंगे, मेरे उच्च आदर्शसे गिरे हुए देश उठेंगे—

> तेरी तरह न फिर कोई जल्लाद बनेगा,
> बच्चा हर एक देशका प्रह्लाद बनेगा।
> मिट जाने से मेरे तो यह बेदाद मिटेगी,
> यह ज़ुल्म तो क्या, ज़ुल्मकी बुनियाद मिटेगी।

होलिका—बेटा! देख मैं तेरी बुआ हूं, तू मुझे बहुत प्यारा है, इस लिये तेरे इस कोमल शरीर को अग्निमें जलते देखकर मुझे बड़ा दुःख होगा। अपने आप पर नहीं, अपनी इस उठती जवानी पर नहीं, तो इस बूढ़ी माताके बुढ़ापे पर तरस कर—

> योंही करजा चुकाता है कोई भी जन्म दाता का?
> कोई भी भूल जाता है कभी एहसान माता का?

रानी—(गले लगाकर रोते हुये) हाँ बेटा! मैं फिर कहती हूं, मेरे जीवन की पामाली न करो, मेरी गोद खाली न करो—

> न माता की करो हत्या सुधर जाओ मेरे बच्चे!
> न गाय को बिलकती छोड़ कर जाओ मेरे बच्चे!

प्रहलाद—माता! तू क्यों रोती है, इस भूठे संसारी नातेके लिये क्यों जान खोती है? एक तुम्हारी गोदी ही खाली नहीं हो रही, किन्तु भारत की उन बेशुमार माताओं की तरफ देखो, जो हजार मानतायें मानने, घोर तप करने, नाना प्रकारके कष्ट उठाने पर भी गोद खाली होने का दिल में दाग रखती हैं, जो हृदयके मन्दिर में आशाओं का बुझा हुआ चिराग रखती हैं।

रानी—गोदखाली रहती तो फिर यह रोना न होता। एक बार भाग्य पर रोकर बैठ जाती, इस तरह उम्र भरके सोगसे तो छुटकारा पाती —

> पहिले से ही जो दाग यह रहता तो ठीक था,
> उजड़ा हुआ ही बाग यह रहता तो ठीक था।
> लेकिन यहा तो काम बना और बिगड़ गया,
> वह फूलना बुरा है जो फूला उजड़ गया।

प्रहलाद—परन्तु अब रोने से क्या होगा?

रानी—कुछ नहीं होगा, लोग इसलिये नहीं रोते कि रोने से कुछ होगा, बल्कि रोना आता है इसलिये रोते हैं।

प्रहलाद—परंतु यह हमारी भारत जातिकी एक बड़ी भारी दुर्बलता है, वह दुर्बलता जिस ने भारत को इस प्रकार पराधीन कर दिया, लोगों के आचार, विचार और वीरता का नाश कर कि कायर और बलहीन कर दिया। जिस जाति के लोग अपने सम्बन्धियों के मरने पर अधिक रोते हैं, वह आत्मिक बल में अधिक गिरे होते हैं। धन्य हैं वह मातायें, जो सचाई के लिये मरने वाले पुत्र की मृत्यु पर खुशी करती हैं, धन्य हैं वह स्त्रियां जो धर्म के लिये

पतियों की वीरोचित मृत्यु पर प्रसन्न होती हैं। कारण कि जो सत्य धर्म के लिये मरते हैं, देश सेवा करते हुये इस दुनिया से कूच करते हैं, वह वास्तव में अमर हो जाते हैं, और एक वार ऐसी बहादुराना मौत मर कर फिर मरने के चक्र में नही आते हैं —

है रोना उस पे लाजिम जो कि बीमारीसे मरता है,
है रोना उसपे लाजिम जो कि आत्मघात करता है।
सचाई के लिये जिस आदमी का काल आता है,
वह मरता है कहा वह तो अमर होने को जाता है।

हिरण्य०—बस अब उपदेश रहने दे, और मरने के लिये तय्यार होजा।

प्रहलाद—हर वक्त तय्यार हू, जो मरने से निडर हो गया, वही सत्याग्रही कहलाता है, जो मौत, मुसीबत, कैद और बेदाद से बे खौफ है, वही लोक कल्याण के लिये मैदान में आता है —

है मरना खेल मेरे वास्ते क्या डर दिखाते हो,
जो मरसकता है उसको मौतसे क्या तुम डराते हो।
डरेगा मौतसे क्या जिस ने खुद मरने की ठानी है,
धर्म की मौत तो गोया हयाते जाविदानी है।

हिरण्यकश्यप—तेरा राम अब तुझे क्यों नहीं बचाता, यदि वह मौजूद है तो ऐसे आडे वक्त पर तेरे काम क्यो नही आता?

प्रहलाद—ऐसा न कहो, वह बडा ही दीन दयाल है, उस की मर्जी के बगैर मेरा बाल बाँका होना भी मुहाल है। —

भक्त पर चलने नहीं देता सितम इजाद की,
कुन्द करदेता है मौके पर छुरी जल्लाद की।

वह समय पर वे असर करता है दाढ़े नाग की।
सर्द कर देता है वह शौला फिशानी आगकी।

हिरण्यकश्यप—तो मैं अभी देखलेता हू। बहन होलिका! तुमने प्रह्लादने आगमे अकेली न जलने का वरदान पाया है।

होलिका—हां, आग मुझे नहीं जला सकती।

हिरण्यकश्यप—तो इसको गोदीमें लेकर चिता पर बैठ जाओ, ताकि कोई आन कर इसकी रक्षा न कर सके। वरदान के अनुसार तुम बच जाओगी, और इसका यह कोमल शरीर राख बनकर पैरों की ठोकरें खायेगा, और इस शिक्षाप्रद दृश्य को देख कर फिर कोई जीवधारी मेरे शत्रु राम का नाम न लेने पायेगा —

मैं इन आखोंसे देखू जबकि इसका दम निकलता हो,
चिता यह आगसे जलतीहो और उसमें यह जलता हो।

प्रहलाद—मैं भी यही चाहता हू —

उधर शौला निकलता हो इधर सब अंग जलता हो,
इधर मेरी जबासे नाम ईश्वरका निकलता हो।

(होलिका प्रहलाद को लेकर चिता पर बैठती है।)

हिरण्यकश्यप—चलो लगाओ आग!

रानी—ठहरो, पहिले मुझे मरने दो। (गिरना)

हिरण्यकश्यप—कोई आखिरी हसरत है?

प्रहलाद—कुछ नहीं, बिना राम नामके कोई हसरत नहीं —

परदा दरी वह आतिशे शोला फिशा में हो,
परदा कोई न उसके मेरे दरमियां में हो।
मुझ को जलाके अग्नि तेरे दिल में जा लगे,
होनेसे गुम मेरे तुझे उसका पता लगे।

(आग लगाते हैं, आवाज पर विष्णु भगवान का प्रकट होना, आग से प्रहलाद को निकाल कर गरुड़ पर गोदी में बिठा लेना, होलिका का जलना।)

होलिका—बचाओ बचाओ, जली, जली ।

विष्णु—तूने देव वरदान का अनुचित लाभ उठाना चाहा । तुझे ब्रह्मा का वरदान था कि अकेली आग में नहीं जल सकेगी, परन्तु तू मेरे भक्त को गोदी में लेकर उस को जलाने की नीयत से अपनी लगाई हुई आग में कूद पड़ी है, अपने ही पाप कर्म से जल रही है। इस अपराध के बदले एक बार ही नहीं, वरन युग युगान्तर तक प्रति वर्ष होली के नाम से जलाई जायेगी, और इस दण्ड में एक बार मिट कर भी बार बार मिटाई जायेगी —

बुरा मांगेगा जो औरों का खुद उस की बदी होगी
जो खोदेगा गढ़ा उस के लिये खाई खुदी होगी।

(हिरण्यकश्यप का भय से थरथराना, आकाश मार्ग में गरुड़ पर विष्णु भगवान और प्रहलाद का अद्भुत दृश्य, देखते पर)

ड्राप

दूसरा अंक प्रथम दृश्य

बाक्स सीन

दीवान खाना

—— ❀ ——

(रूपमाला का देव पूजा करते हुये दिखाई देना ।)

गाना

जय जग दाता, पितु अरु माता !
मुक्ति प्रदाता भ्राता हो तुम ईश विधाता,
जिस पर होवे कृपा तुम्हारी,
जीवन मुक्त है वह देह धारी,
देव दैत्य या हो असुरारी,
तुम हो सब के ही हितकारी । जय०
आदि अन्त हो तुम सृष्टि के,
पालनहार प्रभु हो सब ही के ।
कर्ता धर्ता हो पृथ्वी के, नहीं दयालु आप सरीखे ।

———

रूपमाला—हे जगदीश्वर, हे जग पाल ! —
यह मूर्ख हैं जो तुझ को छोडकर दुनिया पे फूले हैं,
भटकते हैं अविद्या पथ में सीधी राह भूले हैं ।
किया स्वीकार इक पत्थरको औरहै लाल को छोडा,
संभाला झूठे जगको और है जग पाल को छोडा ।

(शम्भूवान का आना) ,,

शम्भूवान—हैं, (हैरान होकर) बेटा तुम यह क्या कर रही हो ?
रूपमाला—मैं अपने पालन हार, तारन हार, उस सर्वाधार की पूजा कर रही हूं —

अमर होने को पूजाका यह अमृत पान करती है,
बनाकर लोक को परलोक का सामान करती है।

शम्भूवान— परन्तु तू नहीं जानती कि जिस महाराजा हिरण्यकश्यप की हम नौकरी करते हैं, जिस के दिये हुये टुकडे से हम अपना पेट भरते हैं, वह राम को अपना शत्रु समझताहै, एक अन्न दाता के शत्रु से मित्रता करना कितना बडा अपराध है, कितना बडा कसूर है ?

रूपमाला—पिता ! एक मनुष्य को अन्न दाता मान कर क्यों अपने असली अन्नदाता से गद्दारदानी करते हो ? टुकडो के लिये परमात्मा की भक्ति और प्रेम को बेच कर अपने आत्माकी हानि करते हो ? क्या हिरण्यकश्यप का भण्डार बन्द हो जाने से हम भूके मर जायेंगे, क्या उस का सहारा न रहने पर हम दुनियासे गुज़र जायेंगे। पिता ! ठीकरियों के बदले रत्न को मत गंवाओ, अन्यायी के अन्न के भार से दब कर ऐसे अन्यायी न बन जाओ —

वह जिस शक्तिसे इस संसारका व्यवहार चलता है,
वह जिस शक्तिके द्वारेपर यह सारा विश्वपलता है।
उसी शक्ति में तुम विश्वास रक्खो और फिर देखो,
उठाता है वह कैसे उसके चरणोंपर तो गिर देखो।

शम्भूवान—बेटी ! मेरा अन्त करण भी देश भक्ति, जाति सेवा, नीति धर्म और कर्म फल को मानता है, परन्तु क्या करे बडे पद और बडी वेतन के लोभ से हिरण्यकश्यप को ही सब कुछ जानता है। मजबूरन हां में हां मिलानी पडती है, ज़ुल्म और अन्याय में सहायता दिखलानी पडती है —

उस की संगत से हुये हम इस कदर आधीन हैं,
बेडियां जिन से बंधे हैं सख्त और संगीन हैं।

खुद परस्ती में पड़े ईश्वर परस्ती भूल कर,
झूठ हस्ती के बने हैं उस की हस्ती भूलकर।

रूपमाला—पिताजी, जरा दिल में विचार कर देखो, हृदय नेत्र से लोभ की पट्टी उतार कर देखो, कि आप हिरण्यकश्यप के जुल्म और तशद्दुद में सहायता देकर नेक और परोपकारी पुरुषों पर कैसे २ अत्याचार कर रहे हैं, आप तो बड़ी चैन से झूठे सुख का निन्दनीय जीवन व्यतीत करते हैं, परन्तु कितने दुःखी और भूखे रोटी के लिये पुकार कर रहे हैं। क्या पाप का हाथ बटाना पाप नहीं, क्या पापी के साथ पापी बन जाना पाप नहीं? जिस मुखसे ईश्वरका नाम नहीं निकलता, जिस सम्पत्तिसे दीनोंके लिये दान नहीं निकलता, जो अमीरी भाइयों की खबरगीरी नहीं करती, वह मुख वृथा है, वह सम्पत्ति फिजूल है, वह अमीरी पाप है—

न ओहदा साथ देगा और न दौलत काम आयेगी,
न पहुंचेगी अमीरी और न अज़मत साथ जायेगी।
मगर जो धर्म करलोगे उसी ने साथ देना है,
यह भव तरने को उस भगवान ने ही हाथ देना है।

शम्भूदान—बेटी, हम पराधीनता का जीवन व्यतीत करते २ इस कदर विचारहीन होगयेहैं, कि यह समझमें नहीं आता कि हम इस जुल्म और अन्याय का साथ छोड़ कर कौनसा काम कर सकेंगे, आराम के साथ दो रोटियाँ खाने के लिये क्या इन्तजाम कर सकेंगे ——

काम करके अपने हाथों से कभी खाया नहीं।
जुल्म करने के सिवा कुछ भी हुनर आया नहीं।

रूपमाला—पिताजी बस, केवल ईश्वर पर विश्वास रक्खो और हाथ

से किये हुये काम की सूखी जुल्म और अन्यायकी चुपडी से हजार दर्जे बेहतर समझो, पाप के राज्य भवन को धर्म की झोंपडी से बदतर समझो —

वह जिस ने दूध का दरिया बहाया जन्मसे पहिले,
वह फल तय्यार रखता है हमारे कर्म से पहिले।
वह दो रोटीके टुकडोंसे मदद किसको नहीं करता,
हैं सब रोगों से मरते भूख से कोई नहीं मरता।

शम्भूदान—सत्य है, अहा! तुम्हारी जैसी सुशील कन्या को जन्म देकर मेरा जीवन भी सुफल होगया। लो मैं आज से इस ऐशो आराम पर, इस इज्ज़त और नाम पर, इस दौलत और अमीरी पर, इस गुलामी की असीरी पर लात मारता हू, जुल्म और अन्याय से अपना सम्बन्ध तोड कर सत्याग्रह को धारता हू। यदि यह पद और आबरू छिन जानेके अतिरिक्त कोई और संकट भी आयेगा, तो उस को राज कुमार प्रहलाद की तरह खामोशी के साथ सह जाऊंगा आज से अपने किसी भाई पर अत्याचार करने के लिये किसी अन्यायी का हाथ नही बटाऊगा —

जूतियां गाठूगा और कपडा बुनूगा हाथ से,
राम से डरता हुआ सब कुछ करूगा हाथ से।
अब न मिन्नत कश रहूगा पापके अहसान का,
धर्म की सूखी में समझूगा मजा पकवान का।

(पुरवासियों का आना)

सब—बोलो धर्म की जय!

पहिला—तो आओ शम्भूदानजी! इस घृणित पद को त्याग कर प्रजा की रहनुमाई करने के लिये नेता पद को प्राप्त करो, हम सब तुम्हारी आज्ञा को बजा लाने को तय्यार हैं, तुम्हें

शिर और आखों पर उठाने के लिये तय्यार हैं। आओ, जुल्म का हथियार लेकर निर्दोषों पर हुक्म चलाने के बजाय मुहब्बत का झण्डा हाथ में लेकर प्रजा के दिलोंपर हुकूमत करो, हम आज से आप को अपना नेता बनाते हैं, और ईश्वर भक्तों की सहायता करने के लिये आप की रहनुमाई चाहते हैं —

आगे नफरत थी, दिलों के बीच बिठलायेंगे अब,
बद दुआओं की जगह पर, फूल बरसायेंगे अब।

दूसरा—अब हमें पूरा विश्वास होगया कि हमारा ईश्वर सच्चा है, हमारा नियम पवित्र है, हमारा इरादा शुद्ध है, हमारी भावना मुबारिक है। देर या सवेर तमाम नास्तिक जुल्म और अन्याय का साथ छोड कर धर्म ध्वजा के नीचे आ जायेंगे, और हम एक दुनिया को दिखलायेंगे —

पाप कुछ दिन के लिये हा फूलता फलता भी है,
पाप का सिक्का कोई दिन के लिये चलता भी है।
आग ज्यादा देर तक दबती नहीं है फूस में,
छिप नहीं सकता है शौला कागजी फानूस में।

शम्भूदान—प्यारे भाइयो! आज मेरे अन्त कर्ण से यह अभिमान का विकार निकल गया, जो मुझे भाइयों से दूर रहने पर मजबूर करता था, जो भाइयोंसे नफरत करना सिखलाता था, जिसके कारण किसी दुखिया गरीब बन्धु का रुदन कानों तक नहीं पहुचने पाताथा, जिसके कारण मैं ज़ालिम को नहीं बरन् मजलूम को कसूरवार समझता था, जिस की वजह से मैं गरीब को माल्दार और गासिब को हकदार समझता था। इस पदके अभिमान मद से मेरी आखें अन्धी, कान बहिरे और दिल स्याह था, मित्रो! मैं सच-

से किये हुये काम की सूखी ज़ुल्म और अन्यायकी चुपडी से हज़ार दर्जे बेहतर समझो, पाप के राज्य भवन को धर्म की झोंपडी से बदतर समझो —

वह जिस ने दूध का दरिया बहाया जन्मसे पहिले,
वह फल तय्यार रखता है हमारे कर्म से पहिले।
वह दो रोटीके टुकडोंसे मदद किसको नहीं करता,
हैं सब रोगों से मरते भूख से कोई नहीं मरता।

शम्भूवान—सत्य है, अहा! तुम्हारी जैसी सुशील कन्या को जन्म देकर मेरा जीवन भी सुफल होगया। लो मैं आज से इस ऐशो आराम पर, इस इज्ज़त और नाम पर, इस दौलत और अमीरी पर, इस गुलामी की असीरी पर लात मारता हूं, ज़ुल्म और अन्याय से अपना सम्बन्ध तोड कर सत्याग्रह को धारता हूं। यदि यह पद और आबरू छिन जानेके अतिरिक्त कोई और संकट भी आयेगा, तो उस को राज कुमार प्रहलाद की तरह ख़ामोशी के साथ सह जाऊंगा आज से अपने किसी भाई पर अत्याचार करने के लिये किसी अन्यायी का हाथ नहीं बटाऊंगा —

जूतियां गाठूंगा और कपडा बुनूंगा हाथ से,
राम से डरता हुआ सब कुछ करूंगा हाथ से।
अब न मिन्नत कश रहूंगा पापके अहसान का,
धर्म की सूखी में समझूंगा मज़ा पकवान का।

(पुरवासियों का आना)

सब—बोलो धर्म की जय!

पहिला—तो आओ शम्भूवानजी! इस घृणित पद को त्याग कर प्रजा की रहनुमाई करने के लिये नेता पद को प्राप्त करो, हम सब तुम्हारी आज्ञा को बजा लाने को तय्यार हैं, तुम्हें

निकल जाना, उसकी जगह उल्टा आपकी बहिन होलिका का जल जाना, इस बात का प्रमाण है कि इस छोटे से बालक की आत्मा महान् है, और उस के साथ उस का भगवान है —

जिस को न खौफनाक यह अग्नि जला सकी,
तदबीर आप की न कोई भी मिटा सकी।
मस्ती से जो न आ सका ऐसे ख्याल पर,
बेहतर है उस को छोड दो अपने ही हाल पर।

हिरण्यकश्यप—तुम्हारा मतलब यह है कि साप के बच्चे को छोटा समझ कर बढ़ने और दुनिया में ज़हर फैलाने के लिये खुला छोड दू, खतरनाक बिच्छू को आस्तीन में पालू —

अपनी शक्ति का चमत्कार दिखाना होगा,
जिस तरह भी वह मिटे मुझ को मिटाना होगा।

शम्भूवान—परन्तु दिल पर लिख लीजिये, आप की हर एक तदबीर, हर एक युक्ति, हर एक ज़ुल्म, हर एक अन्याय बेकार जायेगा।

हिरण्यकश्यप—वह किस लिये ?

शम्भूवान—क्योंकि राजकुमार धर्मको उजड़ीहुई बस्ती को आबाद कर रहा है, और ईश्वर उस की इमदाद कर रहा है —

यह एक इन्सान दो ही हाथोंसे,
उस की हस्ती मिटा रहा है,
हजारों हाथों से राम लेकिन,
उसी को आकर बचा रहा है।
मदद पर उसकी है राम वरना,

मुच आजतक गुमराह था। मैं वेशक पाप का सेवन क
रहा था, ईश्वरको छोड़ कर एक मगरूर नास्तिक क
पूजन कर रहा था। आज से पहिले मेरा तन, मन, दौल
और इज्जत के लिये था, परन्तु आजसे मेरा तन, मन, ध
और इज्जत सब कुछ जाति सेवा के लिये अर्पण है —

आओ मिलकर पाप की हस्ती मिटायें धर्म से,
धार्मिक सब को बनायें अपने आला कर्म से।
सबको जैसाहै बनाना बन के हम दिखालायें खुद,
या मिटादें जुल्म को या जुल्म से मिट जायें खुद

(जाना सब का)

अंक दूसरा द्वितीय दृश्य

अगला महल

(हिरण्यकश्यप और शम्भूवान का प्रवेश।)

हिरण्यकश्यप—बस शम्भूवानजी आज से ज्ञात होगया कि अवश्य
घर अभिमानी विष्णु (परमात्मा) मेरे पुत्र को मेरे
विरुद्ध भड़का रहा है, उस की सहायता कर के उसे
और भी गुस्ताख बना रहा है।

शम्भूवान—श्रीमान् प्रहलाद अवश्य कोई चमत्कारी पुरुष है, यही
कारण है कि आप का हर एक तशद्दुद उस की हस्ती
मिटाने में निष्फल होता है। आप जितना दबाते हैं, उस
का विश्वास उतना ही और अधिक बढ़ता है, अन्यथा
इस तरह खतरनाक आग के शोलों से साफ़ बच कर

निकल जाना, उसकी जगह उल्टा आपकी बहिन होलिका को जल जाना, इस बात का प्रमाण है कि इस छोटे से बालक की आत्मा महान् है, और उस के साथ उस का भगवान है ——

जिस को न खौफनाक यह अग्नि जला सकी,
तदबीर आप की न कोई भी मिटा सकी।
सख्ती से जो न आ सका ऐसे खयाल पर,
बेहतर है उस को छोड दो अपने ही हाल पर।

हिरण्यकश्यप—तुम्हारा मतलब यह है कि साप के बच्चे को छोटा समझ कर बढ़ने और दुनिया में जहर फैलाने के लिये खुला छोड दू, खतरनाक बिच्छू को आस्तीन में पालू —

अपनी शक्ति का चमत्कार दिखाना होगा,
जिस तरह भी वह मिटे मुझ को मिटाना होगा।

शम्भूवान—परन्तु दिल पर लिख लीजिये, आप की हर एक तदबीर, हर एक युक्ति, हर एक जुल्म, हर एक अन्याय बेकार जायेगा।

हिरण्यकश्यप—वह किस लिये ?

शम्भूवान—क्योंकि राजकुमार धर्मको उजडी हुई बस्ती को आबाद कर रहा है, और ईश्वर उस की इमदाद कर रहा है —

यह एक इन्सान दो ही हाथोंसे,
उस की हस्ती मिटा रहा है,
हजारों हाथों से राम लेकिन,
उसी को आकर बचा रहा है।
मदद पर उसकी है राम वरना,

हिरण्यकश्यप—ले जाओ और इस बागी वजीर को कैद डाल दो —

करदो नाजिल इसपे हर एक रंज और आलामको,
इस कदर सख्ती करो जिस से यह तजदे राम को

(जाना चोबदार और शम्भूवान का,
दूसरी ओर सेखुदीराम का प्रवेश ।)

खुदीराम—श्रीमान् पृथ्वी पति महाराज की जय !

हिरण्यकश्यप—खुदीरामजी ! मैं ने आज बगावतके जुर्म मे शम्भूवानको एक ना मालूम अर्से के लिये कैदमें डाल दिया है उस की जगह आपको अपना वजीर बनाताहू, हा, लेकिन वजीर बन कर सबसे पहिला काम आप क्या करेंगे ?

खुदीराम—शम्भूवान और प्रहलाद के तमाम पक्ष पातियो का गुप्तचरोंके द्वारा पता लगाऊंगा, हर एक को उसकी शोहरत के लिहाज से सजा दूंगा । ज्यादा खतरनाक बागियों को फासी पर लटकाऊंगा और कम खतरनाक लोगा को उस समय तक बन्धन में रक्खूगा, जब तक कि वह जबान से हिरण्यकश्यप की जय न पुकारेंगे और श्रद्धा सहित आप का आरती न उतारेंगे —

योग्यता ऐसी मैं दिखलाऊंगा कारोबार मे,
आस्तिक इक भी न छोडूंगा मैं इस संसार मे ।

हिरण्यकश्यप—तो इस के इनाम में तुम्हें राज्य की सब से बडी उपाधि, राज्य कुल भूषण, प्रदान की जायगी । खुदीराम जी ! मुझे आप जैसे वजीर की ही आवश्यकता थी, जो मेरे इरादों की पूर्ति के लिये हर एक कार्रवाई कर गुजरने का तय्यार है, जो जुल्म और सख्ती का तरफदार

है हां, मगर तुम जानते हो कि प्रहलाद को किसी खास वजह से आग नहीं जला सकी —

उस का मगर मिटाना निहायत जरूर है,
उस पर दया करू मेरी आदत से दूर है।
ज़िन्दा रहा तो और कोई गुल खिलायेगा,
मेरी प्रजा में और भी वागी चलायेगा।

खुदीराम—महाराज आपके सामने उसकी हस्ती की क्या औकात है, उस को मिटाना कौनसी बडी बात है। हा एक युक्ति मेरी समझ में आती है, आप का भूतिया महल जो खूनी मुजरिमों को सजा देने के लिये मशहूर है, उस के अन्दर प्रहलाद को बन्द कर दिया जाय, भूतों का खौफ ही कम-ज़ोर रूह को उस के नाजुक बदन से निकाल देगा, डर के मारे या तो वह ईश्वरको छोडेगा या अपनी जिन्दगी इसरत नाक मौत के रहम पर डाल देगा।

हिरण्यकश्यप—शाबाश विद्वान मन्त्री! तुम्हारी तजवीज निहायत ही कार आमद है, जाओ अभी जाओ, और प्रहलाद को भूतिया महल में बन्द करा दो ——

दो गर हवा तो साँस ही आने के वास्ते,
प्यासा रखो श्रद्धा को जुडाने के वास्ते।
दाना न एक दो उसे खाने के वास्ते,
हसरत हो उस की मौत जमाने के वास्ते।

(दोनो का जाना)

भूतिया महल

(हथकड़ी लगाये हुये सिपाहियों का प्रहलाद को लाना,
प्रहलाद का गाना ।

गाना

मेरे मरने से भला तेरा कहाँ हो जायगा,
इस बुराई का नतीजा भी बुरा होजायगा ।
खून भी मेरा न बोला तो शहादत के लिये,
यह जो है खञ्जर तेरा तेरी जबाँ हो जायगा ।
दोस्ती भगवान की रक्षा करेगी भक्त की,
लाख दुश्मन चाहे मेरा आस्मा होजायगा ।
मैं भी हू मरने का शायक मैं भी तो हू मक्तल जा,
क्या हुवा कातिल का गर खञ्जर रवा हो जायगा ।
आगे पीछे एक दिन चलना तो है दोनों को ही,
फैसला मेरा तेरा आकर वहा हो जायगा ।
ज़ुल्म का तेरे चलेगा कत्ल से मेरे पता,
सत्याग्रह का मेरे भी इम्तहा होजायगा ।

फितूर—राजकुमार ! महाराज की आज्ञा है कि आप को इस भूतिया महल के अन्दर बन्द किया जाय और जल तथा भोजन इत्यादि कुछ न दिया जाय ।

प्रहलाद—जो मेरे ईश्वरकी इच्छा है वही होगा, यदि मेरे अन्यायी पिता का यही विचार है कि मुझे कष्ट देकर उस का

मकसद पूरा होगा, तो यह सख्त दुश्वार है। जल और भोजन न देकर के क्या वह मेरे प्राण हरण करना चाहता है, परन्तु उसे खबर नहीं कि गर्भ की उस तंग व तारीक कोठरी में जो परमात्मा मुझे जल पहुँचाता था, जो भगवान वहां भी मुझे सूक्ष्म तत्व का निचोट पान कराता था, उस की बाहें बड़ी लम्बी हैं ——

जिसे विश्वास है उस पर सजा से क्या डरेगा वह,
मुझे चिन्ता है क्या अपनी मेरी चिन्ता करेगा वह।
मुझे मारेगा वह मेरे पिता का ख्याल फर्जी है,
जिलाये या मुझे मारे मेरे ईश्वर की मर्जी है।

मुहाफिज—परन्तु मैं कई वर्षों से इस भूतिया महलका मुहाफिज हूँ, और यह मेरे नजरों में आया है कि इस महल के अन्दरूनी भाग में जाकर कोई कैदी कभी जीवित नहीं रहा। मुझे तुम्हारी इस बाल अवस्था पर दया आती है, इस लिये मेरी प्रार्थना पर ध्यान दीजिये, और अपनी जिन्दगी को बचा लीजिये।

प्रहलाद—परन्तु जिन्दगी किस लिये बचाऊं? क्या अपने स्वामी से बगावत करने के लिये? नहीं २, जब तक श्वास के साथ राम नाम का उच्चारण होता है, तब तक ही यह श्वास मुफीद है, राम नाम के बगैर एक आधे श्वास की इच्छा करना भी धर्म से बईद है—

जब श्वास रहा तो आस रही,
जब आस रही तो राम रहा,
जब राम गया देह चाम रही,
इस चाम का फिर क्या काम रहा।
जो धर्म से हीन हुवा जीवन,

वह जीवन क्या है क्लेश-हुआ,
है धन्य वही जीवन जग में,
जिस का सत् धर्म उद्देश्य हुआ।

मुहाफिज—राजकुमार! यह सत्य है आपका दिल तो दयासे भर-पूर है, हिन्सा तो आप के धर्म से दूर है, फिर मेरा दिल दुखा कर आप मेरी प्रार्थना क्यों ना मंजूर करते हैं?

प्रह्लाद—तो आप भी दया के अवतार मनुष्य हैं, फिर मुझे अमृत सागर को त्याग कर जहर खानेपर क्यों मजबूर करते हैं? यदि आपका दिल सत्य, धर्म, दया और क्षमा से जरा भी आशना है, तो अपने आत्मा पर इतना उपकार करें कि नास्तिक को हस्तीसे इन्कार करें और उस सच्चे परमात्मा को स्वीकार करें। मेरा नास्तिक पिता आपके किसी काम नहीं आयेगा, अन्तकाल में वह तुम्हें नहीं बचायेगा, बल्कि वही सर्व शक्तिमान परमात्मा तुम्हे जन्म मरण के बन्धनसे छुडायेगा, जिस ने तमाम बल वालोंके बल पर खाक डाल कर आग की दहकती चिता से मुझ बचा लिया था—

लोभ माया का तजो और नास्तिक पन छोड दो,
ले के तागा ज्ञान का ईश्वर से नाता जोड दो।

मुहाफिज—राजकुमार! मैं ने आपका सुन्दर उपदेश ग्रहण किया, बस आज से राजा हिरण्यकश्यप की जय बुलाना छोड दिया, आज से धर्म मेरा धन होगा और ईश्वर मेरा पूजन होगा। लो (चाबियां फेंकता है) आज से मेरा इस नौकरी को प्रणाम है——

आत्मा के वास्ते बन्धन यह सब सन्ताप है,
पाप के आधीन रहना भी भयानक पाप है।

प्रहलाद—नहीं मित्र ! अपने कर्तव्य को पूरा न करना भी पाप है, धर्म कहता है कि तुम कर्म करो, ईश्वर से डर कर सब काम करो, जो काम हाकिम की तरफ से तुम्हारे सिपुर्द हुआ है, उस को हाकिम के लिये नहीं बल्कि धर्म के लिये सर अंजाम करो।

मुहाफिज—खैर, अभी ता आपके प्रसन्न करने के लिये ऐसा करता हू, परन्तु अन्यायी शासन का हाथ बटाने के लिये मैं धर्म को थोड़ धन के लिये नहीं बेचूगा ——

(दोहा)

धन, धाम, धरती सभी, है पापों का मूल,
कटक रूपी जगत में, एक रहा है फूल।

(जाता है)

प्रहलाद—(स्वगत) हे ईश्वर ! देखो २ अन्यायी और अभिमानी पुरुष धरती, धन और धाम को प्राप्त करने के लिये तुम्हारे भक्तों को किस तरह कष्ट की वेदी पर चढ़ा रहे हैं, अपने जलील इरादों में सफलता प्राप्त करनेके लिये किस बेदर्दी के साथ धर्मात्माओं पर अत्याचार का कुल्हाड़ा चला रहे हैं। वह यह समझते हैं कि तेरा दर्बार भी उन की नाम निहाद् अदालतके समान अन्यायशाला है, नहीं ऐसा नहीं बल्कि तेरी दया ने ही उन को अभिमानी और बागी बना डाला है —

फैसला तेरा सदा बेलाग है और साफ है,
कुछ नहीं परवा अगर देरी है पर इन्साफ है।

(रूपमाला का प्रवेश।)

रूपमाला—(स्वयम्) यही है, वह मेरी उमेदों का चाद, मेरी कामनाओं का फूल ——

प्रहलाद्—बल्कि इस से धर्म का भला और पाप की हानि होगी—

धर्म को मंहगा बना देगी यह अरजानी मेरी,
मुश्किलें आसान कर देगी तन आसानी मेरी।
लाभ पहुचायेगी इस संसार को हानी मेरी,
सारे भारत का भला कर देगी कुर्बानी मेरी।

खुदीराम—लेकिन तुम्हारे सत्यकी दृढता ने अभी तक तो कुछ न कर दिखाया ?

प्रहलाद्—क्यो नही कई सोतों को जगाया, शम्भुवान जैसे मंत्री को आस्तिक बनाया, आधो से अधिक प्रजाको कुमार्ग से हटा कर सीधे रास्ते पर लगाया —

इन्तिदा है इन्तिहा इस की अया होने तो दो,
कुछ महा पुरुषों की तुम कुर्बानियां होने तो दो।
मेरे जैसे और भी दो चार गर मर जायेंगे,
सारे भारत के दुखी इस सिन्धु को तर जायेंगे।

खुदीराम—(सपेरों से) यह मूर्ख बालक अपनी हठ को नहीं छोडेगा, चलो तुम अपना काम करो।

प्रहलाद्—हां मैं अपने राम का नाम लेकर सत्य की समाधि लगाता हूं, तुम अपना काम करो

खुदीराम —

वह छोडो नाग जिनको देखकर ही हो मरन इसका,
हो जिनकी फूकसे पलभर में ही ठंडा बदन इसका।

(सपेरो का बीन बजाना, पिटारो को खोल देना, प्रहलाद् का समाधिस्थ होना, दोनों ओरसे सांपो का दुम के बल खड़े होकर प्रहलाद के सिरपर अपना साया डालना ।)



(पृष्ठ ८६)

"यह मूर्ख बालक अपनी हठ को नहीं छोड़ेगा, चलो तुम अपना काम करो।"

पहला सपेरा—अरे चमत्कार ! चमत्कार !! (भागता है)
दूसरा—अरे मेरे बाबा ! मेरे करतार !! (भागता है)
खुद्दीराम—(चरणों पर गिर कर) नमस्कार ! नमस्कार !!
प्रहलाद—

जिस को राखे साइयां, मार सके नहीं कोय,
बाल न बाँका कर सके, जो जग वैरी होय।
श्रद्धालू का इस तरह, काटत राम क्लेश,
छाया के हित बन गये, छत्र शेष का शेष।

(तेबले पर परदे का गिरना)

दूसरा अंक पांचवां दृश्य

अगला महल

(हिरण्यकश्यपका दूत सहित दाखिल होना।)

हिरण्य०—यह भूतों के पंजे से बच निकला, परन्तु कौडियाले सापों के काबू से बच निकलना उतना ही मुश्किल है, जितना कि एक मछली का मगर के मुह में पड़ कर बच जाना। मेरा दिल कहता है कि नाग छोड दिये गये, जहरीले नागों ने अपनी फुकार से ही उस कुल कलङ्क बालक का अन्त कर दिया। पवन इस खुश खबरी की उडती हुई भनक उड़ा कर मेरे कानों में गूंज रहा है, बस एक इस घरेलू दुश्मन की मौत सब को मेरा दोस्त बना देगी, अब सारी दुनिया मेरे ऐश्वर्य को मान कर बिना सकोच मेरे आगे सर झुका देगी। बस संसार तो क्या तीनों लोकों पाताल और रसातल में भी मेरा कोई मुखा

लिफ नहीं रहेगा, अरमै विष्णु के स्वर्ग और नरक का जवाब इस धरती पर बनाऊँगा, अपने दोस्तोंको उस स्वर्ग में और दुश्मनोंको नरकमें भिजवाऊँगा —

दुश्मन न कोई अब मेरा दुनिया में रहेगा,
यह काल का चक्कर मेरी सत्ता में रहेगा।
यह विश्व मेरे बल के सहारे से चलेगा,
दुनिया का हर एक काम ईशारे से चलेगा।

चोवदार—(आकर) महाराज अनर्थ हुआ, सांपों ने भी प्रहलाद को नहीं काटा।

हिरण्य०—तू झूठ बकता है।

खुदीराम—(आकर) नहीं यह सत्य कहता है, वह निर्दोष बालक बे कसूर है और तुम्हारे दिमाग में फितूर है, वह चमत्कारी है, और तुम्हारा मन खुदी की गिलाजत से भर पूर है। वह दुनिया को सीधा रास्ता दिखा रहा है, और तुम्हारा जुल्म संसार को विनाश के भँवर में फँसा रहा है। तुम्हारा दावा झूठा है, तुम्हारा कानून अन्यायी है, तुम्हारा मन गुमराह है

हिरण्यकश्यप—(खुदसे) क्या यह भी मुखालिफ होगया नमक की खान में जो गया वही नमक होगया?

खुदीराम—तुम ने बे शुमार उपद्रव फैलानेका खौफ नाक अपराध किया है, तुमने सुवर्ण मयी भारत भूमि को मिट्टी में मिला दिया है —

घात से भारत के लाखों रत्न तुम ने खो दिये,
पाप के कांटे हर एक मार्ग में तुम ने बो दिये।
पस्त और बालामें फैलाया है अन्याचार को,
नास्तिक तुम ने बना डाला है इस संसार को।

हिरण्य०—खुदीराम ! मैं तो तुम्हें राज द्रोही पुरुषों को गिरफ्तार करने के इनाम में राज कुल भूषण की उपाधि देने वाला था।

खुदीराम—लेकिन अब मेरा मन तुम्हारी उपाधि के सब्ज बागपर नहीं लुभा सक्ता, मैं जुल्म और बे इन्साफी के बदले में अपने नाम के साथ अब इस उपाधि की दुम नहीं लगा सकता, जिन उपाधियों और इनामों का विस्तृत जाल फैला कर तुम उत्तम दिमागों को लोभ में फँसा रहे हो, जिन ओहदों के लालच से तुम धर्मात्माओं पर जुल्म कमा रहे हो, उन में से किसी एक में भी सच्चा सुख और आराम नहीं, इन तमाम में से किसी एक का भी अच्छा अंजाम नहीं। याद रक्खो अब आप के यह इनाम हमें सत्य मार्ग से नहीं गिरा सकेंगे, यह पद हमें उल्टा मार्ग नहीं दिखा सकेंगे।

हिरण्य०—क्यों और किस लिये?

खुदीराम—क्योंकि उस सत्याग्रही बालक की दृढता ने तुम्हारी फरेब भरी चालों पर से पर्दा उठा दिया है, तुम्हारे स्वार्थ और तुम्हारी खुद गर्जों की पोल खोल दी है —

चालें हैं तुम फरेबकी दुनिया में चल रहे,
यह राज पाके गर्ज में नाटक उछल रहे।
पर्दा सदा फरेब पे रहता नहीं कभी,
दरिया भी एक रङ्ग में बहता नहीं कभी।

हिरण्यकश्यप—देखो, इस जादूगर बालक के फन्दे में फंस कर तुम विचार हीन हो रहे हो, मैं तुम्हें इस वर्तमान अवस्था से भी अधिक मालदार बना सकता हूं।

खुदीराम—परन्तु मैं अधर्म की मालदारी को पैरों से ठुकराता

हू, ईश्वर को त्यागने से मिली हुई तीनो लोकों की सम्पदा को भी नफरत से ठोकर लगाता हू —

न अब आशा रखो मैं राजके लालचमें आजाऊं,
अगर यह ताज देदो तो न मैं पैरों से ठुकराऊं।
है आजादी मुझे फाकोंकी बेहतर इस असीरी से,
फकीरी राम के दर की है अच्छी इस अमीरी से।

हिरण्यकश्यप—तो क्या शम्भूवान की तरह तुम भी बन्दी ग्रह की हवा खाना चाहते हो?

खुदीराम—बन्दीग्रह तो भक्तों का पवित्र आश्रम है —

रमानी है हमें धूनी वहीं जाकर रमा लेंगे,
हुआ क्या कैद मेंही राम की माला फिरा लेंगे।
अगर इस कैद से भारत मही आजाद हो जाये,
तो वह कायर है जो इस कैद होजानेसे घबराये।

हिरण्यकश्यप—परन्तु तुम इतने शीघ्र राम के तरफदार क्यों बन गये?

खुदी०—उसकी विचित्र लीलाओंने मुझे अपना कायल बनालिया।

हिरण्यकश्यप—यही लीला कि उस जादूगर बच्चे को सांपों से बचा दिया?

खुदीराम—हा बचा दिया और आन्यदा भी हर एक मौके पर बचायेगा —

इधर सामान तुम कर लो जो चाहो आजमाने का,
उधर सामान करता है वह बालकको बचानेका।
इधर तदबीर तुम करते हो बालकको मिटाने की,
वह पहले फिक्र करता है असर उसका घटानेकी।

हिरण्य०—इस मिथ्या विचार में न रहना, कि मेरी असीम

यह आग से बच गया, भूतिया महल से जिन्दा निकल आया, साँपों से उसे कुछ जरर न आया, परवाह नहीं, निराश होने की बात नहीं, अब मैं उस को पहाड की सब से ऊंची चोटी पर से नीचे गिराऊंगा, और सब के दिलों पर अपने ऐश्वर्य की धाक बिठाऊंगा—

मैं श्रद्धा रामकी हर एक दिल से दूर करदूंगा,
गिरा कर शिखर से उसके बदनको चूर करदूंगा।

बुद्धीराम—तुम उस का बाल भी बांका नहीं कर सकते—

मददपर राम है उसकी तुम उसका क्या बिगाडोगे,
कहाँ तक और कब तक घासकी खेती उजाडोगे।
समझ बैठे हो तुम दिलमें रुह बालकका काटेगा,
उचट कर यह कुल्हाडा खुद तुम्हारा पैर काटेगा।

हिरण्य०—मालूम होता है कि तुम भी जाने से बेजार होरहे हो, जीवन से हाथ धोकर मरने को तय्यार हो रहे हो?

बुद्धीराम—वक्त से पहले मुझे मारने की तुम तो क्या कोई शक्ति भी समर्थ नहीं —

है क्या शक्ती किसी इन्सानको इन्सान मारेगा,
मरूंगा तब मैं जब मुझको मेरा भगवान मारेगा।

हिरण्य०—भगवान कैसा, भगवान कौन, मैं खुद तुम्हें अब, अभी और इसी वक्त मार सकता हूं—

है क्या इन्सानकी शक्ति जो इक पर्वतसे टकराये,
अगर हो देवता कोई तो वह भी मुझसे चकराये।
मेरे गुस्सेकी अग्निसे हो ईंधन और बच जाये,
बुला भगवान को तेरी मदद के वास्ते आये!

(मारने के लिए हिरण्यकश्यप तलवार उठाता है, तलवार दो टुकडे होकर गिर पडती है।)

विरुद्ध जो अन्धेर शाही चलाता है, वह नारकी और गद्दार है, वास्तव में राजा वह है, जो गौ की तरह प्रजा रूपी बछड़ेको चाटकर उसका दु ख रूपी मल दूरकर देता है, जो अपने राज को स्वर्ग लोक को खुशियोंसे भरपूर कर देता है —

> मगर राजा सदा जिससे प्रजा बेजार रहती है,
> सदा निर्दोष पर जिस की तनी तलवार रहती है।
> वह राजा धर्म से हीना है अपने ही गुजारे का,
> और उसका राजभी है पेड़ दरियाके किनारे का।

फौजदार—खैर हमें इस वहस मुबाहसे से कुछ मतलब नहीं।

सरस्वती—तो क्या तुम हमारा सब कुछ ले जाओगे?

फौजदार—हाँ, बदन के तीन तीन कपड़ों के अलावा सब कुछ।

सरस्वती—अरे जरा विचार करो, जिन राक्षसी नियमों से धर्म के देवता मनुष्य का अपमान होता है, जिन आज्ञाओं से दुखी और निर्दोष प्रजाके जान माल का नुकसान होता है, क्या उन नियमों और आज्ञाओं को मानना वाजिब है? नहीं, जिस इन्सानके दिलमें जरा भी दया है, जिसकी आखमें जरा भी शर्म है, उसका कर्तव्य यह है कि लोक कल्याण को ऐसे नियमों और आज्ञाओंके सुधार के लिये हर एक किस्म की कुर्बानी करने को तत्पर रहे।

फौजदार—यह बागियों का काम है।

सरस्वती—मालूम होता है कि दुराचारी और हत्या कारी की संगतमें तुम्हारे नजदीक भलाई की हिमायत भी हराम है—

> करो इन्साफ कुछ दिलमें जरा आफतके मारों का,
> जियादा दिल न तुमघायलकरो हम दिल फिगारोंका।

हमारी वे बसी को देख तुम भूलो न उस दिन को,
ठिकाना कुछ तो रहने दो जगत में वे सहारों का ।

रूपमाला—माता ! तुम ईश्वर को, छोड़कर किसी और के आगे क्यों गिड़ गिड़ाती हो, जो आदमी खुद उस परम पिताके द्वारे का भिकारी है, उसके सामने क्यों हाथ फैलाती हो ? राजा हिरण्यकश्यप हमारा घर बार लेलेगा, हमारा जर ज़ेवर और गृहस्थ अधिकार लेलेगा,—

लूटेगा वह वेरहम यह दौलत तो हमारी,
वह छीन न लेजायगा किस्मत तो हमारी ।
सब कुछ वह मिटा देगा जो गृह कोषका धन है,
माथे की लकीरों का मिटाना तो कठिन है ।

फौजदार—(सिपाही से) जमादार ! सब से प्रथम इन दोनों औरतों के शरीर से तमाम ज़ेवर उतारलो क्यों कि जुर्माने का ज्यादा हिस्सा इन्हीं से पूरा हो सकेगा ।

सिपाही—(स्त्रियों से) इससे प्रथम कि हम अपने प्रबल बाहुके झटके से, यह ज़ेवर तुम्हारे शरीर से जुदा करदें, तुम खुद अपने हाथ से उतार कर हवाले करदो, सब कुछ हमारे सामने धर दो ।

रूपमाला—नहीं तो ?

फौजदार—नहीं तो—

कहीं अपमान होजाये न सत्पन की सदाकतका,
कहीं करना न पड़ जाये हमें प्रयोग ताकतका ।

रूपमाला—परन्तु यह ज़ेवर तो हमारा स्त्री धन है, इस पर राजा तो क्या 'शास्त्रानुसार किसी का भी अधिकार नहीं, नियमके अनुसार भी स्त्री धन का सिवाय स्त्री के दूसरा

कोई भी दावेदार नहीं। यदि तुम को शाही आज्ञा पालन करने का इस कदर ख्याल है, तो यहाँ भी कानून रूपी शाही हुक्म के सत्कार और तिरस्कार का सवाल है —

चनाए हैं जो खुद कानून खुद उनपर नहीं चलते,
चलाते हो मगर उल्टे कभी खन्जर नहीं चलते।
हमेशा के लिये तो कज कुलाही यह नहीं रहती,
ज्यादा देर तक अन्धेर शाही यह नहीं रहती।

सरस्वती—अरे मूर्खो! क्यों अत्याचार पर कमर बाँध रहे हो, गरीबों पर क्यों सितम ढा रहे हो? क्या किसी काल में, किसी देश में, किसी शासन में, किसी कानून में, खाने पीने का सामान और स्त्री धन भी कुर्क होता है? ईश्वर से नही डरते तो उस अंजाम से डरो, जो प्रतिदिन हरएक मनुष्य का होते हुए देखते हो, क्या हररोज हजारों आदमियों को मरघट में जलते हुये देख कर भी तुम्हें अपने मरने का ख्याल नही आता, क्या मगरूर और छत्रधारी राजाओं को हसरत नाक मौत का ख्याल तुम्हें इस गलत रास्ते से नहीं डिगाता, क्या तुम इन आँखों से विश्व के इस शिक्षाप्रद परिवर्तन का चलायमान दृश्य नहीं देख रहे? —

खबर आली निशा लेते थे कल जो आस्मानों की,
नही मिट्टी भी मिलती आज उनही के निशानोंकी।
खबरहै क्या तुम्हें गिरतीहै जब इस कालकी बिजली,
खबर मिलती नहीं है कुछ भी ऊंचे आशियानोंकी।

फौजदार—क्या करें, हुक्म के बाँधे हुए खिदमतगार हैं, अगर तुम इस दृष्टि गोचर मुसीबत से छुटकारा पाना चाहती

हो, तो अभी शाही रहम की आशा शेष है, शम्भूवान कैद से रिहा हो सकता है, माल और धन बच सकता है, यही अगला सुख प्राप्त हो सकता है।

माला—किस तरह?

जदार—महाराज की तावेदारी से।

माला—यानी ईश्वर की ना फरमावरदारी से?

जदार—जो कुछ समझ सकते हो?

पमाला—खैर, इस की आशा बाँधना भी तुम्हारी भूल है, हम लोगों से ईश्वर, देश और जाति की गद्दारी की उम्मीद रखना फिजूल है। पिताजी कैद में पड़े २ सड़ जायें, बदन के बन्द का तार २ जुदा हो जाये, खाने को अन्न और पीने को जल भी नसीब न हो, यह सब कुछ सहन कर लेंगे, मगर सत्य धर्मसे न फिरेंगे, सत्याग्रह से न टलेंगे, कुमार्ग पर हरगिज न चलेंगे, अमृत का स्वाद चखकर अब जहर की तरफ आप नहीं उठायेंगे, भगवान को छोड़ कर इन्सान के आगे सर नहीं झुकायेंगे —

आँधी से अब यह खाक उडाई नहीं जाती,
यह ऐसी धरी है कि उठाई नहीं जाती।
हीरे की कनी जान के खाई नहीं जाती,
वह आग लगी है कि बुझाई नहीं जाती।

फौजदार—तो फिर हम सरकारी आज्ञा पालन करते हैं।

रूपमाला—हां तुम सरकारी आज्ञा पालन करो, और हम तुम्हारे विनाश के लिये उस सच्चे दर्बार में प्रार्थना करती हैं, जहां से समस्त-ईश्वरीय शक्तियोंको तुम्हारी बरबादी की आज्ञा मिलने वाली है, तुम यह न समझो कि तुमने इन्साफ की बुनियाद ही मिटा डाली है, बल्कि ईश्वर का

इन्साफ शीघ्र ही तुम्हारी इस अन्धेर शाही का खाका उड़ाने वाला है, शायद तुम को यह खबर नहीं कि जिन्हें तुम मिटा रहे हो भगवान उन का रखवाला है —

देर है इसवास्ते समझे हो तुम अन्धेर है,
तुम यह समझे हो तो बुद्धिका तुम्हारी फेर है।
देर है जबतक कला भगवान की जगती नहीं,
नाश पर वह आगया तो देर कुछ लगती नहीं।

फौजदार—हम लोगों को तो है वेतन से काम, जिस का हुक्म चलता होगा हम भी उसी के गुलाम।

सिपाही—मतलब की बात तो यह है।

फौजदार—चलो उठाओ और चौक बाज़ार में सब माल नीलाम करो।

(सिपाहियों का माल व असबाब इकट्ठा करना, रूपमाला और सरस्वती अपने जेवर उतार कर फौजदार को देती जाती है और गाती हैं।)

गाना

जी भरके अरे जालिमो दुखियों को सतालो,
बल सत्का घटाने के लिये जोर लगालो।
सतधर्म की खातिर हमें मरने का नहीं गम,
हम सरको झुका देते हैं तुम तेग चलालो।
संसार को हम अपनी गरीबी यह दिखायें,
तुम हम को सताने में कमाल अपना दिखालो।
सीना है जिगर दिल है कलेजा है यह जाँ है,
जी चाहे निशाने पे किसी तीर चलालो।
इक दिन तो दयावान हमारी भी सुनेगा,

जबतक नहीं सुनता है वह तुम जुल्म कमालो।
कुछ दिन के लिये पाप तुम्हारा है सहाई,
दुखियों को मिटालो कि गरीबों को जलालो।
लगती नहीं कुछ देर वह जब क्रोधपर आया,
वह चाहता है तुम भी कमाल अपना दिखालो।

दूसरा अंक सातवाँ दृश्य

दिखाव-पर्वत

(दो सिपाही प्रहलाद को पा व ज़ंजीर लाते हैं,
प्रहलाद का गाते हुये प्रवेश।)

—— ❀ ——

गाना

डराते क्या हो कहकह कर ये खञ्जर हैं ये भाले हैं,
ये खञ्जर और ये भाले हमारे देखे भाले हैं।
मसलता है अरे मूरख तू क्यों हाथों से पत्थर को,
उठे जो धर्म के बल से कहा वह दबने वाले हैं।
मेरे सत् धर्म की शक्ति से गुल बन जायेंगे सारे,
बहुत कांटे मेरे रस्ते में ज़ालिम तू ने डाले हैं।
उलट अपना नमकदां क्यों हंसी करताहै अय कातिल
दहाने ज़ख्मे दिल क्या चुटकियों से भरने वाले हैं।
हवा में तू न उड़ इतना निशानी है अजल की यह,
है आई मौत कीड़ी की जब उस ने पर निकाले हैं।
डराते क्या हो——

(हिरण्यकश्यप और मतीराम नये वजीर का दाखिल होना।)

हिरण्यकश्यप—प्रहलाद देख, उधर देख, आख उठा कर देख, गौर से देख।

प्रहलाद—हाँ गौर से देख रहा हू —

फल के अन्दर बीज मे और फूलकी खुश्बू में है,
खाक के जर्रे मे और शबनम के हर आँसू मे है।

हिरण्यकश्यप—इस पहाड का सब से ज्यादा ऊंची चाटी की तरफ देख और अपने कोमल शरीरको हस्ती का अन्दाजा लगा —

यह जीवन रत्न तेरा आज मिट्टी में मिलाना है,
इसी चोटी से नीचे तुझ का धरती पर गिराना है।

प्रहलाद—तुम्हें जो कुछ करना है, कर गुजरो, हर एक सितम ईजाद करो, जिस तरह जी चाहे मेरे शरीर को बर्बाद करो, मेरा अमर आत्मा इस पहाड की चोटी को देख कर खौफ नहीं खा सकता —

तुम्हारी तो निगाहो में बडी ऊंची यह चोटी है,
मगर मेरी नजर मे यह, मेरे कद से भी छोटी है।
उसे गोतों का डर होगा, जिसे तरना नही आता,
उसी को डर है गिरने का जिसे मरना नहीं आता।

हिरण्य०—प्रहलाद! तू उस मतवाले आदमीकी तरह बातें करता है, जो नशे के जोश में गढ के अन्दर कूद पडताहै, लेकिन चोट लग जाने से उस का नशा काफूर हो जाता है, और तब ही उस का होश आता हैं ——

फाँद सागर को रसाई ना रसाई देख कर,
क्यों बढाता है कदम रस्ते में खाई देख कर।

प्रहलाद—जिस रस्ते में तुम को खाई नजर आती है, वह रास्ता ही दर असल सीधा और साफ है, तुम्हारे हुक्मकी अदूली का हर एक कसूर ईश्वर की अदालत में मुआफ है—

तुम सितम परवर अगर हो बन्दा परवर राम है,
निर्दयी हो तुम अगर उस का दयालु नाम है।
धर्म के नाशक हो तुम वह धर्म पालन हार है,
तुम मेरे दुश्मन हो लेकिन वह सहायकार है।

हिरण्य०—तो मैं देखता हूं कि इस कदर ऊंचे पर्वत से गिर कर तू कैसे जिन्दा रहने पायेगा, वह तेरा सहाई तुझे कैसे बचायेगा ?

प्रहलाद—उसी तरह, उसी तरीके से, उसी सफाई के साथ, उसी गुप्त शक्ति के द्वारा——

जिस तरह पहिले बचाया मुझ को दहकती आग से,
जिस तरह रक्षा मेरी की कौडियाले नाग से।
अब तलक जिसने बचाया जुल्म की तलवार से,
अब भी वह मुझ को बचायेगा सितम के वार से।

हिरण्य०—इस भरोसे पर न रहना, अब न वह राम है, और न वह उस का नाम है, मैं ने अपनी अपार शक्ति से उस को इस कदर कमजोर बना दियाहै, कि अब वह मेरे किसी भी दुश्मन का हाथ नहीं बटा सकता, अपने किसी भक्त को मेरे पंजे से नहीं छुड़ा सकता——

नामो निशान मैं ने उस का मिटा दिया है,
जो राह रोकता था पत्थर हटा दिया है।
बे दस्तो पा यहा तक उस को बना दिया है,
मारे शर्म के उस ने खुद को छिपा दिया है।

प्रहलाद—तुम उस की हस्तीको क्या मिटा सकते हो, यदि

(हिरण्यकश्यप और मतीराम नये वजीर का दाखिल होना ।)

हिरण्यकश्यप—प्रहलाद देख, उधर देख, आख उठा कर देख, गौर से देख ।

प्रहलाद—हाँ गौर से देख रहा हूँ —

फल के अन्दर बीज मे और फूलकी खुश्बू में है,
खाक के जर्रे मे और शबनम के हर आँसू मे है।

हिरण्यकश्यप—इस पहाड का सब से ज्यादा ऊची चोटी का तरफ देख और अपने कोमल शरीरको हस्ती का अन्दाजा लगा.—

यह जीवन रत्न तेरा आज मिट्टी में मिलाना है,
इसी चोटी से नीचे तुझ को धरती पर गिराना है।

प्रहलाद—तुम्हें जो कुछ करना है, कर गुजरो, हर एक सितम ईजाद करो, जिस तरह जी चाहे मेरे शरीर की बर्बाद करो, मेरा अमर आत्मा इस पहाड का चोटी को देख कर खौफ नहीं खा सकता —

तुम्हारी तो निगाहों में बडी ऊची यह चोटी है,
मगर मेरी नजर में यह, मेरे कद से भी छोटी है।
उस गोतों का डर होगा, जिसे तरना नहीं आता,
उसी को डर है गिरने का जिसे मरना नहीं आता।

हिरण्य०—प्रहलाद! तू उस मतवाले आदमीकी तरह बातें करता है, जो नशे के जोश में गढ के अन्दर कूद पडताहै, लेकिन चोट लग जाने से उस का नशा काफूर हो जाता है, और तब ही उस को होश आता है ——

फाँद सागर को रसाई ना रसाई देख कर,
क्यों बढाता है कदम रस्ते में खाई देख कर।

प्रहलाद—जिस रस्ते में तुम को खाई नजर आती है, वह रास्ता ही दर असल सीधा और साफ है, तुम्हारे हुक्मकी अदूली का हर एक कसूर ईश्वर की अदालत में मुआफ है —

तुम सितम परवर अगर हो बन्दा परवर राम है,
निर्दयी हो तुम अगर उस का दयालू नाम है।
धर्म के नाशक हो तुम वह धर्म पालन हार है,
तुम मेरे दुश्मन हो लेकिन वह सहायकार है।

हिरण्य०—तो मैं देखता हूं कि इस कदर ऊंचे पर्वत से गिर कर तू कैसे जिन्दा रहने पायेगा, वह तेरा सहाई तुझे कैसे बचायेगा ?

प्रहलाद—उसी तरह, उसी तरीके से, उसी सफाई के साथ, उसी गुप्त शक्ति के द्वारा ——

जिस तरह पहिले बचाया मुझ को दहकती आग से,
जिस तरह रक्षा मेरी की कौडियाले नाग से।
अब तलक जिसने बचाया जुल्म की तलवार से,
अब भी वह मुझ को बचायेगा सितम के वार से।

हिरण्य०—इस भरोसे पर न रहना, अब न वह राम है, और न वह उस का नाम है, मैं ने अपनी अपार शक्ति से उस को इस कदर कमजोर बना दियाहै, कि अब वह मेरे किसी भी दुश्मन का हाथ नहीं बटा सकता, अपने किसी भक्त को मेरे पंजे से नहीं छुडा सकता ——

नामो निशान मैं ने उस का मिटा दिया है,
जो राह रोकता था पत्थर हटा दिया है।
बे दस्तो पा यहां तक उस को बना दिया है,
मारे शर्म के उस ने खुद को छिपा दिया है।

प्रहलाद—तुम उस की हस्तीको क्या मिटा सकते हो, यदि

जैसे हजारो हिरण्यकश्यप उस को मिटाने पर तय्यार हो जायें और समस्त देवता, दैत्य, तुम्हारे मददगार होजायें, तो भी तुम उसकी हस्ती को मिटाना तो दरकिनार, उस का बनाया हुआ एक परमाणु भी इस ससारसे नष्ट नहीं कर सकते,- तुम्हारी गन्दी जबान के गलीज फिकरे उसके पवित्र नाम को भ्रष्ट नही कर सकते——

तुम अपने नष्ट होने का पिता पहले करो चिन्ता,
मैं उसके चरण के दासों मेंभी तुमको नहीं गिनता।
बुरा करते हो उस की जात से इन्कार करते हो
तुम उस से दुश्मनी करके जन्म बेकार करते हो।

हिरण्य०—देखा इस रास्ते में दुख और क्लेश हैं इसे त्याग दो।

प्रहलाद—यह सत्याग्रह का रास्ता हो तो इस आत्मा को ऊंची पदवी तक पहुंचायेगा, यही स्वाधीनता देवी के दर्शन करायेगा, मोक्ष प्राप्ती का यही उपाय बतलायेगा।

हिरण्य०—सत्याग्रह पाखण्ड के सिवा कुछ भी नहीं।

प्रहलाद—पाखण्ड नहीं वरन् एक अति फलदायक तपस्याहै, जिस से आत्मा को लिपटे हुये सर्व विकार जल कर भस्म हो जाते हैं, परतंत्रताकी बेडिया कट जाती हैं, जन्म अधिकार प्राप्त होता है —

तपस्या यह कठिन है पर सर्व उद्धार करती है,
यह नाव है जो दुख सागरसे हम को पार करतीहै।

हिरण्य० —यह सत्याग्रह का नतीजा है कि बेटा बाप का दुश्मन बन रहा है।

प्रहलाद—हा सत्याग्रही हमेशा ही झूठ का दुश्मन है, यह सत्या ग्रह का नतीजा है, कि आप के फैलाये हुये बैर, और विरोध की जगह प्रेम और ईश्वरीय श्रद्धा का प्रचार हो रहा

है, बद चलन नेक, पापी धर्मात्मा, अज्ञानी ज्ञानी, नास्तिक आस्तिक, और झूठा सचाई का तलबगार होरहा है।

हिरण्य०—लेकिन आखिर कब तक?

प्रहलाद—जब तक कि इस दुखी भारत में धर्म की ध्वजा नहीं लहराती, जब तक कि नास्तिक पने की बीमारी इस ऋषि भूमि से नहीं जाती, जब तक अहिन्सा सब को अपना श्रद्धालू नहीं बनाती, जब तक दुराचार और व्यभिचार की जगह ईश्वर भक्ति अपना सिक्का नहीं बिठलाती—

दोहे

सत्याग्रह से होत है, सत्य धर्म प्रचार,
सत्याग्रह से शीघ्र ही, होगा देश उद्धार।
होगा सत्याग्रह से, वैर विरोध का नाश,
अन्धकार में पाप के, होगा ब्रह्म प्रकाश।

हिरण्य०—यदि तू मुझे ब्रह्म से बड़ा मानने को तय्यार नहीं, तो मरने के लिये तय्यार होजा।

प्रहलाद—मरने के लिये हर वक्त और हर हालत में तय्यार हूं—
यह मरना नहीं एक उत्तम गती है
मरू सत्य पर तो यह खुश किस्मती है।
अगर राम के नाम पर जा निकले,
पुराना मेरे दिल का अर्मान निकले।

हिरण्य०—यदि तुम ने पुत्र हो कर पिता से दुश्मनी की है, तो मै पिता हो कर तुम्हारे साथ वह सलूक करूंगा, जिस से आयन्दा कोई सन्तान ऐसी नालायक साबित नहीं होगी।

प्रहलाद—और मैं तुम्हारे हाथों हलाक हो कर यह साबित

करना चाहता हूं, कि यदि पिता भी पापी और अन्यायी हो तो वह भी त्यागने योग्य है, उस को त्याग करने के जुर्म में मृत्यु पाने वाला भी जीवन मुक्त है—

हैं कुल्टा नारि यदि त्यागो और निर्मोही माता तजदो,
है नीच चरित्र तो मित्र तजो और अन्यायी भ्राता तजदो।
जो पुत्र स्वधर्म से हीन हुवा वह पुत्र है कुलनष्टा तजदो,
जो परमपितासे विमुख हुआ ऐसा अज्ञान पिता तजदो।

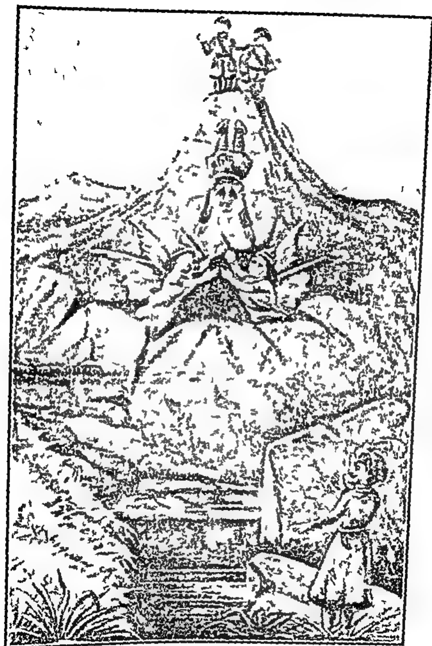
मतीराम—प्रहलाद ! इतने ऊँचे पहाड की चोटी से गिरने की हठ छोड दे। क्या वहा (इशारे से बता कर) से धरती पर गिर कर कोई अंग साबित रह जायेगा ?

प्रहलाद—मुझे इतनी ऊँचाई से गिरने का जरा भी भय नहीं, जिस धरती पर मुझे गिरना है, वह मेरे शरीर से कुछ न्यारी शय नहीं, धरती भी प्रकृति का स्वरूप है, और मेरा प्राकृत शरीर भी प्रकृति का रूप है,—

पंच तत्वसे यह काया है बनी,
पंच तत्व में मिल जानी होगी,
पंच तत्व मे गिर पंच तत्त्व मिले,
किस बात की फिर हानि होगी।
जिस वस्तु का तुम नाश करो,
वह आत्म अमर मरता ही नहीं,
वह डूब नहीं सकता जल में,
और अग्नि से वह जरता ही नहीं।

हिरण्य०—तो ले जाओ, इस को पहाड की सब से ज्यादा ऊंची चोटी से गिरादो—

मैं देखूं किस तरह इस का बदन यह चूर होता है,
दिखाऊं सब को कैसे नष्ट यह मगरूर होता है।



प्रहलाद का पर्वत-शिखर से गिराया जाना।
"तो ले आओ, इस की सब से ज्यादा ऊंची चोटी से

(दृश्य न दो जल्लाद प्रहलाद को पहाड़ की चोटी पर ले आते हैं)

जल्लाद—राजकुमार! अब अपने जीवन का अन्त समझो, काल अभी अपनी विकराल गदा की ठोकर से तुम्हारी नन्ही सी जान को पायमाल कर देगा, मरने के लिये तय्यार हो जाओ।

प्रहलाद—तो देर मत लगाओ, जल्दी करो मेरा शरीर सत्य की खातिर जन्मभूमि की पवित्र खाक से भेटनेके लिये तय्यार है, मेरा आत्मा धर्म विजय का सँदेश लेकर देवताओं को मुबारक बाद देने के लिये बेकरार है।

(जल्लाद धक्का देकर नीचे गिराते हैं, पहाड़ फट जाता है, अपसरायें रत्न जटित सिंहासन में प्रहलाद को बिठाये हुए आकाश मार्ग में दृष्टि गोचर होती हैं, टेबले पर

ड्राप

अंक तीसरा — प्रथम दृश्य

स्वर्गलोक

(देवताओं की सभा, अलौकिक सुन्दरताई के एक
सिंहासन पर विष्णु भगवान विराजमान हैं,
चारों कोनों में चारों वेद ब्राह्मण रूप से
हाथ में झण्डा लिये खड़े हैं, जिन
पर धर्म विजय लिखा हुआ है,
देवता भगवान की स्तुति
करते हैं ।)

गाना

जय जय लक्ष्मी पति जगदीश दया निधे।
वन्दौ बार बार — जय जय
पृथ्वीनाथ स्वर्ग आधीश।
निराकार साकार — जय जय
धेनु विप्र, सुर, मुनि, नर,
किन्नर के आधार, — जय जय
देव मुनि जन की रक्षा के कारण,
लो मनुज अवतार, — जय जय

आवाज—(अन्दर से) धर्म नष्ट होगया, सत्य की हानि हुई
भक्तों के दुख की सीमा न रही —

होता है सत्य धर्म का अपमान खबर लो,
भूमि है फसी कष्ट में भगवान खबर लो।

विष्णु—यह दर्द भरी किस की पुकार है, बृहस्पति जी यह कैसी हा हा कार है ?

द्वारपाल—(आकर) देवताओं के सिरताज श्री महाराज की जय हो ! भारत माता फरियाद लाई है, विदित होता है कि किसी भारी दुःख की सताई है।

विष्णु—लाओ शीघ्र बुलाओ ! (जाना द्वारपाल का) हाँ अब समय होचुका, भारत भूमि का सर्व संकट दूर होने वाला है —

मैं दुख में देख सकता हु कभी क्या अपने प्यारों को,
हमेशा आश्रय देता हु मैं आफत के मारों को।
लगाती चोट है दिल पर मेरे भी आह बेकल की,
मुझे बे तार की खबरें खबर देती हैं पल पल की।

(भारत माता का प्रवेश)

भारत माता—त्रिलोकी नाथ की जय ! हे भगवन्, हे भक्त दुख भंजन ! —

ऐसी गहरी नींद में रक्षक कभी सोते नहीं,
इस तरह भक्तों से भगवन् बे खबर होते नहीं।
धर्म की होगी प्रभू धरती पे हानि कब तलक,
जुल्म की तलवार की आखिर रवानी कब तलक ?

विष्णु—हे पूज्यनीय भारते ! तुम्हारे रोने और कुढने का कोई कारण नहीं, सहन शीलता से काम लो, तुम्हारे एक २ दुःख का एक २ घाव मेरे जिगर पर लगा है, तुम्हारी मुसीबत की छुरी से मेरा अन्तःकर्ण छिला है। क्या आगे कई बार अवतार धारण कर के मैंने तुम्हारा दुःख निवारण नहीं किया ? —

मैं केवल देखता हूँ पाप कब तक जोर करता है,

कहाँ तक दुष्ट आज्ञा से मेरी फिर कर उभरता है।
समय आने पे हाथों में सुदर्शन जब उठाऊंगा,
बढ़ा जो वृक्ष वर्षों में उसे पल में मिटाऊंगा।

वेद भगवान—भगवन्! धरनी पर अत्याचार होने से एक भारत भूमि ही दुखित नहीं, बल्कि इधर धर्म वालों पर अनर्थ हाता है, उधर अपमानित होकर धर्म रोता है। हमारी आज्ञाओं का भूमण्डल में जरा भी सन्मान नहीं होता, यही कारण है कि पतित आत्माओं का कुछ कल्याण नहीं होता। जो हिरण्यकश्यप प्रजा का रक्षक कहलाताहै, उस के हाथों से वेदिक धर्म नष्ट हुआ जाता है —

पृथ्वी पर हिरण्यकश्यप बड़ा,
विख्यात असुर अत्याचारी,
जिस के बाहु की शक्ती से,
थर्रानी है पृथ्वी सारी।
यम, अग्नि, पवन, जल, सूर्य्य, चन्द्र,
सब उस के बल से डरते हैं,
दिग्पाल, सुरेश, कुबेर, वरुण,
सब उस की सेवा करते हैं।

बृहस्पति—कृपा निधान! वेद भगवान का कहना सत्य है, हिरण्याक्ष के पश्चात् अब उसका भाई भूगोल पर नास्तिकता और दुराचार फैला कर आप की महिमा को घटा रहा है, अपने भुजा बल से भक्तों और ऋषि जनों को मिटा रहा है ——

वह विश्वको अपने वशमें कर भारत में तन कर
रहता है,
भक्तों से धर्म छुड़ाता है खुद ईश्वर बनकर रहताहै।

दुर्दशा हुई है भारत की सर्वत्र पाप ही रहता है,
जो यज्ञ होम के मंडप थे गौ रक्त वहां पर बहता है।

भारत माता—प्रभो! असुरों का अत्याचार बढ़ने से ऋषि मुनियों में दारुण हाहाकार हो रहा है, जगह २ धर्मात्माओं पर अनर्थ और अत्याचार होरहा है—

हर जगह धर्म स्थानों में गौ मांस पकाये जाते हैं,
ऋषियों, मुनियों और गौवोंके मस्तक ठुकराये जातेहैं।
हर जगह न्याय और धर्मग्रन्थ ईंधन के बदले जलतेहैं,
हर जगह देव प्रतिमाओं पर चमड़ेके कोड़े चलतेहैं,

सप्त ऋषि—हे देव! भारत माता की हार्दिक वाणी ठंडे दिल से विचार करने योग्य है।

भृगु—कारण कि भक्तों का दु:ख अब देवताओं से सहा नहीं जा सकता, वेद भगवान और धर्म इत्यादि का क्लेश अब अधिक सहा नहीं जा सकता—

जो सत्यपुरुष सत्यवादीहैं वह अपनी जान छिपातेहैं,
ब्राह्मणों के यज्ञोपवीत पैरों से कुचले जाते हैं।
हरतरह जबरदस्ती मुखमें साधुओंके मदिरा जातीहै,
शौचालय में गंगा जल है गंगा में विष्ठा जाती है।

भारत माता—भगवन्! अब पृथ्वी का भार हरण करना आप के ही हाथ है, आप के सिवा भक्तों की भीड़ हरने को कोई भी समर्थ नहीं—

होसिन्धु कृपाके तुम भगवन्, भक्तोंका बेड़ा पारकरो,
पापोंका बोझ बढ़ा सरपर, हेदीनदयाल यहभार हरो।

विष्णु—हे सुशीले! निश्चिन्त रहो, भय को दूर करो, अब समय पूरा हो चुका—

दीन दुखियों की व्यथा मुझ से सुनी जाती नहीं,

आह खाली दीन दुखियों की कभी जाती नहीं।

बृहस्पति—भगवान! अब सुदर्शनको संभालो और धर्म विजय का शंख बजा दो। पाप और अन्याय की छाती तोडदो, जुल्म और अत्याचार का पंजा मरोड़ दो—

पापी दल को अब नष्ट करो,
और असुरों का संहार करो,
अब भारतवासी दुखियों का,
भू भार हरण उद्धार करो।

विष्णु—बृहस्पति जी! मनुष्य हो या देवता, दैत्य हो या किन्नर, कोई भी हो उसी वक्त अत्याचारी बनता है, जब उस के नाश काल का समय समीप आजाता है। "विनाश काले विपरीत बुद्धि" का प्रमाण आप पर विदित है। असुरों के नाश का कारण, मेरे ही अंश से सत्याग्रह का अवतार बाल भक्त प्रहलाद जन्म लेचुका है, उसी ने अपने सत्य बल से ज़ालिम को जुल्म में अन्त कर देने पर मजबूर कर दिया है, अपने ऊपर अनेक प्रकार के दुखदाई संकट सहन कर के उस ने मेरी शान्ति का पात्र भरपूर कर दिया है—

कभी धरती पे जब भी पापियों का बोझ बढ़ता है,
धर्म को वास्ता संसार में असुरों से पड़ता है।
सुदर्शन चक्र को उस वक्त मैं हरकत में लाता हूँ,
चमत्कार अपनी प्रबल शक्तियों का मैं दिखाताहूं।

(विष्णु भगवान का सुदर्शन चक्र को छोडना, दामिनी मय प्रकाश नजर आता है।)

ट्रांसफर

(शयनगृह, हिरण्यकश्यप का ख्वाब से चौंक कर उठना और पासही तिपाई पर रखी हुई तलवार को थामना।)

हिरण्यकश्यप—हा, मेरा शत्रु मुझे ख्वाब में खौफ दिखाने का यत्न कर रहा है आ, आ, अभिमानी विष्णु ! यदि तेरी भुजाओं में बल है, तेरी छाती में जोर है, तेरे दिल में हौसिला है, तेरे शस्त्रों में शक्तिहै, तो मर्दों की तरह-ख्वाब में नहीं बल्कि ख्याल में-प्रत्यक्ष रूपसे मेरे साथ युद्ध कर। क्या तू समझता है कि मैं इन धमकियों से तेरी अदावत का दम भरना छोड दूंगा, तेरे दोस्तों पर जुल्म करना छोड दूंगा, तेरे नाम को नाबूद करने का विचार त्याग दूंगा, संसार में अपने विचारों का प्रचार त्याग दूंगा ? नहीं तेरे लिये मेरे दिल में दया, अहिन्सा, क्षमा, इज्जत, मुहब्बत कुछ भी नहीं —

मित्र तेरा एक छोडूंगा न मैं संसार में,
कुछ कमी होने न दूंगा जुल्म की रफ्तार में।
या मिटादूंगा तुझे या आप ही मिट जाऊंगा,
स्वर्ग पर कब्जा करूंगा और प्रभू कहलाऊंगा।

(तलवार की तरफ गज़बनाक निगाहों से देखना, टेबले पर पर्दा।)

वन्दी गृह

(शम्भुवान तथा बेशुमार आस्तिक कैदियों का रोचक दृश्य, राक्षसी अत्याचारों का निन्दनीय नजारा, सत्त पुरुष, मूज कूटते, चक्की पीसते और कोल्हू चलाते हुये दिखाई देते हैं।)

शम्भूवान का

गाना

कहो जय २ ध्वजा ऊपर उठा कर सत्याग्रह की,
रटो तुम राम को धूनी लगा कर सत्याग्रह की।
मिटाओ रोग अन्याय अनीति और पापों का,
मोअस्सर औषधी सब को पिला कर सत्याग्रह की।
भगीरथ की तरह उद्धार करदो आत्माओं का,
नदी भारत की भूमि पर वहाकर सत्याग्रह की।
कलायें जुल्म चक्कर की मिटाओ जन्म भूमि से,
कला तुम त्यागके बलसे जगाकर सत्याग्रह की।
करो अज्ञान की शंका दिलोंसे दूर तुम "जेवा,"
कथा श्रद्धालुओं को तुम सुनाकर सत्याग्रह की।

शम्भूवान—दुष्ट आदमी थोड़ी देरके लिये समझ लेता है, कि मेरी बनावटी खुशी, मेरे हुक्म का चलता हुआ खोटा सिक्का, मेरी शक्ति का विस्तार मेरी कामयाबी का सबूत देती हैं, यह कामयाबी वास्तवमें कामयाबी नहीं, बल्कि मौत से पहले बुझते हुये चिराग की टमटमाती हुई रोशनी की एक झलक है, जो नेस्ती का पेश खेमा है,

अभिमानी हिरण्यकश्यप यह समझ रहा है, कि वह हमारे अनित्य शरीरों को बन्धनमें डाल कर हमारी आत्माओंसे सत्यका विचार और स्वाधीनता का धन हरण कर सक्ता है, यह उसकी भूल है, पाप अधिक देरतक सच्चाई और धर्म को नहीं दबा सक्ता, काले मेघ की अंधेरी चादरसे घिर कर उज्वल सूर्य्य की असलियत में अंतर नहीं आसक्ता —

हमारे आजों दुख का नतीजा दायमी सुख है,
जो सुख पापोंसे मिलता है, परिणाम उसका सब दुख है।
दिनों में अब हमारे कर्म का इन्साफ होता है,
निकल जायेंगे कांटे सब यह रस्ता साफ होता है।

(हिरण्यकश्यपका दो मुसाहबों सहित आना ।)

हिरण्यकश्यप—क्यों शम्भूवान जी ! तुमने अभी तक मेरे साथ युद्ध करने का विचार नहीं छोड़ा, परन्तु याद रक्खो मेरे साथ वैर पालने से तुम्हें सफलता नहीं हो सक्ती।

शम्भूवान—लेकिन हमारा युद्ध कोई राक्षसी अथवा शैतानी युद्ध नहीं, हमारा संग्राम कोई शारीरिक या हैवानी युद्ध नहीं,न हम आपके दुश्मन हैं, न हम आपके शत्रु हैं।

हिरण्यकश्यप—तो फिर ?

शम्भूवान—हमतो पाप और बुराई के दुश्मन हैं, हम इस धर्म युद्ध में मुकाबले पर खड़े हुये आदमी का नाश नहीं चाहते, हम इसके किसी गुमराह पक्ष पाती का भी विनाश नहीं चाहते, हम आपके समराज्य और ऐश्वर्य की बर्बादी नहीं चाहते।

हिरण्यकश्यप—तो क्या चाहते हो ?

शम्भूवान—हम आपके नास्तिक पन और अभिमान को मिटाना चाहते हैं, आपके राक्षसी स्वभाव और खुदगर्ज़ी के आचार और विचार को उडाना चाहते हैं—

अपनी हत्या भी अगर होजाये तो संतोष है,
दूसरे का एक कतरा खू भी भारी दोष है ।
युद्ध यह करते हैं हम जिसमें जियाने जा न हो,
साप भी मरजाये और लाठीका भी नुकसा न हो।

हिरण्यकश्यप—परन्तु तुम सब, अपने ऐश और आराम को भूल कर हमारे मुकाबले में क्यों अड रहे हो ?

शम्भूवान—इसलिये कि आप उलटे मार्ग पर जा रहे हैं, अपनी खुद गर्जी और अपवित्र कामनाओं को पूरा करने के लिये आप दूसरों को भी ज़बरदस्ती घसीट कर उस तरफ लेजा रहे हैं —

हम समझते हैं कि तुम धर्मके बद ख्वाह हो,
देखते हैं हम कि तुम भूले हुये गुमराह हो ।
करते हो बदराह हमें लेकिन नहीं होते हैं हम,
असली सुखके वास्ते नक़ली यह सुख खोते हैं हम ।

हिरण्यकश्यप—परन्तु मेरा रास्ता सीधा है या उल्टा, तुम्हें अवश्य एक दिन उस रास्ते पर चलना पढेगा ।

शम्भूवान— नहीं हम एक सत्याग्रह की दृढता में गड गये हैं, पाप को त्याग कर धर्म के पीछे पड गये हैं, जो कुछ दिल में धारण किया है उस की पूर्ति के लिये सत्यता पर अड़ गये हैं —

प्राण तक तज देंगे पर हठ से नहीं हटने के हम,
बोटी बोटी काट दो लेकिन हैं हम साबित कदम ।

तीर तुम पैदा करो और हम जिगर पैदा करें,
तेग पैदा हो तो हम कटने को सर पैदा करें।

हिरण्य०—मैं सख्त से सख्त मुसीबतें नाजिल करूंगा।

शम्भूयान—हम सत्य, अहिन्सा और प्रेम बल से उन का सामना करेंगे।

हिरण्य०—तरह तरह के कष्ट दिये जायेंगे।

शम्भूयान—हम खामोशी के साथ सहन किये जायेंगे।

हिरण्य०—निर्बल और कमज़ोरके पास इसके सिवा चारा ही क्याहै?

शम्भूयान—हम सहन करते हैं, इसलिये नहीं कि हम निर्बल हैं।

हिरण्य०—तो किस लिये सहन करते हो?

शम्भूयान—इस लिये कि शरीर बल पशु बल है।

हिरण्य०—तुम्हारी इस युक्ति से कुछ नहीं होगा।

शम्भूयान—सब कुछ होगा, हमारे प्रेम बल से हमारी सहन शीलता से, हमारी कुर्बानियों से आप की अक्ल ठिकाने आ जायेगी, आखिर कभी तो तुम्हें अपने अभिमान और गुमान पर शर्म आयेगी। जब एक आदमी के प्रेम और अहिन्सा बल से शेर और बकरी एक घाट पर पानी पी सकते हैं, तो फिर क्या इतनी बड़ी प्रजा के बिला इन्तक़ाम की ख्वाहिश के संकट सहन करने से, आप के शैतानी विकार न जायेंगे? नहीं नहीं ज़रूर जायेंगे और आप एक दिन ज़रूर निर्दयी से दयालु, नास्तिक से आस्तिक, और अधर्मी से धर्मात्मा बन जायेंगे —

प्रेम बल से तुम तो क्या परमात्मा भी ज़ेर हो,
प्रेम से बकरी बने, हो भेड़िया या शेर हो।
या हमारे धर्म से सीधी सड़क पर आओगे,
या खुद अपने पाप से तुम आप ही मर जाओगे।

हिरण्य०—क्या तुम फिर भी अपना ओहदा वापस मिलने की आशा नहीं करते ?

शम्भूवान—नहीं अब मैं आप का नमक खाकर अपने माथे पर कलङ्क का टीका नहीं लगाना चाहता —

मौत की धमकी मुझे सत् से गिरा सकती नहीं,
लोभ की माया धर्म मेरा छुड़ा सकती नहीं।
यह नहीं शबनम के कतरे ताप से ढल जायेंगे,
यह वह रस्सी है कि जलकर भी नहीं बल जायेंगे।

हिरण्य०—तो अपना परिणाम सोच लो, मेरी खूंखार आदत अभी तुम्हारे धन, धाम और आराम के शिकार से भी सैर नहीं हुई।

(फौजदार का रूपमालाको लेकर आना।)

फौजदार—और इस सैरी के लिये अभी संसार में तुम्हारी जात के अतिरिक्त तुम्हारी एक सब से अधिक अमूल्य वस्तु मौजूद है।

हिरण्य०—और गौर से देख लो, वह तुम्हारी यह प्यारी कन्या है —

तुम्हारी आंख के आगे अभी अन्धेर छायेगा,
न तुमने सिर झुकाया तो सिर इसका टूट जायेगा।

शम्भूवान—बला से, सत्य और धर्म की खातिर मेरी प्राण से प्यारी बेटीका सिर भी टूट जाये, सुत, दारा और लक्ष्मी सब कुछ छूट जाये, परवाह नहीं। एक इस सन्तान के मिट जाने से मैं शून्य नहीं हो सकता, भारत की भावी सन्तान के तमाम छोटे बड़े मेरी सन्तान और भाई बन्धु हैं.—

निकालो तुम कमीने मन से जो कुछ ज़ोर बाकी हैं,
मरेगी एक यह तो क्या, करोड़ों और बाकी हैं।
मैं जब खुद धर्म की खातिर हू राज़ी जान देने पर,
गमी क्या मुझको हो सकती है इसके प्राण देने पर।

रूपमाला—(हिरण्यकश्यप से) अरे अभिमानी! मालूम होता है, कि तेरी तबाही और बर्बादी के दिन निकट आगये हैं, जो मासूमों को सताने के लिये तुझे तेरे पापी विचार मजबूर कर रहे हैं। तुझे अपने अस्त्रों, शस्त्रों और शारीरिक शक्तियों का अभिमान है, क्या अपने पूरे बल को निर्दोष प्रजाके अमन और शान्तिपर नाज़िल करनेका तेरे पास यही कुछ आखरी सामान है, तो ले इसका भी इस्तैमाल करले, दिल खोल कर निर्दोषो और गरीबों को पामाल करले—

भरा है इस कदर अभिमान जो मगरूर के सर में,
लगेगा कुछ पता सर का न उस की एक ठोकर में।
लगाना है वृथा छुरियां निगाहों की तू खंजर में,
जले दिल की यह आहें छेद कर देती हैं पत्थर में।

हिरण्य०—इस बकवास की कौन परवाह करता है, (सिपाहियों से) इस लड़की को जन्जीरों में कस कर मकतल में ले चलो—

मैं देखू किस तरह यह प्रण से अपने नहीं फिरते,
मैं देखू कब तलक यह धर्म से अपने नहीं गिरते।

(सिपाही रूपमाला को हथकड़ियां लगाते हैं।)

(फौजदार से) मैं इधर इस लड़की का अन्त करता हू, तुम उधर उस जादूगर लड़के का खात्मा करने के लिये लोहे का खम्भा तपा कर तय्यार करो।

फौजदार—जो आज्ञा (गया)

हिरण्य०—बस अब सब का अन्तिम समय आगया।

रूपमाला—तुम हमारा क्या अन्त कराेगे, बल्कि जुल्म में अन्त कर देने से अब तुम्हारे अन्त का समय आचुका है, तुम्हारा अत्याचार क्षीर सागर में सोये हुये भगवान को भी जगा चुका है ——

> अब लहू हम सख्त जानो का समझ सम होगया,
> चाट कर जिस को तेरा खञ्जर भी बेदम होगया।
> तुझ से यक बेजार हम क्या, सारा आलम होगया,
> जुल्म सह सह कर हमारा दर्द मरहम होगया।

हिरण्य०—बस अब तुम्हारे पास सिवाय गम खाने और जुल्म सहने के कोई इलाज नहीं। बताओ अब तुम्हारा ईश्वर कहाँ सो रहा है, वह देखता है कि तुम पर जुल्म हो रहा है, फिर वह भक्तों की सहायता का ऐसा अनमोल समय क्यों खोरहा है —

> मान लो और त्याग दो उस की मदद की आशको,
> अब समझ जाओ त्यागो राम के विश्वास को।

रूपमाला—हम अपना दम तोड़ेंगे, लेकिन दम में दम रहते हुये उस का विश्वास नही छाेडेंगे। उस के नियम अटल हैं, उस की शक्तियां अचल हैं, यह न समझ बैठना कि वह कभी भी दुखी भक्तो को सहायता को नहीं आयेगा, बल्कि जब वह हमें दु:ख उठाने के पूरा योग्य पायेगा, तो उस वक्त बिन बुलाये आयेगा और राक्षसी ताकत की बेड़ियां तोड़ कर अपने प्यारों को बचायेगा.—

> भक्त की तदबीर भी खाली नहीं तदबीर से

देख फिर कहती हूँ मैं दुखियों को तू मत कैद कर,
यह शिकार उड कर लिपट जाते हैं नोकेतीर से।

(रूपमाला और तमाम कैदियों की ज़ंजीरों का टूटना,
सब का आश्चर्यान्वित होना।)

अंक तीसरा तीसरा दृश्य

अगला महल

(हिरण्यकश्यप का प्रवेश।)

हिरण्य०—जादू, जादू, ज़ंजीरें टूट गईं, यह सब कुछ उस दुष्ट बालक (प्रहलाद) के जादू का नतीजा है, अब सब से पहिले मुझे इस तमाम बुनियाद के अपवाद को मिटाना होगा, जिस उपाय से यह सब अपवाद खड़े होते हैं उस फसाद को मिटाना होगा। बस आखिरी और भयंकर सजा जो उस के लिये तजवीज़ की गई है, यह उस से हरगिज़ नहीं बच सकेगा, आज दुनिया देखेगी और मैं दिखाऊंगा कि मेरी शक्ति अपार है, या विष्णु की ताकत ज्यादा ज़ोरदार है——

काटा खटक रहा है यह मेरी निगाह में,
सिर ठोकरों के वास्ते डालूंगा राह में।
बाँधूंगा उस को लाटें के दहकते सितून से,
सर्द होगी आग गुस्से की पापी के खून से।

(पुरवासियों का आना।)

सब—दया करो! महाराज दया करो!!

पहला—उस धर्मात्मा बाल भक्त सत्याग्रही अवतार पर दया करो, तुम्हारी प्रजा उस निर्दोष बालक पर ऐसा अनर्थ होता नहीं देख सकेगी, आपने उस के लिये जो सज़ा तजवीज फरमाई है, उसने सारी प्रजा में अशान्ति फैलाई है।

हिरण्य०—मुझे प्रजा की परवाह नहीं।

दूसरा—औलाद का मोह करो।

हिरण्य०—नालायक औलाद मारने के ही योग्य है।

तीसरा—आखिर आप का खून है।

हिरण्य०—लेकिन सडा हुआ।

तीसरा—आशाओं का फूल है।

हिरण्य०—काटों से भरा हुआ।

तीसरा—आखों का तारा है।

हिरण्य०—अभिमान के स्याह बादल में छिपा हुआ।

पहला—श्रीमान्! राजा का कर्तव्य है कि जिस बात की निस्बत सारी प्रजाकी राय है, वह उसी पर अमल करे, जो राजा प्रजा की आवाज को सुन कर टाल देता है, जो हितकारी मन्त्र व सलाह को इस कान से सुन कर उस कान से निकाल देता है, वह न केवल प्रजा की ओर से भय भीत रहता है, वरन् उस के तमाम शाही ऐश व आराम कडवे होजाते हैं, देखो सोचो और समझो कि प्रजा ही राज की जड है——

है प्रजा गर शाद तो राजा भी समझो शाद है,
महल है यह राज और उसकी प्रजा बुनियाद है।
है पिता के तुल्य राजा और प्रजा सन्तान है,
आप केवल जिस्म हैं उस में प्रजा ही प्राण हैं।

दूसरा—महाराज ! राज मद में इतने मस्त न होजाइये, मनुष्यत्व में इतने पस्त न होजाइये ।

हिरण्य०—लेकिन मैं ऐसे दुष्ट और पापी पुत्र को जीवित छोड़ कर अपना रोष दाघ कम नहीं कर सकता —

जल रहा है जो मेरा उस को जलाने के लिये,
आखिरी तदबीर है उस को मिटाने के लिये ।
मैं दिखादूंगा बड़ा मैं था कि उस का राम था,
कुछ न कुछ आदर्श छोड़ूंगा जमाने के लिये ।

पहिला—तो याद रखना —

तुम ने बांधी है कमर खुद आप अपने नाश पर,
एक भी आंसू न टपकेगा तुम्हारी लाश पर ।

(सब का जाना)

हिरण्यकश्यप—देखा जायगा । (गया)

अङ्क तीसरा चौथा दृश्य

वधस्थान ।

(एक बड़े अखाड़े में भर मेरे मैदान एक लोहे का स्तम्भ दहक रहा है, प्रहलाद, रूपमाला और अन्य समस्त कैदी एक पंक्ति म खड़े हैं । राज सिंहासन के पास अमीर और वजीर बैठे हैं, टिगुल की आवाज पर हिरण्यकश्यप आकर तख्त पर बैठता है ।)

सब दरबारी—बोलो महाराज हिरण्यकश्यप की जय !

कैदी—बोलो सत्याग्रही अवतार की जय !

हिरण्य०—हैं तुम लोग किस की जय बुलाते हो ?

एक—सत्याग्रही अवतार की।

हिरण्य०—अर्थात् ?

एक—प्रहलाद राजकुमार की —

पाप का सर काटने को धर्म की तलवार है,
सत्यकी मूरतहै और सत्याग्रही अवतार है।

हिरण्य०—प्रहलाद ! तू सुन रहा है, हा तू सुनता है, और मैं जानता हू कि तूने अपने जादू से मेरी तमाम प्रजा पर मोहिनी डालदी है, यही कारण है कि आधी से अधिक प्रजा के आदमियो ने मुझ से बगावत करली है। बर सरे दरबार यह लोग तुम्हारी जय बुलाये और मेरे कान सुनते जायें ? नही, नहीं अब ऐसा नहीं होगा —

शर न होगा जब हुई सूरत न कुछ बुनियाद की,
पहिले काटूगा तुम्हें जड हो तुम्हीं अपवाद की।

प्रहलाद—तो पिता, तुम ने कौनसी कसर बाकी छोडी है, कौन सा जुल्म है जो तुम ने नही ढाया, कौनसा उलटा तरीका है जो मुझ पर नहीं आजमाया, कौनसा अनर्थ है, जो मुझे मिटाने के लिये नही कर दिखाया ? क्या इतने पर भी तुम्हारे दिल में कुछ खयाल न आया ? मिटालो, मिटालो यदि और कुछ गुबार बाकी है तो निकालो —

अग्नि तो जलाती नहीं तुम और जलालो,
पानी तो डुबाता नहीं तुम और डुबा लो।
आसू हो, गिरा आख से मिट्टी में मिला लो,
जिस जुल्म की हसरत अभी रहती है निकालो।
हरगिज न किसी की मैं बुराई से मरूगा,

हिरण्यकश्यप—क्या समझ बैठा है कि यहां से भी बच जायगा, यह लाल अंगारे की तरह दहकता हुआ लोहस्तम्भ भी क्या तुझे नहीं जलायेगा?

प्रहलाद—यदि मेरा समय पूर्ण होगया है, यदि दैवयोग से धर्म का बल टूट गया है, यदि प्रेम की ताकत कमजोर हो गई है, अहिन्सा की शक्ति कम होगई है, तो आश्चर्य नहीं, जो इस खम्भे का ताप ही दूर से मुझे भस्म करदे और भेंट करने की आवश्यकता ही न रहे—

वह बचाले या जलादे उससे क्या कुछ दूर है,
वह ही होगा जो मेरे भगवान को मन्जूर है।

हिरण्य०—अभी तक तेरा भगवान नजर न आया, उसने अपना चेहरा न दिखाया?

प्रहलाद—तुम जो अपने अभिमान मद से अन्धे हो रहे हो, उसको क्या जान सकते हो, तुम उस सर्व व्यापक भगवान की सूक्ष्म हस्ती को क्या पहिचान सकते हो?—

पर्दे में है तो इतना है हरदम नकाब है चहरे पर,
वे पर्दा है तो इतना है रोशन है जर्रे २ पर।
रहता तो आँख के आगे है,
पर आखको उस का ज्ञान नहीं,
नजदीक है इतना नजरों के,
नजरों को कुछ पहिचान नहीं।

हिरण्य०—ना मालूम और ख्याली हस्ती।

प्रहलाद—

मुनियोंके ख्यालमें आये नहीं
इस कदर शोखमें मस्ती है,
प्रेमियों में बुत बन जाता है
गर है तो इतनी हस्ती है।

हिरण्य०—हैं तुम लोग किस की जय बुलाते हो ?

एक—सत्याग्रही अवतार की।

हिरण्य०—अर्थात् ?

एक—प्रहलाद राजकुमार की—

पाप का सर काटने को धर्म की तलवार है,
सत्यकी मूरतहै और सत्याग्रही अवतार है।

हिरण्य०—प्रहलाद ! तू सुन रहा है, हा तू सुनता है, और मैं जानता हूँ कि तूने अपने जादू से मेरी तमाम प्रजा पर मोहिनी डालदी है, यही कारण है कि आधी से अधिक प्रजा के आदमियो ने मुझ से बगावत करली है। बर सरे दरबार यह लोग तुम्हारी जय बुलायें और मेरे कान सुनते जायें ? नही, नहीं अब ऐसा नहीं होगा—

शर न होगा जब हुई सूरत न कुछ बुनियाद की,
पहिले काटूगा तुम्हें जड हो तुम्हीं अपवाद की।

प्रहलाद—तो पिता, तुम ने कौनसी कसर बाकी छोडी है, कौन सा जुल्म है जो तुम ने नही ढाया, कौनसा उलटा तरीका है जो मुझ पर नहीं आजमाया, कौनसा अनर्थ है, जो मुझे मिटाने के लिये नहीं कर दिखाया ? क्या इतने पर भी तुम्हारे दिल में कुछ खयाल न आया ? मिटालो, मिटालो यदि और कुछ गुबार बाकी है तो निकालो—

अग्नि तो जलाती नहीं तुम और जलालो,
पानी तो डुबाता नहीं तुम और डुबा लो।
आसू हो, गिरा आख से मिट्टी में मिला लो,
जिस जुल्म की हसरत अभी रहती है निकालो।
हरगिज न किसी की मैं बुराई से मरूगा,
मारे से तुम्हारे नहीं आई से मरूंगा।

हिरण्यकश्यप—क्या समझ बैठा है कि यहां से भी बच जायगा, यह लाल अंगारे की तरह दहकता हुआ लोहस्तम्भ भी क्या तुझे नहीं जलायेगा ?

प्रह्लाद—यदि मेरा समय पूर्ण होगया है, यदि दैवयोग से धर्म का बल टूट गया है, यदि प्रेम की ताकत कमजोर हो गई है, अहिंसा की शक्ति कम होगई है, तो आश्चर्य नहीं, जो इस खम्भे का ताप ही दूर से मुझे भस्म करदे और भेंट करने की आवश्यकता ही न रहे—

यह बचाले या जलादे उससे क्या कुछ दूर है,
वह ही होगा जो मेरे भगवान को मन्जूर है।

हिरण्य०—अभी तक तेरा भगवान नजर न आया, उसने अपना चेहरा न दिखाया ?

प्रह्लाद—तुम जो अपने अभिमान मद से अन्धे हो रहे हो, उसको क्या जान सकते हो, तुम उस सर्व व्यापक भगवान की सूक्ष्म हस्ती को क्या पहिचान सकते हो ! —

पर्दे में है तो इतना है हरदम नकाब है चहरे पर,
बे पर्दा है तो इतना है रोशन है जर्रे २ पर।
रहता तो आंखों के आगे है,
पर आंखको उस का ज्ञान नहीं,
नजदीक है इतना नजरों के,
नजरों को कुछ पहिचान नहीं।

हिरण्य०—ना मालूम और ख्याली हस्ती।

प्रह्लाद—

मुनियोंके ख्यालमें आये नहीं
इस कदर शौकमें मस्ती है,
प्रेमियों में घुल बन जाता है
गर है तो इतनी हस्ती है।

उस के सीने में रहता है जो
कण्ठ का उस के हार हुआ,
जब जब भक्तों पर भीड पडी
तब तब उस का अवतार हुआ।

हिरण्यकश्यप—मैं तुम्हारे इस ब्रह्मज्ञानको नहीं, अलबत्ता तुम्हारी जादूगरी को मानता हू, परमात्मा अगर तेरे वश में होता तो इतना दु ख न उठाना पडता।

प्रहलाद्—इस में शक भी क्या है, परमात्मा प्रेमीजनों के ही वश में है—

अपनी तो यह ही धारणा है
अपनी तो है बस टेक यही,
नारायण अपने प्रेम में है
हम पढे हैं अक्षर एक यही।
हमने खुद जो कुछ देखा है
अपना विचार हम कहते हैं,
चन्दन में जैसे अग्नि रहे
तैसे हरि प्रेम में रहते हैं।

हिरण्य०—तो आज उस के ईश्वरीय और तेरे प्रेम की आखरी कसौटी है, अगर तुम्हें अपने राम पर विश्वास है तो इस दहकते हुए खम्मे से भेंट जाओ—

चिता से बच निकलना एक जादूकी सफाई थी,
यह वह अग्नि नहीं जो तुमने जादूसे बुझाई थी।

प्रहलाद—जादू कैसा ? मैं तो ईश्वरीय प्रेम के बिना कोई जादू नहीं जानता, हाँ अहिन्सा और प्रेम से इतना जानता हू कि साँप का बच्चा बच्चे का खिलौना बन जाता है, मस्त

और पथरीली जमीन फूलों का बिछौना बन जाता है।

हिरण्य०—तो आज मालूम हो जायगा, कि अहिन्सा और प्रेम में कितना बड़ा बल है।

प्रहलाद—हां, यह आज प्रकट हो जायगा, कि धर्म का क्या परिणाम है और पाप का क्या फल है —

अगर यह सच है वह भगवान
दुखियों का सहाई है,
अगर दुखियों के दिल में
नम्रताई और सचाई है।
अगर यह सच है दुनिया में
धर्म का बोलबाला है,
तो निश्चय यह समझ रक्खो
वह प्रत्यक्ष होने वाला है।

हिरण्य०—अरे मैंने ऐसे हजारों उपदेश सुन पाये हैं, अब मुझे लफजी बहस की जरूरत नहीं, अमली तौर पर यह देखने की आवश्यकता है, कि तुम्हारा प्रेम और विष्णु की सत्ता क्या कर सकती है। जाओ फौरन दौड़ कर खम्भे से बगलगीर हो जाओ।

प्रहलाद—(खम्भ देखनेसे मोहवश होकर) आह, मुझ सा कौन अभागी है, जिसने एक पापी पिताके घर जन्म लिया है। जिस ने पुत्र घात के लिये सब कुछ कर दिया है। मुझे ख्याल होता है कि आज जरूर ही मेरे जीवन का अन्त होने वाला है, भगवान ने आज मुझे एक भारी परीक्षा में डाला है —

बदन में खून उबलता है सिर्फ इस के नजारे से,
है खूनी रङ्ग अधिक इस लाठ का दहकते अंगारे से।

अजय क्या है जो अपने ताप से मुझ को जला डाले,
ज्वाला मय भयानक रूप इन शौलोंमें लिपटा ले।

(स्तम्भ पर एक कीडी को देख कर) हैं, मैं यह क्या देख रहा हू, एक छोटी सी कीडी इस गर्म और जला देने वाले खम्भ पर चलती है, और नहीं जलती है। अहा, ईश्वरकी लीला अपार है, सच मुच यह ईश्वरीय चमत्कार है, यह निश्चय मेरे चलायमान होने वाले विश्वास को बचाने आई है।

हिरण्य०—क्यों प्रहलाद क्या देर है ?

प्रहलाद—कुछ देर नहीं —

नहीं कीडीको भी खटका है जब इस आगसे जाका,
दया से उसकी हो सकता है मेरा बाल कब बाँका।
वह इन शौलोंकी आँखोंसे दुखी का हाल तकता है,
यह खुद अग्नि बना है और उसका तेज दहकता है।

(स्तम्भ से भेटना, नरसिंह अवतार का प्रकट होना ।)

नरसिंह अवतार—(हिरण्य कश्यप को गिरा कर)

राम ही भक्तों का रक्षक राम ही आराम है,
धर्म की जय और पापी का यही परिणाम है।

सब—बोलो धर्म की जय —

(हिरण्यकश्यप का दम तोडना ।)

नरसिंह—पापी गया और पाप भी गया, भारत भूमि और ऋषि सन्तान की रक्षा को मैं इसी तरह प्रकट होता रहा हू,



प्रह्लाद और जलता हुआ लोह स्तंभ ।

है मैं यह क्या देख रहा हूँ—एक छोटी सी चींटी इस गरम
होनेवाले स्तम्भ पर चलती जलती है !"

और भविष्य में भी इसी प्रकार प्रकट होता रहेगा। मेरे प्यारो! अब तुम अपने दुखों का अन्त समझो, आज भारत से अन्याय और अनीति का राज्य उठ गया, अब सत्यवादी प्रहलाद का न्याय शाली शासन आरम्भ होगा। मेरी कृपा से तुम को यह शान्तिमय शासन देखना नसीब हुआ —

हर रात्री के बाद दिवस का जहूर है, ।

हर दुःख के बाद सुख का भी होना जरूर है

(गुरू से) गुरू जी, रूपमाला का प्रेम भी सफल करो, और इस शीलवती कन्या का प्रहलाद से संयोग करो, जाओ बेटा! तुम दोनो अटल राजैश्वर्य का संभोग करो।

(प्रहलाद और रूपमाला का विवाह)

टियून का नाच

टैबला

ड्राप

